ॐ

शुद्धात्मने नमः

श्री सीमन्धर-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन साहित्य स्मृति संचय, पुष्प नं. 39

बहिनश्री का ज्ञानवैभव

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का स्वानुभूतियुक्त जातिस्मरणज्ञान

: हिन्दी अनुवाद :
पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन
बिजौलियाँ, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

: प्रकाशक :
श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
302, कृष्णाकुंज, प्लॉट नं. 30, नवयुग सी.एच.एस. लि.
वी. एल. मेहता मार्ग, विलेपार्ले (वेस्ट), मुम्बई-400 056
फोन : (022) 26130820

: सह-प्रकाशक :
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ़ (सौराष्ट्र) - 364250
फोन : 02846-244334

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ

वीर निर्वाण : 2539 विक्रम संवत् : 2070 ईस्वी सन् 2013

(प्रशममूर्ति पूज्य बहेनश्री की जन्म शताब्दी के अवसर पर)

ISBN No. : 978-93-81057-18-6

न्यौछावर राशि : 20 रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान :

1. **श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट,**
   सोनगढ़ (सौराष्ट्र) – 364250, फोन : 02846-244334
2. **श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट**
   302, कृष्णकुंज, प्लॉट नं. 30, वी. एल. महेता मार्ग, विलेपार्ले (वेस्ट),
   मुम्बई-400056, फोन (022) 26130820
   Email - vitragva@vsnl.com
3. **श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट (मंगलायतन)**
   अलीगढ़-आगरा मार्ग, सासनी-204216(उ.प्र.)
   Email - info@mangalayatan.com

टाईप-सेटिंग : **विवेक कम्प्यूटर्स,** अलीगढ़

मुद्रक : **देशना कम्प्यूटर्स,** जयपुर

ॐ

नमः श्री सर्वज्ञ वीतरागाय

उपोद्घात

भारतवर्ष के धर्म जिज्ञासु जीवों के महान भाग्योदय से, इस प्रवर्तमान 20-21 वीं शताब्दी में अध्यात्ममूर्ति आत्मज्ञ सन्त सत्पुरुष परमोपकारी पूज्य सद्गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का, स्वानुभूतिप्रधान सद्धर्म का पुनः अभ्युदय करने, महान उदय हुआ। पूर्व के प्रबल संस्कार, भगवत् कुन्दकुन्दाचार्यदेव प्रणीत श्री समयसार के गहन अध्ययन और अपने ज्ञान-वैराग्य तथा उपशमरस भरपूर अन्तर्मुख सातिशय पुरुषार्थ द्वारा आपश्री ने स्वानुभव-रस झरती आत्मसाधना साधकर अपने व्याख्यानों में श्री वीर-कुन्द-अमृत प्ररूपित अध्यात्मधर्म का परम उद्योत किया, जिससे बहुत जीव उसे समझने के लिये तैयार हो गये। वीतराग मोक्षमार्ग को अत्यन्त स्पष्टरूप से समझानेवाले समर्थ गुरुदेव इस विषम काल में मिले, यह मुमुक्षुओं का महाभाग्य है। वास्तव में गुरुदेव का उपकार अमाप है।

आगम, युक्ति और स्वानुभव के वज्र चट्टान पर अडिगरूप से खड़े रहकर श्री जिनेन्द्रदेव का तात्त्विक हार्द प्रकाशित करनेवाले पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की प्रबल वाणी के पुनीत योग से 18 वर्ष की बालवय में जिन्होंने अतीन्द्रिय आनन्दरस झरता स्वानुभूति समन्वित आत्मसाक्षात्कार—निर्विकल्प सम्यग्दर्शन—प्राप्त किया है, ऐसी प्रशममूर्ति धन्य अवतार, धर्मरत्न पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन ने भी, ऐसे परम तारणहार पूज्य गुरुदेव की लोकोत्तर आध्यात्मिक महिमा प्रकाशित करके वास्तव में मुमुक्षु जगत पर महान उपकार किया है। स्वानुभवमूर्ति

पूज्य बहिनश्री भी, पूज्य कहान गुरुदेव के उपकार तले, आत्मानुभूति का सच्चा मार्ग बतलानेवाला वास्तव में एक महान आत्मा है। उनका पवित्र जीवन और अध्यात्म साधना, आत्मार्थी जीवों के लिये वास्तव में एक अनुपम आदर्श है।

पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा पूर्ण प्रमाणित ऐसे इन पवित्र आत्मा पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के साधनामय लोकोत्तर जीवन में से आत्मार्थी जीवों को आत्मलाभ हो, इस हेतु से यहाँ इस पुस्तक में (1) संक्षिप्त जीवनपरिचय, (2) जातिस्मरणज्ञान (3) गुरुदेव के हृदयोद्‌गार और (4) अध्यात्म-अमृतसरिता—इन चार का सङ्कलन किया गया है।

संक्षिप्त जीवनपरिचय, अनुभवी की अमृतवाणी, पत्र व्यवहार, गुरुदेव के हृदयोद्‌गार, चुनी हुई विगत, मधुर संस्मरण इत्यादि पूज्य बहिनश्री के जीवन से सम्बन्धित अनेक विषयों का उनके 'अमृत जन्मोत्सव' के अवसर पर प्रकाशित हुए 'बहिनश्री चम्पाबेन अभिनन्दन ग्रन्थ' में सङ्कलन हुआ है, जिन्हें वह जानने की भावना हो, उन्हें उस ग्रन्थ के पढ़ने की प्रेरणा है।

(1) संक्षिप्त जीवनपरिचय :

स्वानुभवविभूषित सम्यक्त्व-आराधना की मूर्ति, धर्म की शोभा और इस काल का आश्चर्य—ऐसी प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के निर्मल सम्यक्त्व साधना के पूर्व और पश्चात् के आदर्श जीवन का जो संक्षिप्त परिचय, उनके बड़े बन्धु, गहरे आदर्श आत्मार्थी आदरणीय विद्वतरत्न पण्डित श्री हिम्मतलालभाई जेठालाल शाह ने विक्रम संवत् 2040 में बहिनश्री के जन्मधाम (वढ़वाण) की यात्रा के शुभ अवसर पर प्रदान किया था और जो 'बहिनश्री चम्पाबेन अभिनन्दन ग्रन्थ' में मुद्रित हुआ है, उसे यहाँ दिया गया है। उसमें वर्णित बहिनश्री की बाल्यावस्था के—ज्ञान, वैराग्य, उपशम, भक्ति, और तदर्थ सम्यक् पुरुषार्थ के सातिशय प्रेरक—मधुर संस्मरण आत्मार्थी जीवों को आत्महित का महान निमित्त होने योग्य है।

(2) जातिस्मरण ज्ञान :

विक्रम संवत् 1993 के बैशाख कृष्ण अष्टमी के दिन, मुमुक्षु जगत को अत्यन्त उपकारी हो, ऐसी एक असाधारण अद्भुत घटना बनी। पूज्य बहिनश्री, स्वर्णपुरी में 'लाठी ना उतारा में' निज निवासकक्ष में स्वात्मध्यान में बैठी थीं, तब निर्विकल्प आत्मानुभूति में से उपयोग, विकल्प में आने पर, उन्हें मतिज्ञान की परिणति में सहज निर्मलता होने पर उपयोग की स्वच्छता में पूर्व भव का आश्चर्यकारी सहज स्पष्ट जातिस्मरण ज्ञान प्रगट हुआ। इस निर्मल पवित्रज्ञान में प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री को, गत भव में विदेहक्षेत्र में उन्होंने समवसरण में जिनकी दिव्यवाणी साक्षात् सुनी थी, उन विदेहीनाथ सर्वज्ञ वीतराग परमात्मा श्री सीमन्धर भगवान, उनका दिव्य समवसरण, उनकी वाणी में सुने हुए पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के भूत तथा भावी भव, स्वर्ग और वहाँ के रत्न निर्मित शाश्वत् जिनमन्दिर तथा रत्नमय शाश्वत् जिन प्रतिमाएँ—इत्यादि अनेक विषय क्रम-क्रम से स्पष्टरूप से स्मरण में आये हैं।

पूज्य गुरुदेव को, दीक्षा लेने के पश्चात्, अन्दर से स्वयं सहज ऐसा आता था कि 'अरे ! मैं तो तीर्थङ्कर का जीव हूँ'... तदुपरान्त 'मैं राजकुमार हूँ' पतला ऊँचा शरीर का गठन, गतभव का परिवेश, ॐ ध्वनि का नाद इत्यादि अन्दर से सहज आता था परन्तु यह बात पूज्य गुरुदेव ने कभी बाहर नहीं रखी थी। पूज्य बहिनश्री के जातिस्मरणज्ञान की विगत जानने में आयी, तब पूज्य गुरुदेव को स्पष्ट हुआ कि —'दीक्षा लेने के पश्चात् जो मुझे सहज ही अन्तर में आता था वह, यह ही था।'

इस प्रकार पूज्य बहिनश्री के इस पवित्र ज्ञान द्वारा परमपूज्य गुरुदेव की 'भावी तीर्थङ्कर के द्रव्यरूप' लोकोत्तर महिमा प्रसिद्ध होने से मुमुक्षु जगत पर वास्तव में महान उपकार हुआ है। पूज्य बहिनश्री के स्वानुभवविभूषित शुद्धात्मसाधनामय आदर्श जीवन के साथ यह पवित्र ज्ञान भी आत्मार्थी जीवों को अपने श्रद्धा-जीवन में तथा भक्ति-जीवन में अतिशयता लाने के लिये महान लाभ का कारण हुआ है।

(3) गुरुदेव के हृदयोद्गार :

अध्यात्ममार्ग-प्रकाशक कृपानिधान परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का समस्त मुमुक्षुजगत पर अकथ्य अनन्त उपकार है। आपश्री के अनेकविध उपकारों में से एक महान उपकार यह है कि आपश्री ने मुमुक्षुजगत को प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन की, स्वानुभवयुक्त शुद्धात्मसाधना से और धर्म के साथ सम्बन्धवाले आश्चर्यकारी जातिस्मरणज्ञान से विभूषित पवित्र अलौकिक अन्तरंगदशा की यथातथ पहचान करायी है। आत्मार्थी जीवों को आत्मार्थ साधने में लाभ का कारण हो, इस हेतु से परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने, स्वर्णपुरी में तथा प्रवास के दौरान अनेक गाँवों में प्रवचनसभा और तत्त्वचर्चा के प्रसंग पर अति प्रसन्नतापूर्वक उच्चारित पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन की अध्यात्मसाधना, जातिस्मरणज्ञान और 'बहिनश्री के वचनामृत' पुस्तक सम्बन्धी कितने ही अहोभावयुक्त हृदयोद्गार यहाँ लिये गये हैं, कि जिनका भक्तिभावयुक्त अध्ययन सुपात्र जीवों को अपने जीवन निर्माण में अवश्य लाभरूप होगा।

(4) अध्यात्म-अमृतसरिता :

इस विभाग में, वैराग्यमूर्ति आत्मज्ञानी पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के लघुवय के स्वानुभवरसयुक्त कितने ही लेखों में से थोड़े से अवतरण चुनकर दिये गये हैं। इन अवतरणों का गहरायी से अवलोकन करने पर आत्मार्थ के अभ्यासी को उनकी अन्तरंग परिणति का—सहज ज्ञान, वैराग्य, उपशम, उदासीनता, निर्विकल्प आत्मानुभव, सतत् वर्तती ज्ञाताधारा, स्वरूपस्थिरता की सहज परिणति इत्यादि की—अद्भुत महिमा अन्दर से अवश्य आयेगी।

ये अवतरण वास्तव में अध्यात्म-अमृतसरिता ही है। आत्मार्थी जीवों को इनका वांचन तथा इन पर गहन विचार-मनन अवश्य करने योग्य है और ऐसा करने से अवश्य अपूर्व आत्मलाभ होगा।

प्रस्तुत हिन्दी संस्करण :

प्रस्तुत ग्रन्थ का गुजराती संस्करण एवं गुजराती भाषा की हिन्दी लिपीवाला संस्करण पूर्व में श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है, किन्तु इसका शुद्ध हिन्दी रूपान्तरण अभी तक अप्रकाशित था। इस वर्ष (अगस्त 2013) पूज्य बहिनश्री का जन्मशताब्दी वर्ष होने से इसके हिन्दी प्रकाशन की भावना प्रबल हुई, तदर्थ यह प्रकाशन 'श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई' एवं 'श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़' के अन्तर्गत प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तरण कार्य पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन, बिजौलियाँ (राजस्थान) ने किया है एवं संशोधन आदि में ब्रह्मचारिणी विमलाबेन, सोनगढ़; बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़ एवं श्री निखिलभाई मेहता, मुम्बई ने सहयोग प्रदान किया है, तदर्थ हम सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

इस ग्रन्थ की सुन्दर टाइप सैटिंग, श्री विवेककुमार पाल, विवेक ग्राफिक्स, अलीगढ़ एवं मुद्रण कार्य श्री दिनेश जैन, देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर द्वारा किया गया है—तदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में—यही भावना है कि परमोपकारी परमपूज्य सद्गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनुपम उपकार तले जिन्होंने भवान्तकारी मङ्गल अध्यात्म साधना साध ली है, ऐसी स्वानुभवपरिणत विशिष्ट ज्ञानधारी प्रशममूर्ति धर्मरत्न पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के पवित्र जीवन सम्बन्धी यह सङ्कलन, संशोधक आत्मार्थी जीवों को उनके गहन अवगाहन द्वारा आत्मसाधना की सम्यक् प्रेरणा, दिशा और पुरुषार्थ की प्राप्ति में निमित्तरूप हों।

निवेदक

ट्रस्टीगण, श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

एवं

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़

— दो शब्द —

परम वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की अनन्य उपासक एवं परमोपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की परम भक्त प्रशममूर्ति पूज्य भगवती माता बहिनश्री चम्पाबेन के सातिशय जातिस्मरणज्ञान की लोकोत्तर कृति 'बहिनश्री का ज्ञानवैभव' समस्त हिन्दी भाषी मुमुक्षुजनों को समर्पित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

इस ग्रन्थ का समग्र परिचय उपोद्घात में दे दिया गया है; अत: उस सम्बन्ध में कुछ कहना आवश्यक नहीं रह जाता है, तथापि एक बात मुझे पाठकों से अवश्य कहनी है; वह यह कि आप इस ग्रन्थ का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि जीव अपने परिणामों के फलस्वरूप कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। निश्चित ही यह बोध हमें अपने परिणामों की सम्हाल का प्रेरक होने के साथ ही कभी भी वीतरागी तत्त्वज्ञान के विराधक परिणाम स्वप्न में भी उत्पन्न न हो, यह प्रेरणा-प्रदाता भी है।

यहाँ यह पौराणिक तथ्य भी उल्लेखनीय है कि जातिस्मरणज्ञान अनेक जीवों के वैराग्य का निमित्त बना है, एवं इस युग में दानतीर्थ के प्रवर्तन का आधार भी राजा श्रेयांस का स्वप्नदर्शन एवं जातिस्मरणज्ञान रहा है।

इस जातिस्मरणरूप 'ज्ञानवैभव' के माध्यम से हमें अपने आराध्य भगवान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव के विदेहगमन का जीवन्त प्रमाण उपलब्ध हुआ है, जो कि हमारे लिये गौरव का विषय है।

वर्तमान कलिकाल में जिन्होंने हम सभी मुमुक्षुओं पर अकारण करुणा

करके महान उपकार किया है—ऐसे प्रत्यक्ष उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के भूत एवं भावी भवों, उनके भावी तीर्थकरत्व का प्रमाण प्रस्तुतकर्ता यह दिव्य 'ज्ञानवैभव' निश्चित ही मुमुक्षुओं की निधि है, जिसे सहेजकर रखना प्रत्येक का कर्तव्य है।

आत्मा की अनादि-निधनता का दिग्दर्शक एवं परिणामों के फल की सुनिश्चित प्रतीति करानेवाला यह 'ज्ञानवैभव' हमारे निर्मल परिणामों की संरचना का निमित्त बने—यही भावना है।

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री ने 'ज्ञानवैभव' की यह अमूल्य भेंट प्रदान कर, हम सभी मुमुक्षुओं को उपकृत किया है; तदर्थ पूज्य बहिनश्री के चरणों में विनम्र भावांजलि समर्पित करता हूँ।

अन्त में, इस अनुवाद कार्य के लिये प्रोत्साहित करने हेतु बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी एवं आत्मार्थी भाई निखिल मेहता के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए, प्रकाशक दोनों संस्थाओं के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

सभी आत्मार्थी जीव इस ज्ञानवैभव का अध्ययन कर, अपने उज्ज्वल परिणामों की संरचना करते हुए मुक्तिपथ की ओर प्रयाण करें—इसी भावना के साथ......

तुझ ज्ञान-ध्यान का रंग हम आदर्श रहो;
हो शिव पथ तक तुम संग माता हाथ ग्रहो।

दिनांक 22 अगस्त 2013 — **देवेन्द्रकुमार जैन**
(पूज्य बहिनश्री का जन्मशताब्दी दिवस) — बिजौलियां (राज.)

परमपूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी का अपार उपकार

[पूज्य बहिनश्री चंपाबेन के हस्ताक्षर में]

હે પરમ કૃપાળુ ગુરુદેવ! આપના અપાર ગુણોનું શું વર્ણન કરું? આપના અનંત ઉપકારોનું શું વર્ણન કરું? આ આત્માના દરેક પર્યાયમાં આપનો અસીમ ઉપકાર છે. આપે આ ભારતના જીવોને જાગ્રત કર્યા છે, અંતરમાં આત્મા તરફ વાળ્યા છે.

હે ગુરુદેવ! આપના શુદ્ધાત્મામાં પ્રગટેલા શુદ્ધ પર્યાયોના—જ્ઞાન-વિરક્તિ આદિની છાયા આપના અંતરમાં તેમજ આપની મુદ્રામાં છવાઈ ગઈ હતી.

હે ગુરુદેવ! આપના અંતરમાં ચૈતન્યચમત્કાર-સ્પર્શી સાતિશય શ્રુતજ્ઞાનના ચમત્કારી સમ્યક્ પર્યાયોના ઝગમગતા જ્ઞાન-દીવડા પ્રકાશિત રહ્યા હતા; આપની સાતિશય વાણી ચૈતન્યદેવનો અદ્‌ભુત ચમત્કાર દેખાડનારી હતી.

હે ગુરુદેવ! આપનું ચૈતન્યદ્રવ્ય મંગળસ્વરૂપ અને મંગળતા પ્રગટાવનાર તથા અલૌકિક હતું. દિવ્ય હતું.

હે ગુરુદેવ! આપે એકાકી, નિસ્પૃહ અને નીડરપણે અંતરમાં પુરુષાર્થ કરી આત્મરત્નને પ્રગટ કરી ભારતના જીવોને તે સમ્યક્ માર્ગે નિઃસ્પૃહપણે અને નીડરપણે આપના પરાક્રમથી વાળ્યા છે; શાસ્ત્રોનાં ને આત્મદેવનાં ઊંડાં સૂક્ષ્મ ગૂઢ પ્રકાશ્યાં છે; ઉપાદાન-નિમિત્ત, નિશ્ચય-વ્યવહાર, દ્રવ્યદૃષ્ટિ, જ્ઞાતા, કર્તા, અકર્તા, સ્વાનુભૂતિના નિર્વિકલ્પ દશા વગેરે ચૈતન્યના અદ્ભુતતા વાણી દ્વારા પ્રકાશ કરી લાખો જીવોને અંતરદૃષ્ટિનો માર્ગ બતાવ્યો છે, તે પંથે વાળ્યા છે. આપ ભારતના મહાન વિભૂતિ અને અજોડ રત્ન હતા.

હે ગુરુદેવ! આપના ઉપકારોનું શું વર્ણન થાય? તે તો હૃદયપટમાં કોતરાઈ ગયા છે. આ દાસના આત્મા ઉપર આપનો અનંત અનંત ઉપકાર છે. આપના સેવા-ભક્તિ અંતરમાં વસી રહો. આપના ચરણ કમળમાં આ દાસના વારંવાર પરમભક્તિથી વંદન નમસ્કાર હો.

परम पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी का अपार उपकार

(पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के भक्तिभीने उद्‌गार)

हे परमकृपालु गुरुदेव! आपके अपार गुणों का क्या वर्णन करूँ! आपके अनन्त उपकारों का क्या वर्णन करूँ! इस आत्मा की प्रत्येक पर्याय में आपका असीम उपकार है। आपने इस भारत के जीवों को जागृत किया है, अन्तर में आत्मोन्मुख किया है।

हे गुरुदेव! आपके शुद्धात्मा में प्रगट हुई शुद्ध पर्यायों की—ज्ञान-विरक्ति आदि की—छाया आपके अन्तर में तथा आपकी मुद्रा में छा गयी थी।

हे गुरुदेव! आपके अन्तर में चैतन्यरत्नाकर-स्पर्शी सातिशय श्रुतज्ञान की चमत्कारी सम्यक् पर्यायों के जगमगाते ज्ञानदीपक प्रकाशित हो रहे हैं; आपकी सातिशय वाणी चैतन्यदेव का अद्‌भुत चमत्कार बतलानेवाली थी।

हे गुरुदेव! आपका चैतन्यद्रव्य मंगलस्वरूप एवं मांगलिकता प्रगट करनेवाला तथा अलौकिक था, दिव्य था।

हे गुरुदेव! आपने एकाकी, निस्पृहता एवम् निर्भीकता से अन्तर में पुरुषार्थ कर, आत्मरत्न को प्रगट करके, भारत के जीवों को उस सम्यक् मार्ग में निस्पृहता एवम् निर्भीकतापूर्वक अपने पराक्रम से लगाया है, शास्त्रों के तथा आत्मदेव के गम्भीर सूक्ष्म हार्द प्रकाशित किये हैं; उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, द्रव्यदृष्टि, ज्ञाता, कर्त्ता, अकर्त्ता, स्वानुभूति की निर्विकल्पदशा आदि चैतन्य की अद्‌भुतता का वाणी द्वारा प्रकाश करके लाखों जीवों को अन्तर्दृष्टि का मार्ग बतलाया है, उस पन्थ पर लगाया है। आप भारत की महान विभूति एवम् अजोड़ रत्न थे।

हे गुरुदेव! आपके उपकारों का क्या वर्णन हो सकता है! वे तो हृदयपट पर अंकित हो गये हैं। इस दास के आत्मा पर आपका अनन्त उपकार है। आपकी सेवा-भक्ति अंतर में बसी रहे। आपके चरणकमल में इस दास के बारम्बार परम भक्ति से नमस्कार हो।

अध्यात्मयुगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

(संक्षिप्त जीवनवृत्त)

भारतदेश के सौराष्ट्र प्रान्त में, बलभीपुर के समीप समागत 'उमराला' गाँव में स्थानकवासी सम्प्रदाय के दशाश्रीमाली वणिक परिवार के श्रेष्ठीवर्य श्री मोतीचन्दभाई के घर, माता उजमबा की कूख से विक्रम संवत् 1946के वैशाख शुक्ल दूज, रविवार (दिनाङ्क 21 अप्रैल 1890 – ईस्वी) प्रात:काल इन बाल महात्मा का जन्म हुआ।

जिस समय यह बाल महात्मा इस वसुधा पर पधारे, उस समय जैन समाज का जीवन अन्ध-विश्वास, रूढ़ि, अन्धश्रद्धा, पाखण्ड, और शुष्क क्रियाकाण्ड में फँस रहा था। जहाँ कहीं भी आध्यात्मिक चिन्तन चलता था, उस चिन्तन में अध्यात्म होता ही नहीं था। ऐसे इस अन्धकारमय कलिकाल में तेजस्वी कहानसूर्य का उदय हुआ।

पिताश्री ने सात वर्ष की लघुवय में लौकिक शिक्षा हेतु विद्यालय में प्रवेश दिलाया। प्रत्येक वस्तु के ह्वार्द तक पहुँचने की तेजस्वी बुद्धि, प्रतिभा, मधुरभाषी, शान्तस्वभावी, सौम्य गम्भीर मुखमुद्रा, तथा स्वयं कुछ करने के स्वभाववाले होने से बाल 'कानजी' शिक्षकों तथा विद्यार्थियों में लोकप्रिय हो गये। विद्यालय और जैन पाठशाला के अभ्यास में प्राय: प्रथम नम्बर आता था, किन्तु विद्यालय की लौकिक शिक्षा से उन्हें सन्तोष नहीं होता था। अन्दर ही अन्दर ऐसा लगता था कि मैं जिसकी खोज में हूँ, वह यह नहीं है।

तेरह वर्ष की उम्र में छह कक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात्, पिताजी के साथ उनके व्यवसाय के कारण पालेज जाना हुआ, और चार वर्ष बाद पिताजी के

स्वर्गवास के कारण, सत्रह वर्ष की उम्र में भागीदार के साथ व्यवसायिक प्रवृत्ति में जुड़ना हुआ।

व्यवसाय की प्रवृत्ति के समय भी आप अप्रमाणिकता से अत्यन्त दूर थे, सत्यनिष्ठा, नैतिज्ञता, निखालिसता और निर्दोषता से सुगन्धित आपका व्यावहारिक जीवन था। साथ ही आन्तरिक व्यापार और झुकाव तो सतत् सत्य की शोध में ही संलग्न था। दुकान पर भी धार्मिक पुस्तकें पढ़ते थे। वैरागी चित्तवाले कहानकुँवर कभी रात्रि को रामलीला या नाटक देखने जाते तो उसमें से वैराग्यरस का घोलन करते थे। जिसके फलस्वरूप पहली बार सत्रह वर्ष की उम्र में पूर्व की आराधना के संस्कार और मङ्गलमय उज्ज्वल भविष्य की अभिव्यक्ति करता हुआ, बारह लाईन का काव्य इस प्रकार रच जाता है —

शिवरमणी रमनार तूं, तूं ही देवनो देव।

उन्नीस वर्ष की उम्र से तो रात्रि का आहार, जल, तथा अचार का त्याग कर दिया था।

सत्य की शोध के लिए दीक्षा लेने के भाव से 22 वर्ष की युवा अवस्था में दुकान का परित्याग करके, गुरु के समक्ष आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर लिया और 24 वर्ष की उम्र में (अगहन शुक्ल 9, संवत् 1970) के दिन छोटे से उमराला गाँव में 2000 साधर्मियों के विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में स्थानकवासी सम्प्रदाय की दीक्षा अंगीकार कर ली। दीक्षा के समय हाथी पर चढ़ते हुए धोती फट जाने से तीक्ष्ण बुद्धि के धारक – इन महापुरुष को शंका हो गयी कि कुछ गलत हो रहा है परन्तु सत्य क्या है? यह तो मुझे ही शोधना पड़ेगा।

दीक्षा के बाद सत्य के शोधक इन महात्मा ने स्थानकवासी और श्वेताम्बर सम्प्रदाय के समस्त आगमों का गहन अभ्यास मात्र चार वर्ष में पूर्ण कर लिया। सम्प्रदाय में बड़ी चर्चा चलती थी, कि कर्म है तो विकार होता है न? यद्यपि गुरुदेवश्री को अभी दिगम्बर शास्त्र प्राप्त नहीं हुए थे, तथापि पूर्व संस्कार के बल से वे दृढ़तापूर्वक सिंह गर्जना करते हैं — **जीव स्वयं से स्वतन्त्ररूप से विकार**

करता है; कर्म से नहीं अथवा पर से नहीं। जीव अपने उल्टे पुरुषार्थ से विकार करता है और सुल्टे पुरुषार्थ से उसका नाश करता है।

विक्रम संवत् 1978 में महावीर प्रभु के शासन-उद्धार का और हजारों मुमुक्षुओं के महान पुण्योदय का सूचक एक मङ्गलकारी पवित्र प्रसंग बना —

32 वर्ष की उम्र में, विधि के किसी धन्य पल में श्रीमद्भगवत् कुन्दकन्दाचार्यदेव रचित 'समयसार' नामक महान परमागम, एक सेठ द्वारा महाराजश्री के हस्तकमल में आया, इन पवित्र पुरुष के अन्तर में से सहज ही उद्‌गार निकले — **'सेठ! यह तो अशरीरी होने का शास्त्र है।'** इसका अध्ययन और चिन्तवन करने से अन्तर में आनन्द और उल्लास प्रगट होता है। इन महापुरुष के अन्तरंग जीवन में भी परम पवित्र परिवर्तन हुआ। भूली पड़ी परिणति ने निज घर देखा। तत्पश्चात् श्री प्रवचनसार, अष्टपाहुड़, मोक्षमार्गप्रकाशक, द्रव्यसंग्रह, सम्यग्ज्ञानदीपिका इत्यादि दिगम्बर शास्त्रों के अभ्यास से आपको नि:शंक निर्णय हो गया कि दिगम्बर जैनधर्म ही मूलमार्ग है और वही सच्चा धर्म है। इस कारण आपकी अन्तरंग श्रद्धा कुछ और बाहर में वेष कुछ — यह स्थिति आपको असह्य हो गयी। अत: अन्तरंग में अत्यन्त मनोमन्थन के पश्चात् सम्प्रदाय के परित्याग का निर्णय लिया।

परिवर्तन के लिये योग्य स्थान की खोज करते-करते सोनगढ़ आकर वहाँ 'स्टार ऑफ इण्डिया' नामक एकान्त मकान में महावीर प्रभु के जन्मदिवस, चैत्र शुक्ल 13, संवत् 1991 (दिनांक 16 अप्रैल 1935) के दिन दोपहर सवा बजे सम्प्रदाय का चिह्न मुँह पट्टी का त्याग कर दिया और स्वयं घोषित किया कि **अब मैं स्थानकवासी साधु नहीं; मैं सनातन दिगम्बर जैनधर्म का श्रावक हूँ।** सिंह-समान वृत्ति के धारक इन महापुरुष ने 45 वर्ष की उम्र में महावीर्य उछाल कर यह अद्‌भुत पराक्रमी कार्य किया।

स्टार ऑफ इण्डिया में निवास करते हुए मात्र तीन वर्ष के दौरान ही जिज्ञासु भक्तजनों का प्रवाह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया, जिसके कारण यह मकान

एकदम छोटा पड़ने लगा; अत: भक्तों ने इन परम प्रतापी सत् पुरुष के निवास और प्रवचन का स्थल '**श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर**' का निर्माण कराया। गुरुदेवश्री ने वैशाख कृष्ण 8, संवत् 1994 (दिनांक 22 मई 1938) के दिन इस निवासस्थान में मंगल पदार्पण किया। यह स्वाध्याय मन्दिर, जीवनपर्यन्त इन महापुरुष की आत्मसाधना और वीरशासन की प्रभावना का केन्द्र बन गया।

दिगम्बर धर्म के चारों अनुयोगों के छोटे बड़े 183 ग्रन्थों का गहनता से अध्ययन किया, उनमें से मुख्य 38ग्रन्थों पर सभा में प्रवचन किये। जिनमें श्री समयसार ग्रन्थ पर 19 बार की गयी अध्यात्म वर्षा विशेष उल्लेखनीय है। प्रवचनसार, अष्टपाहुड़, परमात्मप्रकाश, नियमसार, पंचास्तिकायसंग्रह, समयसार कलश-टीका इत्यादि ग्रन्थों पर भी बहुत बार प्रवचन किये हैं।

दिव्यध्वनि का रहस्य समझानेवाले और कुन्दकुन्दादि आचार्यों के गहन शास्त्रों के रहस्योद्घाटक इन महापुरुष की भवताप विनाशक अमृतवाणी को ईस्वी सन् 1960 से नियमितरूप से टेप में उत्कीर्ण कर लिया गया, जिसके प्रताप से आज अपने पास नौ हजार से अधिक प्रवचन सुरक्षित उपलब्ध हैं। यह मङ्गल गुरुवाणी, देश-विदेश के समस्त मुमुक्षु मण्डलों में तथा लाखों जिज्ञासु मुमुक्षुओं के घर-घर में गुंजायमान हो रही है। इससे इतना तो निश्चित है कि भरतक्षेत्र के भव्यजीवों को पञ्चम काल के अन्त तक यह दिव्यवाणी ही भव के अभाव में प्रबल निमित्त होगी।

इन महापुरुष का धर्म सन्देश, समग्र भारतवर्ष के मुमुक्षुओं को नियमित उपलब्ध होता रहे, तदर्थ सर्व प्रथम विक्रम संवत् 2000 के माघ माह से (दिसम्बर 1943 से) **आत्मधर्म** नामक मासिक आध्यात्मिक पत्रिका का प्रकाशन सोनगढ़ से मुरब्बी श्री रामजीभाई माणिकचन्द दोशी के सम्पादकत्व में प्रारम्भ हुआ, जो वर्तमान में भी गुजराती एवं हिन्दी भाषा में नियमित प्रकाशित हो रहा है। पूज्य गुरुदेवश्री के दैनिक प्रवचनों को प्रसिद्धि करता दैनिक पत्र **श्री सद्गुरु प्रवचनप्रसाद** ईस्वी सन् 1950 सितम्बर माह से नवम्बर 1956 तक प्रकाशित

हुआ। स्वानुभवविभूषित चैतन्यविहारी इन महापुरुष की मङ्गल-वाणी को पढ़कर और सुनकर हजारों स्थानकवासी श्वेताम्बर तथा अन्य कौम के भव्य जीव भी तत्त्व की समझपूर्वक सच्चे दिगम्बर जैनधर्म के अनुयायी हुए। अरे! मूल दिगम्बर जैन भी सच्चे अर्थ में दिगम्बर जैन बने।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़ द्वारा दिगम्बर आचार्यों और मान्यवर, पण्डितवर्यों के ग्रन्थों तथा पूज्य गुरुदेवश्री के उन ग्रन्थों पर हुए प्रवचन-ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य विक्रम संवत् 1999 (ईस्वी सन् 1943 से) शुरु हुआ। इस सत्साहित्य द्वारा वीतरागी तत्त्वज्ञान की देश-विदेश में अपूर्व प्रभावना हुई, जो आज भी अविरलरूप से चल रही है। परमागमों का गहन रहस्य समझाकर कृपालु कहान गुरुदेव ने अपने पर करुणा बरसायी है। तत्त्वजिज्ञासु जीवों के लिये यह एक महान आधार है और दिगम्बर जैन साहित्य की यह एक अमूल्य सम्पत्ति है।

ईस्वीं सन् 1962 के दशलक्षण पर्व से भारत भर में अनेक स्थानों पर पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रवाहित तत्त्वज्ञान के प्रचार के लिए प्रवचनकार भेजना प्रारम्भ हुआ। इस प्रवृत्ति से भारत भर के समस्त दिगम्बर जैन समाज में अभूतपूर्व आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न हुई। आज भी देश-विदेश में दशलक्षण पर्व में सैकड़ों प्रवचनकार विद्वान इस वीतरागी तत्त्वज्ञान का डंका बजा रहे हैं।

बालकों में तत्त्वज्ञान के संस्कारों का अभिसिंचन हो, तदर्थ सोनगढ़ में विक्रम संवत् 1997 (ईस्वीं सन् 1941) के मई महीने के ग्रीष्मकालीन अवकाश में बीस दिवसीय धार्मिक शिक्षण वर्ग प्रारम्भ हुआ, बड़े लोगों के लिये प्रौढ़ शिक्षण वर्ग विक्रम संवत् 2003 के श्रावण महीने से शुरु किया गया।

सोनगढ़ में विक्रम संवत् 1997 - फाल्गुन शुक्ल दूज के दिन नूतन दिगम्बर जिनमन्दिर में कहानगुरु के मङ्गल हस्त से श्री सीमन्धर आदि भगवन्तों की पंच कल्याणक विधिपूर्वक प्रतिष्ठा हुई। उस समय सौराष्ट्र में मुश्किल से चार-पाँच दिगम्बर मन्दिर थे और दिगम्बर जैन तो भाग्य से ही दृष्टिगोचर होते थे। जिनमन्दिर

निर्माण के बाद दोपहरकालीन प्रवचन के पश्चात् जिनमन्दिर में नित्यप्रति भक्ति का क्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें जिनवर भक्त गुरुराज हमेशा उपस्थित रहते थे, और कभी-कभी अतिभाववाही भक्ति भी कराते थे। इस प्रकार गुरुदेवश्री का जीवन निश्चय-व्यवहार की अपूर्व सन्धियुक्त था।

ईस्वी सन् 1941 से ईस्वीं सन् 1980 तक सौराष्ट्र-गुजरात के उपरान्त समग्र भारतदेश के अनेक शहरों में तथा नैरोबी में कुल 66 दिगम्बर जिनमन्दिरों की मङ्गल प्रतिष्ठा इन वीतराग-मार्ग प्रभावक सत्पुरुष के पावन कर-कमलों से हुई।

जन्म-मरण से रहित होने का सन्देश निरन्तर सुनानेवाले इन चैतन्यविहारी पुरुष की मङ्गलकारी जन्म-जयन्ती 59 वें वर्ष से सोनगढ़ में मनाना शुरु हुआ। तत्पश्चात् अनेकों मुमुक्षु मण्डलों द्वारा और अन्तिम 91 वें जन्मोत्सव तक भव्य रीति से मनाये गये। 75 वीं हीरक जयन्ती के अवसर पर समग्र भारत की जैन समाज द्वारा चाँदी जड़ित एक आठ सौ पृष्ठीय अभिनन्दन ग्रन्थ, भारत सरकार के तत्कालीन गृहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा मुम्बई में देशभर के हजारों भक्तों की उपस्थिति में पूज्यश्री को अर्पित किया गया।

श्री सम्मेदशिखरजी की यात्रा के निमित्त समग्र उत्तर और पूर्व भारत में मङ्गल विहार ईस्वी सन् 1957 और ईस्वी सन् 1967 में ऐसे दो बार हुआ। इसी प्रकार समग्र दक्षिण और मध्यभारत में ईस्वी सन् 1959 और ईस्वी सन् 1964 में ऐसे दो बार विहार हुआ। इस मङ्गल तीर्थयात्रा के विहार दौरान लाखों जिज्ञासुओं ने इन सिद्धपद के साधक सन्त के दर्शन किये, तथा भवान्तकारी अमृतमय वाणी सुनकर अनेक भव्य जीवों के जीवन की दिशा आत्मसन्मुख हो गयी। इन सन्त पुरुष को अनेक स्थानों से अस्सी से अधिक अभिनन्दन पत्र अर्पण किये गये हैं।

श्री महावीर प्रभु के निर्वाण के पश्चात् यह अविच्छिन्न पैंतालीस वर्ष का समय (वीर संवत् 2461 से 2507 अर्थात् ईस्वी सन् 1935 से 1980) वीतरागमार्ग की प्रभावना का स्वर्णकाल था। जो कोई मुमुक्षु, अध्यात्म तीर्थधाम स्वर्णपुरी / सोनगढ़ जाते, उन्हें वहाँ तो चतुर्थ काल का ही अनुभव होता था।

विक्रम संवत् 2037, कार्तिक कृष्ण 7, दिनांक 28 नवम्बर 1980 शुक्रवार के दिन ये प्रबल पुरुषार्थी आत्मज्ञ सन्त पुरुष — देह का, बीमारी का और मुमुक्षु समाज का भी लक्ष्य छोड़कर अपने ज्ञायक भगवान के अन्तरध्यान में एकाग्र हुए, अतीन्द्रिय आनन्दकन्द निज परमात्मतत्त्व में लीन हुए। सायंकाल आकाश का सूर्य अस्त हुआ, तब सर्वज्ञपद के साधक सन्त ने मुक्तिपुरी के पन्थ में यहाँ भरतक्षेत्र से स्वर्गपुरी में प्रयाण किया। वीरशासन को प्राणवन्त करके अध्यात्म युग सृजक बनकर प्रस्थान किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी इस युग का एक महान और असाधारण व्यक्तित्व थे, उनके बहुमुखी व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने सत्य से अत्यन्त दूर जन्म लेकर स्वयंबुद्ध की तरह स्वयं सत्य का अनुसन्धान किया और अपने प्रचण्ड पुरुषार्थ से जीवन में उसे आत्मसात किया।

इन विदेही दशावन्त महापुरुष का अन्तर जितना उज्ज्वल है, उतना ही बाह्य भी पवित्र है; ऐसा पवित्रता और पुण्य का संयोग इस कलिकाल में भाग्य से ही दृष्टिगोचर होता है। आपश्री की अत्यन्त नियमित दिनचर्या, सात्विक और परिमित आहार, आगम सम्मत्त संभाषण, करुण और सुकोमल हृदय, आपके विरल व्यक्तित्व के अभिन्न अवयव हैं। शुद्धात्मतत्त्व का निरन्तर चिन्तवन और स्वाध्याय ही आपका जीवन था। जैन श्रावक के पवित्र आचार के प्रति आप सदैव सतर्क और सावधान थे। जगत् की प्रशंसा और निन्दा से अप्रभावित रहकर, मात्र अपनी साधना में ही तत्पर रहे। आप भावलिंगी मुनियों के परम उपासक थे।

आचार्य भगवन्तों ने जो मुक्ति का मार्ग प्रकाशित किया है, उसे इन रत्नत्रय विभूषित सन्त पुरुष ने अपने शुद्धात्मतत्त्व की अनुभूति के आधार से सातिशय ज्ञान और वाणी द्वारा युक्ति और न्याय से सर्व प्रकार से स्पष्ट समझाया है। द्रव्य की स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, क्रमबद्धपर्याय, कारणशुद्धपर्याय, आत्मा का शुद्धस्वरूप, सम्यग्दर्शन, और उसका विषय, सम्यग्ज्ञान और ज्ञान की स्व-पर प्रकाशकता, तथा सम्यक्चारित्र का स्वरूप

इत्यादि समस्त ही आपश्री के परम प्रताप से इस काल में सत्यरूप से प्रसिद्धि में आये हैं। आज देश-विदेश में लाखों जीव, मोक्षमार्ग को समझने का प्रयत्न कर रहे हैं – यह आपश्री का ही प्रभाव है।

समग्र जीवन के दौरान इन गुणवन्ता ज्ञानी पुरुष ने बहुत ही अल्प लिखा है क्योंकि आपको तो तीर्थङ्कर की वाणी जैसा योग था, आपकी अमृतमय मङ्गलवाणी का प्रभाव ही ऐसा था कि सुननेवाला उसका रसपान करते हुए थकता ही नहीं। दिव्य भावश्रुतज्ञानधारी इस पुराण पुरुष ने स्वयं ही परमागम के यह सारभूत सिद्धान्त लिखाये हैं :—

1. एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का स्पर्श नहीं करता।
2. प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय क्रमबद्ध ही होती है।
3. उत्पाद, उत्पाद से है; व्यय या ध्रुव से नहीं।
4. उत्पाद, अपने षट्कारक के परिणमन से होता है।
5. पर्याय के और ध्रुव के प्रदेश भिन्न हैं।
6. भावशक्ति के कारण पर्याय होती ही है, करनी नहीं पड़ती।
7. भूतार्थ के आश्रय से सम्यग्दर्शन होता है।
8. चारों अनुयोगों का तात्पर्य वीतरागता है।
9. स्वद्रव्य में भी द्रव्य-गुण-पर्याय का भेद करना, वह अन्यवशपना है।
10. ध्रुव का अवलम्बन है परन्तु वेदन नहीं; और पर्याय का वेदन है, अवलम्बन नहीं।

इन अध्यात्मयुगसृष्टा महापुरुष द्वारा प्रकाशित स्वानुभूति का पावन पथ जगत में सदा जयवन्त वर्तो!

तीर्थङ्कर श्री महावीर भगवान की दिव्यध्वनि का रहस्य समझानेवाले शासन स्तम्भ श्री कहानगुरुदेव त्रिकाल जयवन्त वर्तो!!

सत्पुरुषों का प्रभावना उदय जयवन्त वर्तो!!!

❖❖❖

ॐ

नमः श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यः ।

नमः श्रीसद्गुरुदेवाय ॥

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का संक्षिप्त जीवन परिचय

इस विभाग में, विक्रम संवत् 2040 में, प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन की 71 वीं जन्म-जयन्ती के प्रसङ्ग पर, रक्षाबन्धन पर्व के दिन आयोजित 'कहान एक्सप्रेस' स्पेशल ट्रेन द्वारा पूज्य भगवती माता बहिनश्री के साथ उनके जन्मधाम की यात्रा के शुभ अवसर पर, बहिनश्री के बड़े बन्धु आदरणीय विद्वत्रत्न पण्डितश्री हिमतलालभाई जे. शाह द्वारा प्रस्तुत संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया है। इसमें वर्णित बहिनश्री की बाल्यावस्था के — साधना-अवस्था के—मधुर संस्मरणों को, अपने जीवन में आत्महित का निमित्त हो उस प्रकार, उपयोगी बनाने की मुमुक्षुओं को प्रेरणा है।

पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का जन्म वढ़वाण शहर में, विक्रम संवत् 1970, भाद्रपद कृष्ण दूज, शुक्रवार के दिन महालक्ष्मी के मन्दिर के समीप पीपलवाले घर में हुआ था।

पूज्य बहिनश्री की उम्र साढ़े तीन वर्ष की थी, तब हमारी मातुश्री का स्वर्गवास हुआ। उस समय मेरी उम्र साढ़े नौ वर्ष की थी। मातुश्री का स्वर्गवास होने से पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन, करांची में बड़ी बहिन के (समरतबेन के) वहाँ रहे। पूज्य पिताजी, बड़े भाईश्री वजुभाई और मैं —

हम तीनों वढ़वाण रहे। पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन लगभग दस-ग्यारह वर्ष करांची में रहीं, शाला का अभ्यास भी उन्होंने वहीं किया। बुद्धिशाली होने से शाला के अभ्यास में वे प्राय: प्रथम नम्बर रखती थीं।

वे प्रथम से ही प्रकृति से सौम्य, कोमल, सौजन्यपूर्ण, शर्मिली, वैरागी, और मितभाषी तथा मिष्टभाषी थीं। बोले बहुत थोड़ा, बुलावे तब बहुत ही थोड़ा मुश्किल से बोलें। बड़ी बहिन, पड़ोसी के यहाँ कोई वस्तु लेने को भेजे कि 'चम्पा! चाकू ले आ', तो वे उनके यहाँ जाकर धीमी मधुरवाणी से कहे — 'चाकू दो न!' पड़ोसी को यह सुनना ऐसा मीठा लगता कि फिर से बुलवाने के लिये वे पूछते — 'चम्पा! क्या लेने आयी हो? समझ में नहीं आया।' 'चाकू दो न!' ऐसा कहे, तब वह फिर से कहे — 'अभी कुछ समझ में नहीं आया।' तब बहिनश्री फिर से कहे — 'चाकू दो न' — इस प्रकार उनकी मधुर भाषा सुनने के लिये बारम्बार बुलवाते।

वे स्वभाव से नरम भी इतनी ही थीं। मंजिल के नीचे पानी का सामूहिक नल था। वहाँ पानी भरने जाये तो वे एक ओर खड़ी रहें, उनका नम्बर आवे तो भी स्वयं भीड़ के अन्दर जाकर भर नहीं सकें। फिर ऐसी छाप पड़ गयी कि दूसरी बहनें जो वहाँ हों वे, कहे — 'चम्पा को पानी भर लेने दो! यह तो एक ओर खड़ी ही रहेगी, पानी नहीं भर सकेगी।' बहिनश्री पहले से ही ऐसी नरम स्वभाव की थी, ऐसे बहुत सद्गुण उनमें थे।

बहिनश्री को बालपन से ही सद्गुणी व्यक्तियों के प्रति प्रेम था, उनमें भी सतियों का तो बहुत आकर्षण... 'सती मण्डल' नामक पुस्तक

उन्हें ईनाम में प्राप्त हुई थी; उसमें से वे सतियों का चरित्र पढ़तीं तथा कितनी ही सतियों के चरित्र-सम्बन्धी रास-गरबा वे मोहल्ले के चौगान में गवातीं और अन्य बालिकायें झेलती। दूसरी भी नैतिक पुस्तकें, सदाचरण की पुस्तकें वे पढ़तीं। ऐसी अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने का उन्हें पहले से ही प्रेम था। उन्होंने धार्मिक अभ्यास घर में बैठे-बैठे पढ़कर अथवा किसी बहिन के साथ सामायिक, प्रतिक्रमण इत्यादि करतीं, उस दौरान किया था। धर्मस्थानक वहाँ था, परन्तु बहुत दूर। वहाँ बाहर से आये हुए किसी पण्डित का व्याख्यान चलता, परन्तु वह उपदेश सुनने जाने का तो कभी बनता। किसी समय घर में दोपहर में सामायिक करे और रात्रि में प्रतिक्रमण करे।

शाला का अभ्यास छोड़ने के पश्चात् तो वे दोपहर में घर में सामायिक बहुत बार करतीं; त्याग-वैराग्य की क्रियाएँ भी करतीं। सामायिक का पाठ सीखा था और प्रतिक्रमण भी मुखाग्र किया था। तदुपरान्त थोकड़ा में नवतत्त्व, छह काय के बोल, दण्डक, गति -आगति, गुणस्थान — ये सब यथाशक्ति विचारपूर्वक मुखपाठ किया था। पुच्छिस्सुणं (प्रत्याख्यान), भक्तामर तथा कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्र कण्ठस्थ किये थे। दूसरा धार्मिक वांचन भी करती थीं। बेनश्री कहती — 'वहाँ पण्डित लालन की एक पुस्तक थी, उसमें ऐसा आता कि आँख बन्द करो, कान बन्द करो, अन्दर जो एक विचारक तत्त्व है, वह आत्मा है।' यह बात मुझे रुचती। वह विचारक तत्त्व कौन है ? — यह समझने के लिये मैं प्रयत्न करती। इस प्रकार आत्मा समझने की धार्मिक लगन उन्हें पहले से ही थी।

उनका चित्त वैराग्य से बहुत ही भींगा हुआ था; इसलिए उन्हें दीक्षा

लेने की भावना बचपन से ही थी। लघुवय से ही उन्हें अन्तर में ऐसा लगता था कि 'ऐसा मनुष्य भव तो कदाचित् ही मिलता है; इस मूल्यवान मनुष्यभव का उपयोग तो मोक्ष प्राप्त करने के लिये ही कर लेना चाहिए। इसके लिये मुझे अवश्य दीक्षा लेनी है।' इस प्रकार उन्हें दीक्षा की प्रबल भावना वर्तती थी और अन्दर में दृढ़ निर्णय किया कि 'मुझे दीक्षा तो लेनी ही है।' यह बात उन्होंने अपनी एक सखी को कही। सखी द्वारा वह बात बाहर प्रसिद्ध हो गयी और चम्पाबेन को उलाहना मिला कि — ऐसे विचार क्यों करती हो? इसलिए भावना तीव्र होने पर भी, दीक्षा नहीं ली जा सकी। शर्मिली और नरम प्रकृति के कारण; तथा किससे दीक्षा लेनी, यह निर्णय नहीं हो सकने से दीक्षा की भावना साकार नहीं हो सकी।

तत्पश्चात् लगभग चौदह या पन्द्रहवें वर्ष में उन्हें वढ़वाण आना हुआ। उससे पहले वे हर दो-दो या तीन-तीन वर्ष में वढ़वाण आतीं और दो-चार महीने रहतीं, और फिर करांची जातीं। परन्तु पन्द्रहवें वर्ष में वढ़वाण आने के बाद तो बहुत समय वहीं व्यतीत करना हुआ। कभी बड़े भाई के घर वाँकानेर जाये; करांची भी बीच में जा आयीं। उनका चित्त वैराग्य से भीगा हुआ तो था ही; उसमें उनकी धर्म भावना को—देश में रहने के दौरान पोषण तथा दिशा मिले ऐसा हुआ। उन्हें पूज्य गुरुदेव से व्याख्यान द्वारा तत्त्व की बहुत बातें सुनने को मिलीं। गुरुदेव ने मोक्षमार्ग का जो यथार्थ प्ररूपण किया था, वह मैंने सुना था। तत्त्वज्ञान की यथार्थ सूक्ष्म बातें—सम्यग्दर्शन का माहात्म्य; आत्मा का स्वभाव; कर्म और आत्मा का स्वतन्त्र परिणमन-इत्यादि बहुत-बहुत बातें—सुनी थीं। उस विषय में मैं और बहिनश्री चर्चा करते। मैं उन्हें तत्त्व की, वैराग्य की या सत्पुरुष के प्रति भक्ति की जो-जो बात कहूँ, वे उन्हें बहुत रसपूर्वक

सुनतीं। उन्हें ये बातें बहुत रुचती। पहले तो उन्हें यह बातें कठिन लगतीं और मन में लगता कि यह सब कैसे समझ में आयेगा? परन्तु फिर तो उन्होंने यह सब बहुत शीघ्रता से पकड़ लिया और गुरुदेव का तत्त्वज्ञान अन्दर में अपने भाव से स्वयं समझ लिया।

उनका जीवन प्रथम से ही साध्य लक्ष्यी था और वह साध्य, मोक्ष प्राप्ति था। इसलिए तत्त्व को स्पष्ट करे और वैराग्य-उपशम दृढ़ करे, ऐसी धार्मिक पुस्तकें पढ़ना बहिनश्री को रुचता था। इसके अतिरिक्त अन्य वाचन में समय बिल्कुल नहीं बिगाड़ती थीं।

'श्रीमद् राजचन्द्र' पुस्तक इस प्रकार हाथ में आयी कि —विक्रम संवत् 1982 के साल में वढ़वाण के चातुर्मास पश्चात् गुरुदेव जब विहार करनेवाले थे, तब वजुभाई ने पूछा कि 'महाराज साहेब! आप विहार करते हो तो आपके समागम के वियोग में अब हमें कौन सी पुस्तक पढ़ना?' तब उन्होंने कहा — 'श्रीमद् राजचन्द्र' पढ़ो। इसलिए वह पुस्तक वजुभाई पुस्तकालय में से लाये। मेरे हाथ में आने पर वह पुस्तक मुझे बहुत रुचिकर हुई; इसलिए मैं उसे पढ़ता; बहिनश्री भी पढ़तीं; मैं और बहिनश्री साथ में बैठकर भी वह पुस्तक पढ़ते; उसमें प्ररूपित धर्मबोध के विषय में चर्चा भी करते। उसमें जो विचार कहे हों, उन्हें विचारते। बहिनश्री उनमें बहुत रस लेती थीं।

तदुपरान्त 'कर्म ने आत्मानो संयोग' नामक एक पुस्तक थी, वह भी हम पढ़ते और विचारते। वह पुस्तक वजुभाई को धार्मिक अभ्यास क्रम में पाठ्यपुस्तक रूप से थी। स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस की ओर से सौराष्ट्र में जो परीक्षा ली जाती थी, उसकी वह पाठ्यपुस्तक थी, इसलिए

वह पुस्तक घर में थी; वह मेरे हाथ में आयी। उसमें कही हुई बातें मुझे बहुत रुचती। बाद में पता पड़ा कि 'कर्म ने आत्मानो संयोग' वह कोई स्वतन्त्र मौलिक पुस्तक नहीं थी परन्तु मोक्षमार्गप्रकाशक नामक दिगम्बर जैन ग्रन्थ के दूसरे अधिकार का प्राय: भाषान्तर ही उसमें दिया हुआ है। उसमें बहुत तर्कसंगत और सुन्दर पद्धति से सिद्धान्त समझाये थे; जो स्वाभाविक रीति से ही अपने को रुचे। कर्म का कार्य क्या, आठ कर्म का प्रयोजन क्या? आत्मा और कर्म दोनों स्वतन्त्र हैं, मात्र उन्हें निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है — ऐसी बहुत बातें उसमें प्रतीतिकर ढंग से समझायी हैं। उसमें स्पष्ट रीति से समझाया है कि बन्ध के प्रकार में जो प्रकृति, प्रदेश, स्थिति और अनुभाग है, उसमें जो प्रकृतिबन्ध और प्रदेशबन्ध है, वह गौणबन्ध है और उसका कारण योग है तथा जो स्थितिबन्ध और अनुभागबन्ध है, वह मुख्य बन्ध है और उसका कारण कषाय है। इसका अर्थ यह हुआ कि बन्ध होने में कायादि की चञ्चलता महत्त्व की नहीं, परन्तु कषाय परिणाम महत्त्व के हैं। यह बात बहुत न्यायसंगत होने से मुझे बहुत प्रिय थी; बहिनश्री को भी यह रुचती थी। इस प्रकार उस पुस्तक की बहुत-बहुत बातें हम दोनों भाई-बहिन साथ में बैठकर पढ़ते और चर्चा करते। बहिनश्री को भी उन बातों में बहुत रस आता। दूसरी भी कोई-कोई पुस्तक हम साथ में पढ़ते और विचारते, उसमें से बहिनश्री को, पूज्य गुरुदेव के पास जो सुना था, उसकी अच्छी पकड़ आयी थी।

मैं तो अनिर्णयदशा में रहता, विचारों में ही अटक जाता; विचार से सामान्यरूप से जँचे, परन्तु 'ऐसा ही है' — ऐसा निर्णय नहीं होता। बहिनश्री को तो अन्तर में निर्णय ही हो जाता। वे तुरन्त ही निर्णय करे और कहे कि 'मुझे तो यही बात सत्य लगती है।' एक बार उनके साथ कोई

चर्चा हो रही थी, तब मैंने कहा — 'क्रोध आत्मा का स्वभाव नहीं' — यह किस प्रकार निर्णय हो ? उन्होंने तुरन्त ही कहा — 'यदि क्रोध, आत्मा का स्वभाव होवे तो उससे ज्ञान को पुष्टि मिलनी चाहिए; स्वभाव एक-दूसरे को घात नहीं करता परन्तु क्रोध करें, तब ज्ञान कुण्ठित होता है; इसलिए वह आत्मा का स्वभाव नहीं। क्षमा, ज्ञान को रोकती नहीं, इसलिए क्षमा, जीव का स्वभाव है।'

तत्पश्चात् — कौन से साल में यह पता नहीं, कदाचित् बाद में होगा — उन्होंने परमागम के एक अति महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त में अपना दृढ़ प्रतीति भाव वजनपूर्वक प्रसिद्ध किया। मैंने पूछा — 'जीव जब अशुद्धि करे, तब भी उसे सामर्थ्य-अपेक्षा से शुद्धि रहती है, यह शास्त्र सम्मत हकीकत है। जीव, राग-द्वेष करे और उसी समय एक अपेक्षा से-स्वभाव अपेक्षा से शुद्ध ! यह किस प्रकार होगा ?'

उन्होंने दृष्टान्त देकर कहा कि 'शक्कर की डली, कालीजीरी के चूरण में रखी हो तो क्या शक्कर का मीठापन चला जाता है ? ऊपर-ऊपर कड़वाहट आवे परन्तु अन्दर तो मीठास है।' मैंने कहा — 'यह दृष्टान्त जमता नहीं क्योंकि आत्मा तो एक अखण्ड पदार्थ है और शक्कर तो अनन्त परमाणुओं का पिण्ड है। बीच के परमाणुओं को कालीजीरी स्पर्श भी नहीं करती; इसलिए वह तो मीठे रहेंगे, कड़वे कहाँ से होंगे ? परन्तु आत्मा तो एक अखण्ड पदार्थ है। उसमें एक ही समय में शुद्ध और अशुद्ध, ये दो एक साथ एक ही वस्तु में किस प्रकार हो सकते हैं ?'

उन्होंने कहा — 'दृष्टान्त जमता हो या न जमता हो परन्तु तत्त्व तो ऐसा ही है और मुझे ऐसा जमता है।' ऐसा वे कहतीं। इस प्रकार उन्हें बहुत-से आध्यात्मिक तथ्य सहजरूप से अन्दर जम जाते।

इस प्रकार उन्होंने बहुत-से सिद्धान्त थोड़े ही काल में पचा लिये। वे बहुत रसपूर्वक धार्मिक बातें सुनतीं और विचारतीं। पूरे दिन, घर के कामकाज के समय भी, उन्हें वे ही विचार चला करते। पूरे दिन भाई मेरे साथ बैठे रहें और मुझे समझावे तो अच्छा — ऐसा उन्हें लगा रहता। मैं उन्हें ऐसा कहता — 'अपने को स्वतन्त्ररूप से और निष्पक्षरूप से विचार करना चाहिए। जैन में जन्मे, इसलिए यही धर्म सच्चा है — ऐसा मानकर नहीं चलना, निष्पक्षरूप से विचार करना।' निष्पक्षरूप से विचारकर भी उन्हें तो जैनतत्त्वज्ञान ही जमता। वे कहतीं — 'मैं मध्यस्थभाव से—निष्पक्षरूप से विचार करती हूँ तो भी मुझे तो ऐसा ही अर्थात् जिनेन्द्र के कहे अनुसार ही सत्य लगता है।'

मैं उस समय अन्यदर्शन की पुस्तकें भी शक्तिप्रमाण, समयानुसार पढ़ता था। श्रीमद् राजचन्द्रजी ने 'योगवशिष्ठ' पुस्तक की प्रेरणा की है, इसलिए 'योगवशिष्ठ' के भी कितने ही प्रकरण पढ़े थे। गाँधीजी के विचार बहुत पढ़ता; गीता पढ़ी। तदुपरान्त 'रामकृष्ण परमहंस', 'रामतीर्थ' इत्यादि के जीवनचरित्र भी पढ़ने के लिये ले आता। मुझे अन्दर ऐसा रहा करता कि अपने को 'सत्य क्या है' यह न्यायपूर्वक निर्णय करना चाहिए। क्योंकि गाँधीजी जैसे कितने ही बड़े लोग अन्य धर्म में हैं तो अन्य धर्म मिथ्या हो — ऐसा एकदम कैसे कहा जाये? — ऐसे विचारों में मैं अटका करता था। तब बहिनश्री को तो सहजरूप से जैनधर्म में कथित सिद्धान्त ही जम जाते। 'मुझे तो यह न्याय ही जमते हैं' — ऐसा वे कहतीं और पहली बात की (जीव में अशुद्धि के समय भी सामर्थ्य अपेक्षा से शुद्धि किस प्रकार रहती है - इस बात की) चर्चा तो अनेक बार करते।

तत्त्वसम्बन्धी विचार स्पष्ट हो तथा उनका घोलन हो, इस हेतु से हम तात्त्विक विषयों पर निबन्ध-लेख लिखते; उसमें पूज्य बहिनश्री ने निम्न विषयों पर लेख लिखे थे :— (1) जगत् क्या और यह विचित्रता का कारण क्या? (2) सुख का सच्चा स्वरूप और उसका सच्चा उपाय, (3) किस मार्ग पर हूँ? (4) मोक्ष की आवश्यकता क्यों? (5) देह और आत्मा भिन्न—किस न्याय से? (6) कर्म ग्रहण करने का आत्मा का सहज स्वभाव नहीं (7) दया भी शुभराग है; आत्मा का सहज स्वभाव नहीं।

तत्पश्चात् मैं सूरत गया, तब मुझे वह पत्र लिखती। उसमें वे अपने धार्मिक विचार बतलातीं। 'उदय और उदीरणा का स्वरूप क्या है? इन दोनों में क्या अन्तर है? आज मैं आने वाला होऊँगा परन्तु यदि न आ सकूँ तो वह उदय कहलायेगा या उदीरणा? उसमें मोहकर्म का क्या कार्य है? उसमें सातावेदनीयकर्म अथवा असातावेदनीयकर्म क्या करता है?' इत्यादि बाबत मैं विचारूँ और लिखूँ, बहिनश्री भी विचारे और लिखे कि मुझे ऐसा जमता है — इस प्रकार उनके मुख्यरूप से धार्मिक पत्र आते थे।

यद्यपि बहिनश्री आजन्म वैरागी थीं। मुझे आत्मा का कर ही लेना है — ऐसी उग्र भावना उन्हें बालपन से ही वर्तती थी और वे अनेक सद्गुणों की धारक थीं, तथापि उन्हें मोक्षमार्ग के पुरुषार्थ की सच्ची विधि हाथ आयी, वह तो सम्पूर्णत: परमोपकारी गुरुदेव के परम-परम प्रताप से ही। बहिनश्री के हृदय में तारणहार गुरुदेव के प्रति असीम पारावार भक्ति है। गुरुदेव के उपकारों का वर्णन करते हुए वे गद्‌गद् हो जाती हैं। 'मैं तो पामर हूँ, सब गुरुदेव ने ही दिया है, सब गुरुदेव का ही है' — ऐसा उनके आत्मा के प्रदेश-प्रदेश पुकारते हैं।

www.vitragvani.com

ऐसे परमोपकारी गुरुदेव के दर्शन और उनके व्याख्यान श्रवण का प्रथम पावन योग बहिनश्री को वढ़वाण में श्री नाराणभाई की दीक्षा के प्रसङ्ग पर विक्रम संवत् 1985 में प्राप्त हुआ था। उस प्रसङ्ग पर थोड़े दिन पूज्य गुरुदेव के तत्त्वज्ञान भरपूर पुरुषार्थ प्रेरक प्रवचन सुनकर बहिनश्री को अत्यन्त आनन्द हुआ था।

पश्चात्, दूसरी बार बहिनश्री को भावनगर में बहुत दिन तक व्याख्यान श्रवण का योग प्राप्त हुआ था। भाईश्री वजुभाई भावनगर में इंजीनियररूप से नौकरी करते थे, तब बहिनश्री वहाँ गयी थीं और गुरुदेव की भी उस समय भावनगर में स्थिति थी। बहिनश्री बहुत एकाग्रता से गुरुदेव के व्याख्यान सुनतीं और घर आकर लिख लेतीं। वह लिखान दासभाई के (पुरुषोत्तमदास कामदार के) पढ़ने में आया और पढ़कर बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने गुरुदेव को कहा — 'साहेब! वजुभाई की एक बहिन है, वह आपका व्याख्यान घर जाकर सब लिख लेती हैं; इतना सुन्दर लिखती हैं कि न्याय कहीं जरा भी विपरीत होता नहीं या कोई छोटी बात भी छूट नहीं जाती।' फिर एक बार गुरुदेव, वजुभाई के यहाँ आहार लेने को पधारे थे, तब आहार देने के समय बहिनश्री के शान्त, धीर-गम्भीर योग इत्यादि से गुरुदेव को उनकी संस्कारिता और सुपात्रता का ख्याल आ गया; और उपाश्रय में दासभाई को कहा कि मैंने वजुभाई की बहिन को देखा है, बहिन संस्कारी है।

बहिनश्री तत्पश्चात् वींछिया गयी थी, पोरबन्दर गयीं थी, जामनगर गयीं थी—ऐसे अलग-अलग गाँव गयीं थीं। वे गुरुदेव का जो सुनतीं, वह ऊपर-ऊपर से सुनकर निकाल नहीं देतीं परन्तु उस पर बराबर

विचार करतीं। अपने जीवन में कैसे उतारना — इस हेतु से वे सुनतीं। भले मात्र पाँच-सात दिन सुनकर आवें, परन्तु अन्तर में मंथन करके उसका रहस्य ग्रहण कर लेतीं।

बहिनश्री को गुरुदेव के प्रवचन श्रवण के प्रताप से पहले से — समकित होने के पहले वर्ष-दो वर्ष पहले से—अन्दर से जोर आने लगा कि 'मुझे समकित तो लेना ही है, इस भव में समकित न लें तो यह मनुष्यपना किस काम का? समकित होगा ही... समकित लेना ही है।' एक बार मैंने पूछा—'चम्पा! समकित कितना दूर है?' तो कोहनी तक का हाथ बताकर कहा—'इतना'—ऐसे विश्वास से कहा। मुझे मन में लगा कि 'बहिन को समकित क्या चीज है, उसकी पूरी खबर नहीं लगती। समकित होने पर तो सिद्ध भगवान जैसे अतीन्द्रिय आनन्द का आंशिक अनुभव होता है परन्तु बहिन, समकित को सामान्य चीज गिनकर कहती लगती है।' फिर मैं दूसरी बार अवकाश में सूरत से वापस वढ़वाण (या वाँकानेर) आया तब फिर से मैंने पूछा—'चम्पा! अब समकित कितना दूर है?' तो आधा हाथ बताकर वे कहें—'इतना'—इस प्रकार उन्हें अन्दर से ऐसा जोर आता और स्वयं को प्रगति हो रही है — ऐसा भी भासित होता।

विक्रम संवत् 1989 के कार्तिक माह में पूज्य गुरुदेव के दर्शन और वाणी का लाभ लेने के लिये हम भाई-बहिन जामनगर गये थे और वहाँ तीन दिन रहे थे।

वहाँ मैंने गुरुदेव को पूछा कि—'दो जीवों को आठों ही कर्म के प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग, और उदय इत्यादि सब समान होवे तो वे दोनों जीव उस समय समान भाव करेंगे या अलग भाव करेंगे?'

गुरुदेव ने कहा—'अलग भाव करेंगे।'

मैंने कहा—'स्वभाव तो समान है और दोनों को कर्म के प्रकारों में भी सब समान है तो फिर अलग भाव किसलिए करेंगे?'

उसका जवाब देते हुए गुरुदेव ने कहा—'अकारण पारिणामिक द्रव्य है, अर्थात् जिसका कोई कारण नहीं, ऐसे भाव से स्वतन्त्ररूप से परिणमता द्रव्य है; इसलिए उसे अपने भाव स्वाधीनरूप से करने में वस्तुत: कौन रोक सकता है? वह स्वतन्त्ररूप से अपना सब कर सकता है।'

ऊपर की प्रश्नोत्तरी के समय एक नियतिवादी सेठ, जो कि नियति पर जोर देकर पुरुषार्थ उड़ाते थे, वे वहाँ बैठे थे। उपाश्रय से बाहर निकलकर मैंने उन सेठ को कहा—'सेठ! पूज्य महाराज साहेब ने जीव की स्वाधीनता का कैसा सुन्दर स्पष्टीकरण किया!'

सेठ ने कहा— 'मुझे महाराज के साथ यही विवाद है। कानजी महाराज 'पाँच समवाय' मानते नहीं और मैं तो पाँचों समवाय मानता हूँ।' मैंने कहा—'पाँचों समवाय माने तो भी समान वजनरूप से तो कोई मान नहीं सकता। तुम नियति की मुख्यता मानते हो और वे पुरुषार्थ की मुख्यता मानते हैं। इन दोनों बातों में कौन सी बात न्याय संगत है? अपने भाव, स्वयं करे तदनुसार हो यह बात सत्य है या 'नियति' ने बलजोरी से बैठाया हो तदनुसार हो- यह बात सत्य है? तुम्हारी मान्यता में भी पाँच का समान वजन तो रहता नहीं; पाँच में तुम नियति को मुख्य मानते हो और महाराज साहेब पुरुषार्थ को मुख्य मानते हैं।' सेठ के पास कोई उत्तर नहीं था।

पूज्य महाराज साहेब के समक्ष जो चर्चा-वार्ता हो, वह मैं हमारे

निवास जाकर बहिनश्री को कहता। यह स्वाधीनता और पुरुषार्थ की बात भी की थी। यह सुनकर बहिनश्री प्रमुदित हुईं थीं। बहिनश्री का भी, गुरुदेव की तरह, पुरुषार्थ ही जीवन मन्त्र है।

जामनगर तीन दिन रहकर, वहाँ से वापस आकर बहिनश्री अत्यन्त वैराग्य में आ गयी थी; और मुझे कहा भी अवश्य था कि 'समय चला जा रहा है, अब तो समकित के लिये बहुत पुरुषार्थ करना है।' इन वचनों के अनुसार वास्तव में उन्होंने उग्र पुरुषार्थ करके चार महीने में (विक्रम संवत् 1989 के चैत्र कृष्ण दशमी के मङ्गल दिन) निर्विकल्प समकित प्राप्त किया। भव-भ्रमण का भय टूटा, अन्तर में अनन्त काल स्थायी शाश्वत् निश्चिन्तता हो गयी।

हमारे घर में पहले से ही सदाचार का तथा सम्प्रदाय के अनुसार धार्मिक वातावरण तो था ही। पिताजी सरल, शुद्ध नैतिक जीवनवाले और अत्यन्त प्रमाणिक थे तथा अनुकूलता के अनुसार सबेरे व्याख्यान सुनने तथा शाम को प्रतिक्रमण करने जाते थे। मातुश्री तेजस्वी बुद्धिवाली विशेष धार्मिक वृत्तिवाली और वीर्यवाली थी; धार्मिक क्रियाओं में अच्छा रस लेती। माता-पिता को गुलाबचन्दजी महाराज पर बहुत श्रद्धा-भक्ति थी। वे महाराज बहुत कष्ट झेलकर बहुत कठिन आचार पालते थे। पूज्य गुरुदेव भी कहते कि गुलाबचन्दजी बहुत कठोर क्रिया पालते हैं। उनके असर से हमारे कुटुम्ब में धार्मिक संस्कार अच्छे थे। वजुभाई तो शाम को स्कूल से आकर, स्कूल की पुस्तकें फेंककर तुरन्त उपाश्रय में दौड़ जाते। वे उपाश्रय में बहुत समय व्यतीत करते; सामायिक करें, कोई साधु-महाराज हों उनके पास जाकर नव तत्त्व, गति-आगति के बोल इत्यादि

थोकडा और सूत्र की गाथायें इत्यादि सीखते। शाम को प्रतिक्रमण करते और कभी–साधु की तरह आचार पालने का और भिक्षावृत्ति से आहार करने का सम्प्रदाय में व्रत करते हैं वैसा–दसवाँ व्रत करते। अखिल काठियावाड़ स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस की परीक्षा देकर उसमें वे दूसरे नम्बर से उत्तीर्ण हुए थे। पूरा 'दसवैकालिक सूत्र' छोटी वय में मुख पाठ किया था।

ऐसे सदाचारी और धर्म प्रेमी कुटुम्ब में जन्मे हुए बहिनश्री के सदाचार और धर्म परायणता तो कोई अलग छाप पड़े ऐसी प्रथम से ही थी। बाल्यावस्था से ही उनके देह में उपशमरस के ढाले ढल गये थे। इस मनुष्यभव में शीघ्र मोक्ष के लिये पुरुषार्थ प्रगट करके भव–भ्रमण के टालने की उन्हें तीव्र चटपटी रहती थी। तदुपरान्त अनेक सद्गुणों की वे निकेतन थीं।

वे पूज्य गुरुदेव ने सिखाये तत्त्वज्ञानानुसार शास्त्र वांचन करतीं, तदनुसार विचार मंथन करतीं, निर्णय की दृढ़ता के लिये उद्यम करतीं तथा स्व–पर भेदविज्ञान का तथा ध्यान का अभ्यास करतीं।

वे बारम्बार मौन धारण करतीं, कुटुम्बीजनों के साथ भी बहुत ही कम बोलतीं। बहुधा अपने आन्तरिक आत्मकार्य में ही लीन रहतीं।

वे स्वभाव से ही बहुत एकान्तप्रिय थीं, एकान्त में बैठकर वांचन, मनन, ध्यान करना उन्हें अति प्रिय था (सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के बाद संवत् 1990 में वे सूरत आयीं थीं, तब भी वे दूसरी मंजिल के कमरे में पूरे दिन एकान्त में रहकर ज्ञान–ध्यान किया करतीं। वहाँ के उनके चार माह के निवास दौरान वे कदाचित् ही एक बार भी घर के बाहर निकली हों।

पूरे दिन एकान्त में अध्यात्मरतरूप से अपने अन्दर का काम करते हुए थकती ही नहीं।)

तदुपरान्त वे उपवास करें, रूखा खाये, भोजन में अल्प द्रव्य ही प्रयोग करें, कितनी ही बार बहुत दिनों तक मात्र छाछ-रोटी के अलावा कुछ न लें—ऐसी-ऐसी कायक्लेश की क्रियाएँ भी करें और कहें कि इसमें क्या बड़ी बात है ? नरक, तिर्यञ्च गति में जीव ने पराधीनरूप से कितना सहन किया है ?

घर का कामकाज करते हुए भी—रसोई बनाते, कपड़े धोते या पानी भरते हुए भी —उन्हें सम्यक्त्व प्राप्ति की अथवा निज ज्ञायक भगवान के दर्शन की गहरी खटक रहा ही करती। संसार से वे बहुत उदासीन रहती थीं।

'बहु पुण्य पुंज प्रसंग से' यह काव्य, बहिनश्री बारम्बार वैराग्यभाव से गातीं और उसमें से 'मैं कौन हूँ, आया कहाँ से और मेरा रूप क्या ?' इत्यादि भाग पर बहुत गहराई से चिन्तन करती। 'दूर कां प्रभु दोड़ तुं, मारे रमत रमवी नथी' — यह प्रभु मिलन की स्फुरणा का गीत अथवा 'कंचनवरणो नाह रे मुने कोई मिलावो'— यह निज ज्ञायक भगवान के विरह दु:ख का गीत अति वेदनपूर्णभाव से गाते मैंने बहिनश्री को अनेक बार सुना है। 'संग त्यागी, अंग त्यागी, वचन-तरंग त्यागी, मन त्यागी, बुद्धि त्यागी, आपा शुद्ध कीनों है।' यह पद तथा 'कायानी विसारी माया, स्वरूपे समाया एवा, निर्ग्रन्थनो पन्थ भव-अन्तनो उपाय छे' यह पद, स्वरूप में समा जाने की भावना में सराबोर होकर वे अनेक बार गाती थी। 'मोही लागी लगन गुरु चरणन की' — यह भक्ति गीत गुरुदेव के सत्सङ्ग की उग्र भावना से भींग कर वे बहुत बार भक्ति विभोररूप से गातीं।

पूज्य बहिनश्री को बारम्बार ऐसे भाव आते कि कल गया, आज गया, ऐसे करते-करते पन्द्रह-सत्रह वर्ष चले गये; जिन्दगी जाने में क्या देर लगेगी ? इसलिए प्रमाद छोड़कर, तत्त्वविचारपूर्वक पक्का निर्णय करके, शीघ्रता से आत्मप्राप्ति कर लेना योग्य है, प्रमाद करना योग्य नहीं है।

तथा उन्हें ऐसा जोर भी आता था कि 'इस भव में ही पक्का निर्णय करके अवश्य समकित लेना है'....... 'जरूर समकित होगा ही' ऐसा उन्हें अन्दर से विश्वास आता था।

— इस प्रकार विविध प्रकार के उद्यम परिणाम से परिणमन कर, कैसे भी करके सम्यक् पुरुषार्थ को पहुँचकर, पूज्य बहिनश्री ने अन्तत: विक्रम संवत् 1989 के चैत्र कृष्ण दशमी के पवित्र दिन वाँकानेर में निज ज्ञायक भगवान के मङ्गल दर्शन किये, अपूर्व सहजानन्द की पवित्र अनुभूति की, सिद्ध भगवान के वचनातीत सुख का मधुर स्वाद चखा और मोक्ष महल के मङ्गलमय द्वार खुल गये।

समकित होने के पश्चात् थोड़े दिन में पूज्य बहिनश्री को पूज्य पिताश्री के पास वढ़वाण जाना हुआ। चैत्र मास में वहाँ से पिताश्री का एक पारिवारिक प्रसङ्ग सम्बन्धी पोस्टकार्ड मुझे सूरत मिला। उसमें पीछे के भाग में पूज्य बहिनश्री ने निम्न अनुसार लिखा था —

'संसार दुःखमय है; इसलिए आत्मा को पुरुषार्थ करके उसमें से तार लेने की आवश्यकता है, प्रमाद करना योग्य नहीं। जैनदर्शन सत्य है — ऐसा मैंने तो जाना है; तुम भी प्रमाद छोड़कर, वैराग्य बढ़ाकर विचारोगे तो ऐसा ही ज्ञात होगा। प्रमाद कर्तव्य नहीं है।'

हम तो बहुत तौल-तौलकर शब्द बोलते; इसलिए उन्होंने जो ऐसा लिखा कि 'जैनदर्शन सत्य है—ऐसा मैंने तो जाना है' उसमें से मुझे ऐसा लगा कि 'क्या बहिन को सम्यग्दर्शन हुआ होगा? नहीं तो जैनदर्शन सत्य है—ऐसा मैंने तो जाना है, ऐसा, इतने जोरपूर्वक वे कैसे लिख सकती हैं?' मैंने फिर पत्र लिखा—'बहिन चम्पा! तुम लिखती हो कि जैनदर्शन सत्य है—ऐसा मैंने तो जाना है-तो क्या तुम्हें समकित हुआ है? क्योंकि समकित के बिना इतने जोरपूर्वक ऐसे शब्द नहीं निकलते।' उनका पत्र आया कि — 'इस आत्मा को परिभ्रमण का किनारा आ गया है।' उस पत्र में दूसरा विशेष क्या लिखा था, वह अभी ख्याल में नहीं, क्योंकि वह पत्र खो गया है। 'संसार दु:खमय है.... जैनदर्शन सत्य है.... प्रमाद कर्तव्य नहीं' — ऐसा जिसमें लिखा था, वह पोस्टकार्ड तो अभी पड़ा है। उस दूसरे पत्र का एक वाक्य — 'इस आत्मा को परिभ्रमण का किनारा आ गया है।' इतना मुझे याद रह गया है। आगे-पीछे की लिखावट याद नहीं। बहिनश्री ने 'समकित हुआ है' ऐसा नहीं लिखा; स्वयं नम्र है न! इसलिए नम्रताभाव से भरपूर मात्र इतने शब्द निकले कि 'इस आत्मा को परिभ्रमण का किनारा आ गया है।'

पश्चात् मैं सूरत से अवकाश में वढ़वाण जब आया, तब मैंने पूज्य बहिनश्री को पूछा कि समकित होने पर क्या होता है? तो कहा — 'शरीर तो आत्मा से एकदम भिन्न लगता है, पर का और विभाव का कर्ताभाव छूट जाता है, सिद्ध भगवान के अतीन्द्रिय सुख की वानगी प्रगट होती है और अन्तर में आनन्द का सागर उछलता है।' ऐसा कहने जितना कहा।

सम्यग्दर्शन प्राप्ति की आनन्दकारी बात परमोपकारी पूज्य गुरुदेव को विदित कराने के लिये बहिनश्री और मैं थोड़े दिन पश्चात् राजकोट

गये; साथ में सुशीला भी थी। बहिनश्री का विचार यह बात गुरुदेव को एकान्त में कहने का था, उस समय एकान्त नहीं मिला, इसलिए हम वापस आये। पश्चात् मेरे अवकाश पूर्ण हो गये, इसलिए मैं तो सूरत गया।

पूज्य बहिनश्री वाँकानेर में थीं। उस समय दासभाई (पुरुषोत्तमदास कामदार) वाँकानेर आये। 'यहाँ से मैं गुरुदेव के दर्शन करने राजकोट जाता हूँ' ऐसा उन्होंने कहा। बहिनश्री ने वह अवसर ले लिया और कहा कि 'मुझे भी दर्शन करने आना है।' ऐसा कहकर बहिनश्री, दासभाई के साथ राजकोट गयीं। भाभी भी साथ में गयीं। बहिनश्री का विचार गुरुदेव को एकान्त में कहने का था, इसलिए उन्होंने सदर के उपाश्रय में अन्दर जाकर पहले दासभाई को कहा — 'तुम जरा दूर खड़े रहो।' दासभाई, दूर से देख सके, उस प्रकार दूर खड़े रह गये। बहिनश्री, गुरुदेव के पास गयीं और भाव से दर्शन करके विनयपूर्वक नम्रता से बोलीं — 'साहेब ! आपके प्रताप से मुझे आत्म-साक्षात्कार हुआ है।' गुरुदेव ने कहा — 'दासभाई ! यहाँ नजदीक आओ,...' क्योंकि बहिनों के साथ गुरुदेव अकेले बात नहीं करते न ! पश्चात् गुरुदेव ने जो पूछना था, वह बहिनश्री को पूछा — 'बहिन ! तुम्हें आत्मसाक्षात्कार होने पर क्या हुआ ?' बहिनश्री ने कहा — 'आत्मा अकर्ता हो गया; कर्तृत्व छूट गया और ज्ञाता हो गया'—इत्यादि कहा। मात्र स्वल्प प्रश्नों के उत्तरों से ही पूरा सन्तोष हो जाने से विशेष कुछ पूछने के बदले गुरुदेव स्थिर हो गये, शान्त-शान्त हो गये और थोड़े क्षण बाद गम्भीर होकर स्वगत बोले — 'ओहो ! आत्मा कहाँ स्त्री या पुरुष है ! आत्मा कहाँ बालक या वृद्ध है !!'

(बहिनश्री को उस समय मात्र उन्नीसवाँ वर्ष चल रहा था।)

स्वयं को परिभ्रमण का किनारा आ जाने की आनन्दकारी बात, उपरोक्तानुसार परमोपकारी गुरुदेव के समक्ष प्रमोदपूर्वक प्रस्तुत करके, पूज्य बहिनश्री वापस वाँकानेर (बड़े भाई वजुभाई के यहाँ पधारे)।

अब से (संवत् 1989 से) हर वर्ष पूज्य गुरुदेव जिस गाँव में चातुर्मास रहे हों, उस गाँव में आपश्री के कल्याणकारी व्याख्यानों का लाभ लेने के लिये पूज्य बहिनश्री ने चार महीने रहना शुरु किया। बहिन शान्ताबेन तो तद्नुसार रहती ही थीं। पूज्य गुरुदेव ने उनसे कहा — 'यह बहिन (चम्पाबेन) बहुत पात्र है, गम्भीर है, विचारक है, गहरी है, और वैरागी है, स्थिर है; तुम्हें लाभ हो ऐसी है, तुम्हें लाभ लेने जैसा है।' — इस प्रकार पूज्य गुरुदेव ने प्रेरणा की। इस तरह पूज्य बहिनश्री (चम्पाबेन) और बहिन शान्ताबेन का चातुर्मास में साथ रहने का योग शुरु हुआ।

पूज्य गुरुदेव ने विक्रम संवत् 1991 में सोनगढ़ में (परिवर्तन) किया। तत्पश्चात् संवत् 1994 में ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी के दिन 'स्वाध्याय मन्दिर' के उद्घाटन समय हम दोनों भाईयों के लिये एक यादगार प्रसङ्ग बना। पूज्य गुरुदेव उस दिन प्रवचन में दृढ़ता से बोले कि— 'कुन्दकुन्दाचार्यदेव, महाविदेह में गये थे और समवसरण में श्री सीमन्धर भगवान की वाणी सुनने के लिये वहाँ आठ दिन रहे थे - यह सब नजरों से देखी हुई बात है; कोई माने या न माने परन्तु यह बात सत्य है।' इस प्रकार का प्राय: बोले। वजुभाई और मैं विचार करने लगे कि—गुरुदेव आज प्रवचन में 'यह बात ऐसी ही है'—इत्यादि इतना अधिक जोरपूर्वक क्या बोले? भाई कहे, हम गुरुदेव से पूछने चलें। हमने बहिनश्री को कहा कि — 'गुरुदेव आज प्रवचन में ऐसा कुछ जो बोले, उस विषय में हमें उनसे पूछने जाना है।' बहिनश्री ने कहा — 'जाओ।' बहिनश्री के मन में ऐसा

था कि भाई कुछ जानेंगे तो इन्हें लाभ का कारण होगा; मुझे तो कहना ही नहीं, महाराज साहेब को कहना होगा तो कहेंगे; इसलिए कहा — 'भले जाओ।'

हम पूज्य गुरुदेव के पास गये और उनसे पूछा — ''साहेब! आज प्रवचन में आपने 'यह नजरों से देखी हुई बात है' इत्यादि क्या कहा?'' पहले तो गुरुदेव ने, 'ऐसा अङ्गत-व्यक्तिगत कुछ पूछने का नहीं होता' ऐसा जरा जोर से कहा; वह सुनकर हम मौन हो गये और गुरुदेव के साथ स्वाध्याय मन्दिर के बरामदे में चक्कर लगाने लगे। फिर गुरुदेव पाट पर बैठे, हम उनके पास नीचे बैठ गये। बैठने के बाद पूज्य गुरुदेव ने थोड़ी संक्षिप्त-संक्षिप्त बातें कीं। गुरुदेव, गम्भीर होकर बोले — 'बहिन को (बहिनश्री चम्पाबेन को) संवत् 1993 में बैशाख कृष्ण अष्टमी के दिन, अनुभव में से बाहर आने पर पूर्वभव का जातिस्मरण हुआ है। कुन्दकुन्दाचार्यदेव महाविदेह में सीमन्धर भगवान के समवसरण में पधारे थे, तब बहिन और हम वहाँ थे। मैं वहाँ राजकुमार था - ऐसा बहिन को स्मरण में आया है। मुझे अन्दर से आता था कि 'मैं राजकुमार हूँ, मखमल के और जरी के वस्त्र पहिने हैं' — इत्यादि। परन्तु बहिन ने कहा, इसलिए बहुत स्पष्ट हुआ, पक्का हुआ। बहिन सेठ के पुत्र थे - इत्यादि संक्षिप्त-संक्षिप्त थोड़ी बातें कीं। परन्तु साथ में ऐसा भी कहा कि यह बात किसी को कहने की नहीं है..... किसी को नहीं। वजुभाई को उस समय बहिनश्री के प्रति इतना अधिक भाव आ गया कि उन्होंने हर्षाश्रु के साथ गद्गद् स्वर में कहा — 'साहेब! बहिनश्री की वन्दना करने की तो छूट दो।' गुरुदेव ने कहा — 'नहीं; उन्हें भी नहीं, किसी को नहीं क्योंकि लोगों में बाहर पता पड़ जायेगा, शंका होगी कि भाई, वन्दना करते हैं, इसलिए कुछ लगता है!'

पश्चात् बहिनश्री के पास जाने पर उन्होंने हमसे पूछा — 'क्या तुम गुरुदेव के पास हो आये?' हमने हँसते-हँसते कहा — गुरुदेव ने तुम्हें भी कहने से इनकार किया है। तो भी हमने तो, बहिनश्री ने ही स्वयं गुरुदेव को कही हुई बात उन्हें भी कहने की गुरुदेव ने 'मना' कही, इससे हुए आश्चर्य के साथ, उन्हें सब कह दिया.....

अब, तत्पश्चात का तो सब परिचित है। पहले का जितना याद आया, उतना कहा। वरना प्रसङ्ग तो बहुत बने हों, परन्तु स्मरणशक्ति कम और उन प्रसङ्गों को बहुत वर्ष बीत गये, इसलिए बहुत प्रसङ्ग याद नहीं होते।

(सभा में से प्रश्न : 'इस आत्मा को परिभ्रमण का किनारा आ गया है' — इस लिखावटवाले पत्र का आपने क्या उत्तर लिखा, वह योग्य लगे तो कहने की विनती।)

परिभ्रमण के किनारेवाला पत्र मिलने के बाद मैंने उन्हें इस प्रकार लिखा था—

'बहिन चम्पा!

पत्र पढ़कर मैं तो आश्चर्यचकित ही हो गया हूँ। कोई न कोई जगा ही करता है—ऐसा जानकर हर्ष होता है। पंचम काल के अन्त तक शासन जीवन्त है। कहते हैं कि इस काल में सन्त मिलना दुर्लभ है। मैं तो सन्त को मिलने-ढूँढ़ने-नहीं गया तो सन्त मेरे यहाँ पधारे हों—ऐसा लगता है! इतनी दुर्लभताएँ मिलीं, तथापि यदि कुछ न किया तो किसका दोष?

मेरी शङ्काएँ क्या-क्या हैं, मैं कहाँ अटकता हूँ, मेरा स्वभाव, मेरी निर्बलताएँ - सब तुम्हारे ज्ञान से बाहर नहीं हैं। 'निशानी कहाँ बताऊँ रे,

www.vitragvani.com

तेरो अगम अगोचररूप' ऐसे जवाब की अपेक्षा बहुत अधिक आशा मैं रखता हूँ।'

— इस प्रकार अपूर्व सानन्दाश्चर्य की गहरी भावना व्यक्त करते शब्द पत्र में लिख गये थे।

वास्तव में इस काल में परमार्थ को अनुकूल सर्व योग अपने को सम्प्राप्त हुए हैं-यह अपना परम-परम सद्भाग्य है। अपने को बाह्य योग मिलने में तो कुछ न्यूनता नहीं रही; अब पुरुषार्थ तो अपने को ही करना रहता है। स्वानुभूतियुगप्रवर्तक पूज्य गुरुदेव का, चेतन को जगानेवाला स्वानुभूति भरा मधुर रणकार वर्षों तक अपने को सुनने को मिला, तथा आज भी प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री के स्वानुभूतिरस सराबोर सहज वचनामृतों का मधुर श्रवण मिल रहा है, उसके समान परम अहो भाग्य क्या? अब तो जो कुछ कमी है, वह अपने पुरुषार्थ की ही है। ज्ञानियों के प्रताप से अपने को सच्चा पुरुषार्थ (समझ) आ जाये-यही अन्तर की भावना है।

स्वानुभूतिपरिणत परमोपकारी पूज्य गुरुदेव के तथा स्वानुभूतिपरिणत परमोपकारी पूज्य बहिनश्री के पवित्र चरण-कमल सदा ही हृदय में संस्थापित रहो।

✧✧✧

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

आत्मार्थियों को उपकारी, ऐसा पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का

जातिस्मरणज्ञान

अध्यात्मयुगप्रवर्तक परमपूज्य सद्गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सद्ज्ञान-वैराग्यबोधक अध्यात्मोपदेश का अनुपम लाभ प्राप्त करके, जिन्होंने अठारह वर्ष की लघुवय में निजात्मानुभूतियुक्त सम्यग्दर्शन प्राप्त किया है और पूज्य गुरुदेवश्री की उपकार छाया में जिन्हें आत्मसाधना की विशुद्धि वृद्धिंगत हो रही है, ऐसी प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन को विक्रम संवत् 1993, बैशाख कृष्ण अष्टमी के दिन स्वरूपध्यान में बैठी थीं, तब पूर्व भव का स्पष्ट जातिस्मरणज्ञान शुरु हुआ है, जो अनुक्रम से वृद्धिंगत होते हुए अनेक भव और लोकोत्तर विशेषताओं के सत्य तथा अति स्पष्ट निर्मल ज्ञान से समृद्ध होता गया है।

पूज्य गुरुदेवश्री को इसका पता होने पर, उन्हें विशेष जानने की भावना के कारण, पूज्य बहिनश्री अनुक्रम से जैसे-जैसे जो यथातथ स्पष्ट स्मरण में आता गया, वह लिखकर भेजतीं और उसकी प्रतिलिपि अपने पास रखतीं। उन प्रतिलिपियों में से यहाँ यह लेखन आलेखित किया गया है। इसमें जो तिथियाँ अंकित हैं, वे कोई तो स्मरण आने के दिन की है और कोई तो लेखन करने के दिन की अथवा पूज्य गुरुदेव को पढ़ने के लिये भेजे गये दिन की है।

पूज्य बहिनश्री का यह दिव्यज्ञान, आत्मार्थी जीवों को भूत तथा भावि भवों के अस्तित्व की स्पष्ट प्रतीति कराता हुआ, धार्मिक श्रद्धा की दृढ़ता के विशेष लाभ का सातिशय निमित्त बने - यही भावना।

✧✧✧

पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का स्वानुभूतियुक्त जातिस्मरणज्ञान

(पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के हस्ताक्षर में)

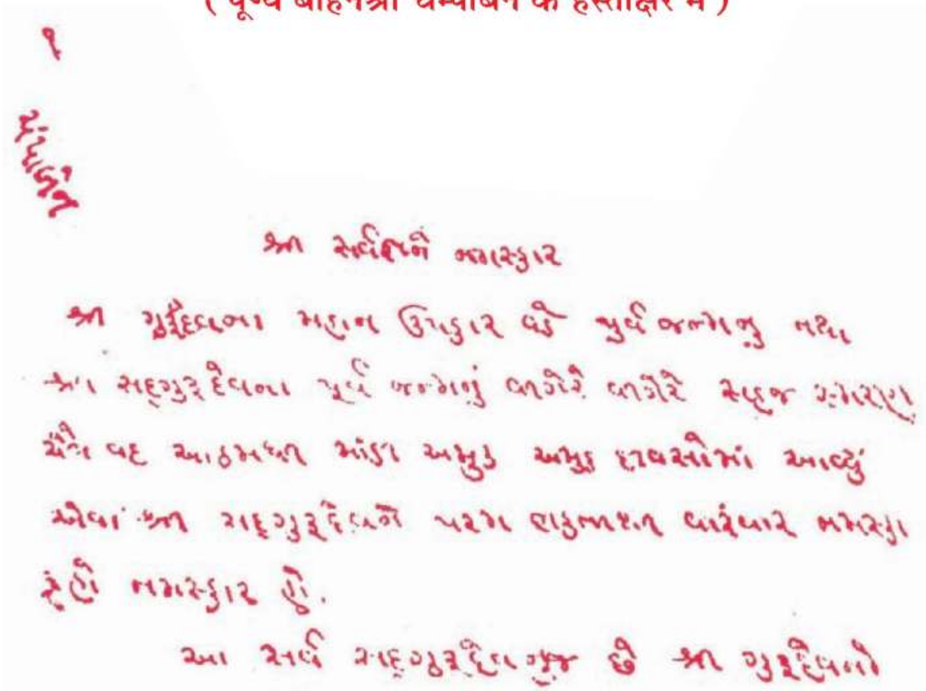
૧

[illegible]

શ્રી [illegible] નમસ્કાર

શ્રી ગુરુદેવના મહાન ઉપકાર વડે [illegible]
શ્રી સદ્ગુરુદેવના [illegible] વગેરે વગેરે [illegible]
[illegible] વદ [illegible] અમુક અમુક [illegible] આવ્યું
એવા શ્રી સદ્ગુરુદેવને પરમ [illegible]
[illegible] નમસ્કાર હો.

આ સર્વ સદ્ગુરુદેવનો [illegible] છે શ્રી ગુરુદેવનો
પરમ પ્રતાપ છે.

(આ [illegible])

[illegible] શ્રી સદ્ગુરુદેવને નમઃ (૨૨) ૧૯૯૪ માગશર સુદ સાતમે શુક્રવાર
તેમના પરમ ઉપકારને નમસ્કાર શ્રી સોનગઢ

૧

પૂર્વ જન્મનું આવેલું સ્મરણ

ફાગણ વદ આઠમને સોમવાર ૧૯૯૩ સાલમાં દશ વાગતા

આત્મ સ્વરૂપના વિચારતા શ્રી કુંદકુંદાચાર્ય ભગવાન મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ગયા છે એમ સ્ફુરણ ઘણા વખત વિચારે ભગવાનના ભાવ આવી તે ક્ષેત્રમાં આ આત્મા ગુરુદેવ પાસે ત્યાં બેઠી છે આ સમવસરણ હતું ત્યાં ભગવાન બિરાજતા હતા આમાં શ્રી કુંદકુંદાચાર્ય ઉભા છે. આ ગુરુદેવના વાણીયાના દીકરા ત્યાં ભગવાન પાસે હતા એમ સ્મરણરૂપ ચિંતા સ્ફુર્ણ આવ્યું શ્રી કુંદકુંદાચાર્ય નગ્ન વસ્ત્ર રહિત દિગંબરપણે હતા મોટા ચક્રવર્તી જેવી તેમના દેહની દેખાવ હતો એમના કુંવાડે કુંવાડે દેદીપ્યમાન દશા દેખાતા હતા એમના દેહની કદ ઉંચાઈ હતી એમના શરીરનો વર્ણ બહુ ધોળો નહિ બહુ રાતો નહિ એવો વાનનો હતો પાંચસો કે કમંડલ એમની પાસે નહોતા શરીર ચાલતું નહોતું પણ જાડું જાડું ભરાવદાર હતું

શ્રી તીર્થંકર સીમંધર પ્રભુના શરીરમાં હાડકાંમાં જેમ સમુદ્ર ઘણો રત્ન હોય એવા રાતે ફાંકડુ સમુદ્ર જેવું પરિણમન થઈ રહ્યું હતું શ્રી સીમંધર પ્રભુના ગળામાંથી અવાજ છૂટતો હતો તે અવાજમાં ઓંકારના હતા તે ઓંકારનામાં સમજી શકાય એવા જાતના ફાંકડુ આકારો પડતા હતા તેમના વાણી અને શરીર બધું જાણે આત્માથી જુદું જુદું તરતું તરતું જણાતું હતું

આ શ્રી સીમંધર પ્રભુ ને આ શ્રી કુંદકુંદાચાર્ય એમ ફોટા પરિચયનું સહજ સ્મરણરૂપ વેદન પ્રગટ છે.

પ્રભુ આગળ ત્યાં બહાર બેસવાનું હતું ત્યાં ઘણાના દિગમ્બર પડી રહ્યા હોય એમ સ્મરણ આવે છે. શ્રી સીમંધર પ્રભુનો દેહ જાણે ઘણો મોટો હોય એમ યાદ આવે છે. પણ કેટલો મોટો એવું માપ આવતું નથી.

www.vitragvani.com

पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का स्वानुभूतियुक्त जातिस्मरणज्ञान

(उनकी नोटबुक में से)

✧✧✧

श्री सर्वज्ञ को नमस्कार

श्री गुरुदेव के महान उपकार द्वारा, पूर्व जन्म का तथा श्री सद्गुरुदेव के पूर्व जन्म का इत्यादि-इत्यादि सहज स्मरण बैशाख कृष्ण अष्टमी से लेकर अमुक-अमुक दिनों में आया। ऐसे श्री सद्गुरुदेव को परमभक्ति से बारम्बार नमस्कार हो, नमस्कार हो।

यह सर्व सद्गुरुदेव का ही है। श्री गुरुदेव का परम प्रताप है।

(इस विषय में अन्तरङ्ग रहने की भावना है)

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

(गुरुदेव को लिखकर भेजा)

1994 मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, शुक्रवार, श्री सोनगढ़

श्री सद्गुरुदेव को तथा उनके परम उपकार को नमस्कार

पूर्वजन्म का आया हुआ स्मरण

बैशाख कृष्ण अष्टमी, सोमवार, 1993, सबेरे के दस लगभग।

आत्मस्थिरता बढ़ने पर, श्री कुन्दकुन्दाचार्य यहाँ से महाविदेहक्षेत्र में गये हैं — ऐसा सहज ज्ञान की पर्यायरूप परिणमन होने पर, उनके साथ उस क्षेत्र में यह आत्मा पुरुष देहरूप से वहाँ बैठा है; श्री सीमन्धर प्रभु वहाँ विराज रहे थे; सामने श्री कुन्दकुन्दाचार्य खड़े हैं; श्री श्रुतकेवली इत्यादि के झुण्ड वहाँ विराज रहे थे – ऐसा स्मरणरूप वेदन सहज आया।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य सम्पूर्ण वस्त्ररहित दिगम्बररूप से थे, बड़े योगीश्वर जैसा उनकी देह का दिखाव था। उनके रोम-रोम में देहातीत दशा दिखती थी। उनके देह का कद ऊँचा था। उनके शरीर का वर्ण बहुत श्वेत नहीं, बहुत लाल नहीं, ऐसे प्रकार का था। पीछी या कमण्डल उनके पास नहीं था। शरीर पतला नहीं था परन्तु ठीक-ठीक भरावदार था।

श्री तीर्थंकर सीमन्धर प्रभु के शरीर में, हीरे में जैसे चमक हो रही हो उस प्रकार, कुछ चमक जैसा परिणमन हो रहा था। श्री सीमन्धर प्रभु के गले में से आवाज छूटती थी, उस आवाज में एकाकारता थी। उस

एकाकारता में समझा जा सके इस प्रकार के कुछ आकार पड़ते थे। उनकी वाणी और शरीर सब मानो आत्मा से पृथक्-पृथक्—तिरता-तिरता ज्ञात होता था।

यह श्री सीमन्धर प्रभु और यह श्री कुन्दकुन्दाचार्य - ऐसा ज्ञान पर्याय का सहज स्मरणरूप वेदन परिणमता है।

प्रभु के समक्ष वहाँ अद्धर बैठने का था। वहाँ वाद्ययन्त्रों की धमकार पड़ रही हो - ऐसा स्मरण आता है। श्री सीमन्धर प्रभु की देह मानो बहुत बड़ी हो - ऐसा याद आता है, परन्तु कितनी बड़ी, उसका माप नहीं आता।

मैं पुरुषरूप से वहाँ हूँ, इस भव पहले का वह पुरुष का सीधा भव है - ऐसा ज्ञान में स्मरणरूप वेदन परिणमता है। वहाँ की देहमुद्रा में वैराग्य दिखता है, स्थिरता दिखती है, ब्रह्मचर्य दिखता है। सादे खादी जैसे कपड़े पहने थे। बाल ब्रह्मचारी था, विवाह नहीं किया था, स्त्री इत्यादि कुछ नहीं था - ऐसा स्मरणरूप वेदन सहज आता है। मैं बहुत-बहुत बार प्रभु के पास उपदेश सुनने आता था। वहाँ मैंने निर्विकल्प समकित पाया था, स्वसन्मुख लक्ष्य को झुकाया करता था - ऐसा याद आता है। शरीर का वर्ण, पीतवर्ण जैसा थोड़ा उजला था।

मैं छोटा बालक था, तब मेरी माता की गोद में सो रहा था, हाथ-पैर उछालता था, वह याद आता है। मेरे माता-पिता थे, घर में और परिवारजन थे। कौन-से परिवारजन थे, यह याद नहीं आता। मेरी माता ने पीले रंग जैसी साड़ी पहनी थी, यह याद आता है। हमारा मकान चमकीले पत्थर के ऊँचे प्रकार का और विशाल हो - ऐसा दिखता है।

श्री तीर्थंकर विराजते थे, उस समवसरण के नीचे प्राय: इतने में गाँव के बड़े-बड़े रास्ते निकलते थे। आजू-बाजू इतने में मकान थे। वे मकान कैसे थे, यह स्पष्ट स्मरण नहीं। उनमें से छोटा रास्ता निकलकर घूमकर कहीं जाता है, वहाँ हमारा घर था।

उससे पहले के भव में देवलोक में देव था। उस देवलोक में बड़ा द्वार, द्वार जैसा याद आता है। तीसरे देवलोक का मैं देव हूँ — ऐसा ज्ञानपर्याय सहज परिणमनकर स्मरण आता है।

वहाँ से च्युत होकर महाविदेहक्षेत्र में जन्म हुआ है — ऐसा स्मरण आता है। उस महाविदेहक्षेत्र में मैं बहुत समय से था — ऐसा स्मरण आता है। देवलोक का इससे विशेष स्मरण नहीं आता।

भरत, ऐरावत, पर्वत आदि लोक का स्वरूप मैंने श्री तीर्थंकर आदि से सुना है — ऐसा स्मरण आता है। पुरुषदेहपने सुना है, इस प्रकार का सुना है, परन्तु वह क्या स्वरूप सुना है। यह स्मरण नहीं आता।

यहाँ विराजते हैं, वे परम कृपालु गुरुदेव (कहान गुरु महाराज) वहाँ महाविदेहक्षेत्र में राजकुमारपने थे। (एक बार वे राजकुमार साफा बाँधे हुए आते हैं और एक बार खुले सिर आते हैं) उस क्षेत्र में एक पर्वत जैसा था, नीचे थोड़ी सीढ़ियाँ थीं, उन सीढ़ियों पर चढ़ते राजकुमार को मैंने देखा। उस समय जरी के वस्त्र पहने हुए थे और सिर पर हलके बादामी रंग जैसा साफा बाँधा हुआ था। उस समय उनका शरीर राजा के योग्य पुण्यवन्त था। उनके पैर के नीचे एड़ी का भाग विशेष पुण्यवन्त दिखता था - ऐसा स्मरण आता है। वे कुमार रूप से, गुण से शोभित थे।

उन राजकुमार को वापस दूसरी बार तीर्थंकर प्रभु के समीप में

www.vitragvani.com

देखा, तब सिर पर कुछ बाँधा हुआ नहीं था, खुला था; जरी के वस्त्र तब पहने थे। उस समय शरीर का बँधाव ठीक था, उसकी अपेक्षा सीढ़ियाँ चढ़ते देखा, तब शरीर पतला था।

वे राजकुमार बारम्बार तीर्थंकर का उपदेश सुनने आते थे। राजकुमार को अध्यात्म तत्त्व का बहुत रंग था। यह राजकुमार भविष्य में अर्थात् कालक्रम में तीर्थंकर होनेवाले हैं – ऐसी वाणी वहाँ महाविदेहक्षेत्र में पुरुषदेहरूप से मैंने श्री तीर्थंकर और श्री श्रुतकेवली दोनों के पास सुनी है – ऐसा सहज स्मरणरूप वेदन की ज्ञानपर्याय परिणमति है।

यह सीमन्धर प्रभु हैं, वैसे यह राजकुमार होनेवाले हैं – ऐसा वहाँ महाविदेहक्षेत्र में मुझे लगता था। इस कारण, और राजकुमार को अध्यात्म तत्त्व का हृदयगत रंग, इसलिए मुझे वहाँ राजकुमार के प्रति बहुत महिमा थी। उनके साथ मैं प्रश्नचर्चा करता था – ऐसा सहज स्मरण आता है। यह राजकुमार भविष्य में कालक्रम से तीर्थंकर होनेवाले हैं – ऐसी श्री तीर्थंकर तथा श्रुतकेवली की वाणी, लोक–समुदाय में फैल रही थी। उसके कारण वहाँ के लोक समुदाय में भी चारों ओर राजकुमार... राजकुमार... ऐसी महिमा हो रही थी।

उन राजकुमार का सीधा भव अभी पूज्य सद्गुरु महाराज साहब के रूप का ही (अभी विराजते जगत उद्धारक श्री कहान गुरुदेव के रूप का ही) है – ऐसा सहज स्मरण में आता है। राजकुमार भविष्य में तीर्थंकर होंगे – ऐसी श्री प्रभु आदि की निकली हुई वाणी का भाव मुझे भलीभाँति स्मरण आता है।

मैं महाविदेहक्षेत्र में सेठ का पुत्र था। मैं जहाँ जाता, वहाँ खुले सिर

जाता, सिर पर सादे बाल थे, मुद्रा गोल थी, आँखें बड़ी थीं, शरीर का बँधाव अच्छा था—मध्यस्थ था।

यहाँ का एक आत्मा (मेरे साथ शान्ताबेन के रूप में है वह) वहाँ महाविदेहक्षेत्र में पुरुषदेहरूप से था, वहाँ सेठ के पुत्र रूप से था। उनके मकान में वह पुरुष खड़ा था, वहाँ मैंने उसे देखा; बारीक मलमल जैसे वस्त्र पहने था, शरीर बहुत पतला था, ऊँचा कद था, शरीर का वर्ण, पीतवर्ण से उजला था, उनके बड़े-बड़े मकान थे, उनके स्त्री इत्यादि कुटुम्ब था। उनकी स्त्री ने गुलाबी रंग के वस्त्र पहने थे, उस आत्मा का सीधा भव वहाँ पुरुषदेहपने था — ऐसा सहज स्मरण आता है।

यह सर्व हकीकत जैसे सहज स्मरण आया है वैसे, जितना आया है उतना, मध्यस्थ भाव से लिखा गया है। जो-जो बात बराबर स्मरण में नहीं आती, वह नहीं लिखी।

श्री वीतराग आदि परम पुरुषों को नमस्कार

❖❖❖

(संक्षेप)

1993, बैशाख कृष्ण अष्टमी, सोमवार, सबेरे के दस लगभग—श्री कुन्दकुन्दाचार्य का, पूर्व भव के पुरुषपने का, श्री सीमन्धर प्रभु का सामान्य स्मरण, ब्रह्मचारीपना इत्यादि का सहज स्मरण।

1993, वैसाख शुक्ल तीज—लोक आदि का स्वरूप।

वैशाख शुक्ल, 6, सबेरे नौ लगभग—छोटे बालक का स्मरण।

www.vitragvani.com

वैशाख शुक्ल, 12, सबेरे आठ से साढ़े आठ लगभग—पूर्व का सम्यग्दर्शनपना, बहुत समय से महाविदेहक्षेत्र में था वह स्मरण, रास्ता इत्यादि का सामान्य स्मरण।

वैशाख शुक्ल, 13, सबेरे नौ लगभग—तीसरे देवलोक से चयकर महाविदेहक्षेत्र में पुरुषदेहपने जन्म, ऐसा स्मरण।

आषाढ़ कृष्ण 13, सबेरे छह से साढ़े छह—पूज्य साहेब का पूर्वभव राजकुमार, साफा बाँधा हुआ।

1994, मार्गशीर्ष कृष्ण 12, दोपहर के तीन से साढ़े तीन लगभग—खुले सिर राजकुमार, भविष्य में तीर्थंकर, उनके साथ चर्चा, श्री सीमन्धर प्रभु का, वाणी इत्यादि का सामान्य स्मरण; शान्ताबेन के पूर्व भव का, उनके घर का इत्यादि का सामान्य स्मरण।

✧✧✧

1994, पौष कृष्ण 1

परम पुरुषों को नमस्कार

श्री श्रुतकेवली के देह के दिखाव में गम्भीरता और ज्ञान का समुद्र हो! — इस प्रकार का उनकी देह का दिखाव था; उनके शरीर का वर्ण उच्च प्रकार का तेजस्वी था; उनके शरीर की आकृति बड़े महान उत्कृष्ट योगी जैसी दिखती थी—इस प्रकार से सामान्य स्मरण आता है। इससे विशेष स्मरण नहीं आता।

राजकुमार का नाम अभी तक स्मरण में नहीं आया था, आज दोपहर में प्रश्न आने पर उस विचार की धुन चढ़ने पर, अन्तर स्थिरता

बढ़ने पर, निर्विकल्प स्थिति होने पर, उसमें से बाहर आने पर, किंचित् देर पश्चात् उन राजकुमार का नाम फतेहमंदकुमार ऐसा आया। उस समय उस कुमार को उनके महल की ओर जाते देखा; उनका महल नगर से थोड़ा दूर था और ऊँचे-ऊँचे मंजिल थे। सबसे ऊपर गोल-गोल कुछ नवीन प्रकार का आकार था, ठेठ ऊपर बीच में महल जैसा था। आजू -बाजू और ऊपर नवीन प्रकार के गोल-गोल छत्र और कोतरनी थी - ऐसा सहज याद आया।

फिर शाम को चार बजे, फतेहकुमार नाम सहित श्री तीर्थंकर प्रभु के समीप में राजकुमार का स्मरण आया; उनके साथ दूसरी बार फतेह-राणासाहेब ऐसे नामसहित, रास्ते में चले जा रहे थे उस प्रकार, उन कुमार का स्मरण आया।

इस प्रकार दो तीन प्रकार से नाम एकदम सहज याद आया।

उन कुमार के माता-पिता थे - ऐसा याद आता है। वे माता-पिता कैसे थे, उनका स्वरूप याद नहीं आता। राजकुमार का नाम फतेहकुमार के उपरान्त दूसरा भी नाम हो - ऐसा सहज स्मरण में आता है परन्तु वह नाम क्या था, यह याद नहीं आता।

कुमार का नाम (याद) आया, उसके साथ, शाम को चार बजे उनके महल में सबसे ऊपर उन्हें राधा... नाम की रानी है, (राधा के पीछे लक्ष्मी जैसा, ऐसा कुछ लम्बा नाम है परन्तु ठीक से याद नहीं आता, किन्तु राधा नाम पक्का याद आता है)। ऐसा एकदम सहज याद आया। उस रानी को बादली रंग का ओढ़नी और जरियन की कोर थी। उसका पुण्य और गुण अच्छे दिखते हैं — ऐसा संक्षिप्त भाषा में लिखा है।

www.vitragvani.com

उन राजकुमार को रानी होने पर भी, ब्रह्मचारी थे — ऐसा सहज याद आता है। गुणवान राजकुमार ब्रह्मचारी पहले से ही थे या कब से थे, यह कुछ याद नहीं आता। उन कुमार को यह एक थी या दूसरी कोई अधिक रानियाँ थीं, यह कुछ ख्याल में नहीं आता। यह एक रानी निश्चित् याद आती है।

यह सब भक्तिभाव से जानकारी के लिये लिखा है।

इन दोनों पत्रों में, जितना आया है, उतना लिखा है। इससे विशेष याद नहीं आया।

✧✧✧

परम कृपालु सद्गुरुदेव को नमस्कार

1994, पौष कृष्ण दशम, प्रातः सवा पाँच

विगत दिन नौवीं की रात्रि को सात से साढ़े सात तक में ऐसा स्मरण आया कि शान्ताबेन का आत्मा वहाँ पुरुष देहरूप से था; वह और मैं कुछ बात करते थे; क्या बात करते थे, वह याद नहीं आता; उनका नाम लाभ... भाई था; मैं उन्हें लाभभाई कहकर बुलाता था; मेरा नाम देवाभाई था; वह मुझे देवा..... भाई कहकर बुलाता था—इस प्रकार के भाव याद आते हैं। (लाभ.... भाई और देवा.... भाई का लम्बा नाम याद नहीं आता)। वह स्मरण वहाँ से उस समय रुक गया।

वहाँ से फतेहमन्दकुमार सहज स्मरण में आये। स्वयं धर्मी ब्रह्मचर्यरंगी ऐसे राजकुमार कहते थे कि देवाभाई! राधारानी धार्मिक वृत्ति में बहुत सजग है। इस प्रकार के भाव याद आते हैं। उनकी रानी

निर्विकल्प समकित प्राप्त थी और बहुत गुणी थी — ऐसा सहज याद आता है। राजकुमार को उस रानी के गुणों का बहुमान था, यह सब बराबर याद आता है।

इस भव में किसी के साथ की हुई बातचीत याद आती है, उसी प्रकार निःशंकरूप से याद आता है।

'राजकुमार भविष्य में कालक्रम से तीर्थङ्कर होनेवाले हैं' इस बात को राजकुमार स्वयं, तीर्थङ्कर आदि की वाणी के ज्ञानसहित, अन्तर में से जानते थे। 'मैं तीर्थङ्कर होनेवाला हूँ' — ऐसा उनका हृदय कहता था, वह स्मरण यहाँ से रुक गया।

तत्पश्चात् साढ़े आठ से सवा नौ तक में—

मैं देवलोक में देव था, उसका स्मरण आया; वहाँ देवी थी और कितने ही देव थे। वह देवलोक, वहाँ के वस्त्र और गहने इत्यादि अलग प्रकार के लगते हैं। किस भाषा में लिखना और बोलना, वह कुछ स्पष्ट नहीं आता, वेदन में गम्भीरता बहुत भासित होती है। देवी के शरीर पर और देवलोक में और मेरे देवपने के शरीर पर अलग-अलग प्रकार की चमक, अलग-अलग प्रकार के रङ्ग के चमकवाले वस्त्र—वे वस्त्र मखमल जैसे हों, ऐसा ज्ञात होता था—और गहने इत्यादि तथा देवलोक भी अलग-अलग प्रकार के रङ्ग सहित जगजगाहटवाला याद आता है। सभी देव एकत्रित होकर नृत्य करते थे (मैं ताली बजाता था) वहाँ नलिनी नाम का कोई था, वह देवी का नाम था या दूसरे किसी का नाम था, वह याद नहीं आता। मैं मानो देव हूँ और सब परिचित देव—हम सब एकत्रित होकर नृत्य करते हैं—ऐसा सब मानो देव का ही भव क्यों न हो ऐसा

लगता है। क्या नृत्य था, वह स्पष्ट याद नहीं आता। उस देव के भव से पहले महाविदेहक्षेत्र में बैल था, ऐसा एकदम सहज याद आता है। वह बैल लाल वर्णी था, शरीर पतला सूखा हुआ जैसा था, उस बैल का इतना याद आता है, उससे विशेष याद नहीं आता। मैं बैल हूँ, उस प्रकार से सहज याद आता है।

तत्पश्चात् रात्रि को दस-साढ़े दस बजे—

मैं तथा (अभी मेरे साथ शान्ताबेन हैं वह आत्मा) लाभ....भाई छोटे थे, तब साथ में पाठशाला जाते थे; दूसरे वहाँ के दो-तीन मित्र पाठशाला के अथवा वहाँ आजू-बाजू के रहनेवाले याद आते हैं। उनमें से एक चन्द....भाई नाम से थे। लाभभाई की माँ और मेरी माँ को मित्रता और सम्बन्ध था। पाठशाला कैसी थी, वह बराबर याद नहीं आता।

लाभ.....भाई के यहाँ छाछ में से मक्खन निकलता था। देवाभाई तथा लाभ.....भाई—हम छोटे थे और खेलते थे, तब किसी प्रसङ्ग में पाठशाला की पढ़ाई की और मक्खन, छाछ इत्यादि वस्तु की बात करते थे — ऐसे भाव याद आते हैं। इस विषय में विशेष याद नहीं आता। लाभ....भाई ने विवाह किया तब हल्के गुलाबी रङ्ग का, अन्दर सुनहरी रेखा थी, इस प्रकार का शरीर पर रेशमी जैसा पहना था।

तत्पश्चात् तुरन्त दूसरा स्मरण में आया।

श्री तीर्थङ्कर प्रभु का समवसरण थोड़ा-थोड़ा स्पष्ट और अस्पष्ट याद आता है। बीच में बैठने का बड़ा विशाल क्षेत्र था। कितना बड़ा था, वह याद नहीं आता। आजू-बाजू लाल रङ्ग की चमक करते बड़े-बड़े वक्र कमान जैसा आकार था। उसकी चमक से वे रत्न आदि के हों, ऐसा

ज्ञात होता था। उनके नीचे और ऊपर वक्र कमान के ऊपर कंगूरों की कोतरनी, उनके नीचे सीधा दिखाव, उसके नीचे रत्न की शलाका के ढेर का वक्र कमान का बड़ा-बड़ा आकार हो - ऐसा ज्ञात होता था। नीचे पीले रङ्ग का सीधा दिखाव था, दरवाजे की कमान में लाल-लाल लाईनें थीं, अलग प्रकार के आकारवाला कुछ था। एक जगह दरवाजा देखने में आया था; वहाँ आजु-बाजु और ऊपर लगकर ऊपरा-ऊपरी कमान लगा था। कमान पर दूसरा नवीन प्रकार का दिखाव था, वहाँ से सीढ़ियाँ निकलती थीं। सीढ़ियों का स्वरूप याद नहीं। वक्र कमान आदि उसके लिये भाषा लिखी है, बाकी तो कुछ अलग ही प्रकार का दिखाव था। किसी दिन यहाँ दृष्टि से देखा न हो, इस प्रकार का आश्चर्यकारी दिखाव लगता है। अन्दर बहुत महिमा आया करती है परन्तु भाषा में कहना या लिखना, उसका वर्णन करना—थोड़ा थोड़ा स्मरण आया है, इससे—आता नहीं। वहाँ अद्धर श्री सीमन्धर प्रभु विराज रहे थे, पद्मासन था, उनका शरीर बहुत ही बड़ा था, उनके शरीर में प्रकाश की चमत्कृति हो रही थी, प्रभु से नीचे देव नृत्य कर रहे थे, क्या नृत्य कर रहे थे वह याद नहीं आता। श्री सीमन्धर प्रभु का स्मरण आने पर, अभी साक्षात् दर्शन प्रभु के होते हों — ऐसा लगता है और उन्हें बहुमान से हृदय नम पड़ता है। वहाँ श्री श्रुतकेवली (गणधरदेव) का नाम शम्भू....... था। (लम्बा नाम पीछे है परन्तु स्पष्ट बराबर याद नहीं आता)। शम्भू बराबर याद आता है।

समवसरण, श्री सीमन्धर प्रभु इत्यादि का स्मरण आने पर इस जन्म को क्षणभर भूल जाती हूँ! वहाँ वृत्ति की तन्मयता हो जाती है और मैं समवसरण में श्री प्रभु के समक्ष ही बैठा होऊँ! सुनने आया होऊँ! ऐसा हो जाता है। समवसरण की अद्‌भुतता लगती है। महाविदेहक्षेत्र में ही होऊँ!

ऐसा लग जाता है। वहाँ के परिचित जीव दिखते हैं और सब मानो आना-जाना वहाँ का हो रहा हो — ऐसा लगता है।

(पौष कृष्ण बारस, सबेरे नौ के बाद आया हुआ)

(चौदश को सबेरे लिखा हुआ)

समवसरण में वृक्ष और पानी के छोटे कुण्ड जैसे दिखाव था। वृक्ष कैसे थे, वह स्पष्ट याद नहीं आता। वहाँ बड़े-बड़े स्तम्भ जैसा था। स्तम्भ का रङ्ग पीला और भूरा जैसा था। स्तम्भ पर ध्वजा जैसी दिखती थी। लाल रङ्ग की दिखती थी, अन्दर सफेद-सफेद लाईनें थीं। वहाँ बड़े-बड़े कमल जैसा दिखाव था, रमणीक छोटे वृक्ष उगे हुए हों, उस प्रकार का दिखाव था। जहाँ बैठने का था, वहाँ मखमल जैसे दिखाव का कुछ था। प्रभु के शरीर में से प्रकाश की लाईट पड़ रही थी। प्रभु का आसन था परन्तु वर्णन हो, उस प्रकार स्पष्ट याद आया नहीं।

वहाँ बहुत लोग थे, उनमें फतेहकुमार, चन्द.....भाई, लाभ..... भाई, लाभभाई की स्त्री इत्यादि देखने में बहुत आये थे।

श्री गुरुदेव के परम कृपामय उपकार को
अत्यन्त भक्ति से नमस्कार

☆ ☆ ☆

श्री सर्वज्ञ को नमस्कार
सत्पुरुषों की कृपा को नमस्कार

1994, पौष शुक्ल 14, प्रात: काल लिखा हुआ।

पौष शुक्ल 9 को सबेरे 7.00 से 7.30 तक में सहज स्मरण आया।

महाविदेहक्षेत्र में जिस गाँव में थे, उस गाँव का नाम नौवलपुर था। श्री श्रुतकेवली ऐसा कुछ बोलते थे कि इस नौवला नगरी में — ऐसा कुछ कहते थे।

मैं राजकुमार को कहता था कि अपने नौवलपुर में.... (कोई मनुष्य था, उसके विषय में कुछ बात करता था) तथा मैं रहता हूँ, वह इस गाँव का नाम नौवलपुर है – ऐसा सहज स्मरण होता है।

पौष शुक्ल 11 बुधवार, रात्रि 10.00 के बाद —

उस नौवलपुर के राजा का नाम दीपोहमन्द था। वे राजा, फतेहमन्दकुमार के पिता थे। दीपोहमन्द राजा की रानी—फतेहमन्दकुमार की माता—का नाम सुलेहा रानी अथवा सुलेहणा रानी—ऐसे दो प्रकार से स्मरण में आता है।

दीपोहमन्द राजा का बड़ा, बलिष्ठ शरीर, शरीर का बंधाव बहुत अच्छा, शरीर का वर्ण ऊँचे प्रकार का पुण्यवन्त, उनके चेहरे से वे बुद्धिशाली और ऊँचे गुणवाले दिखते हैं। विशेष स्वरूप उनका याद नहीं आता।

सुलेहा रानी ने सफेद और कम पीले रङ्ग जैसा, अन्दर कुछ लकीरें थी ऐसा, ओढ़ा हुआ था। उनके गुण राजरानी के योग्य, उनके शरीर से दिखायी देते हैं। उनके वर्णन के विषय में इतना याद आता है।

www.vitragvani.com

उस राजा को दूसरे कितने ही कुँवर हों — ऐसा स्मरण सहज आता है परन्तु कितने कुँवर थे, यह याद नहीं आता। उसमें से एक कुँवर का नाम बाल... कुमार था; दूसरे एक कुँवर का नाम नन्द... कुमार था। ये दोनों कुँवर फतेहकुमार से छोटे थे। दूसरे कोई कुँवर थे या नहीं थे, यह याद नहीं आता। दोनों कुँवर का वर्णन हो, उस प्रकार शरीर आदि कुछ याद नहीं आता।

दीपोह राजा को दूसरी कोई रानी थी या नहीं, यह याद नहीं आता।

नौवलपुर में दो सेठ थे; उसमें एक सेठ का नाम जीवा... सेठ अथवा जीवन.... सेठ ऐसे दो प्रकार से याद आता है। दूसरे सेठ का नाम परम.... सेठ था। ये दोनों सेठ होने से राजा के साथ कार्य-प्रसङ्ग के कारण सम्बन्ध था।

उस गाँव में दूसरे सेठ होंगे परन्तु मुझे याद नहीं आता।

जीवा.... सेठ और परम... सेठ नगरसेठ जैसे हों—ऐसा ज्ञात होता था। वे परम... सेठ लाभभाई के पिता थे और जीवा... सेठ मेरे पिता थे।

परम... सेठ एकदम बहुत ही गहरे लाल रङ्ग की पगड़ी बाँधते थे; वे किसी-किसी समय कार्यवशात् राजा के पास जाते; उन सेठ का स्वरूप इतना याद सहज आता है। उनकी स्त्री का नाम गणधारी अथवा गणा अथवा गणधारा—ऐसे तीन प्रकार से याद आते हैं। उनका दिखावा बड़ी जबरदस्त सेठानी जैसा था। उनके घर नौकर-चाकर थे, बड़ा विशाल उनके घर का कामकाज नगरसेठ जैसा था। उन्हें कितने पुत्र इत्यादि कुटुम्ब था। उसमें से लाभभाई और दूसरे एक चखुभाई इन दो के नाम याद आते हैं, दूसरे किसी के नाम याद नहीं आते। दूसरे लड़के थे या नहीं, यह

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

भी याद नहीं आता। गणधारी, वह लाभ... भाई की माता का नाम था। इस विषय में इतना याद आता है। किसी के शरीर आदि के बारे में, कथन में आवे इस प्रकार याद नहीं आता।

जीवा... सेठ अथवा जीवन सेठ मेरे पिता का नाम था। वे सेठ अच्छे स्वभाव के और वैभववाले थे। मेरी माता का नाम भद्रा अथवा भद्रवाहा था। सेठानी के योग्य उनके गुण थे। मेरे पिता सफेद पगड़ी बाँधते थे — इस विषय के सन्दर्भ में इतना याद आता है। वे माता-पिता धार्मिक थे।

मैं, मेरे माता-पिता का एक ही था, दूसरे कोई भाई-बहिन नहीं थे, घर में मेरे काका इत्यादि कुटुम्ब था।

नौवलपुर गाँव से थोड़े दूर दूसरा वणवींश नाम का गाँव था। वहाँ से लाभ... भाई कन्या से विवाह करके लाये थे। उस कन्या का नाम गुणभद्रा था। उस कन्या के पिता की माता अथवा उस कन्या की माता वहाँ थी, यह याद आता है।

रथ जैसा कुछ था, उसमें बैठकर लाभ... भाई आते थे। इस सम्बन्ध में विशेष याद नहीं आता।

तीनों एक ही गाँव में थे, एक ही गाँव में रहते थे—ऐसा सहज याद आता है। यह सब सहज स्मरण में निःशंक आता है, उस प्रकार से मध्यस्थता से लिखा गया है।

मैं तथा राजकुमार किसी एक स्थान पर बैठे थे, वहाँ फतेहकुमार धार्मिक बात करते थे।

पौष शुक्ल 10 को सबेरे ऐसा स्मरण आया था कि —

श्री कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ महाविदेहक्षेत्र में आये, तब श्री तीर्थंकरदेव का निकला हुआ पद सहज स्मरण में आया। श्री कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ आये, तब प्रभु की वाणी में से क्षायिक का स्वरूप, यतियों का स्वरूप, श्रावक का स्वरूप इत्यादि वाणी खिरी थी। प्रभु की वाणी तो अद्भुत, गहरी और गहन तथा बहुत प्रकार की खिरी हो, परन्तु वहाँ मेरी शक्ति के अनुसार पकड़ में आया; उसमें से अमुक इतना याद आता है। यह सब एकदम सहज याद आता है। उस समय मेरी शक्ति के अनुसार पकड़ में आया हुआ एक पद याद आता है:

क्षपकत्वश्रेणी भूदाद्वै भूत्वा।

.... ॥

पौष शुक्ल 11 को रात्रि में —

मैं तथा राजकुमार जहाँ किसी स्थान में बैठे थे, वहाँ राजकुमार कुछ धार्मिक बात करके यह उपरोक्त पद बोले, तत्पश्चात् तुरन्त दूसरा पद राजकुमार बोले —

सिद्धि-गवेषां................।

.... ॥

यह दूसरा पद श्री श्रुतकेवली का था। वह राजकुमार बोलते थे और मैं सुनता था। राजकुमार ऐसा कहते थे कि श्रुतकेवली ऐसा कहते हैं।

ऊपर के दोनों पद में काना-मात्रा का या शब्द इत्यादि का फेरफार हो तो ख्याल नहीं।

www.vitragvani.com

श्री श्रुतकेवली तीन प्रकार से क्षायिक के नामवाला स्वरूप कहते थे। वे तीन प्रकार स्मरण में रहे थे, वे याद आये। पौष शुक्ल 9 को दोपहर में स्मरण में आये थे।

पौष शुक्ल 11, रात्रि में —

वापस फिर से राजकुमार के साथ बात करते थे, तब राजकुमार को भी इन तीन प्रकारों का पता था। राजकुमार कहे कि श्रुतकेवली क्षायिक का एक धाराप्रवाहीरूप प्रकार कहते हैं—ऐसा राजकुमार कहते थे।

एक धाराप्रवाही, दूसरा जोड़नी अथवा जोड़रूप क्षायिक, तीसरा युगल क्षायिक।

धाराप्रवाही शुरुआत की धारा का प्रवाह क्षायिक के योग्य श्रेणी का, वह धाराप्रवाही — ऐसा उसका भाव याद आता है।

दूसरा, जोड़नी अथवा जोड़रूप क्षायिक वह।

पूर्ण कृतकृत्यता के अद्‌भुत सुख में से अंश कृतकृत्यपना प्रगट होकर उस अंश द्वारा विशेष कृतकृत्यता के अंशों का जुड़ना, ऐसा क्षायिक जो कहलाता है, वैसे क्षायिक को वहाँ जोड़नी अथवा जोड़रूप ऐसे स्वरूप से कहते हों—ऐसा भाव भासित होता है। एक अंश द्वारा विशेष अंशों का परस्पर जुड़ना, उसका नाम जोड़नी क्षायिक—ऐसा संक्षिप्त में भाव याद आता है।

पूर्ण केवली के अथवा सिद्ध के क्षायिक को युगल क्षायिक कहते हों—ऐसा याद आता है।

मैं तथा राजकुमार, दोनों, इस प्रकार से जानते थे। इससे विशेष याद नहीं आता। यह सब याद सहज आता है।

चन्द भाई कौन हैं, वह यहाँ के कितने ही जीवों के प्रति मध्यस्थ भाव से दृष्टि देने पर उन जीवों में चन्द भाई हों—ऐसा मेरे स्मरण में ज्ञात नहीं होता। दूसरे एक उनके साथ शिशुभाई नाम से थे।

तीर्थंकरपद कितने भव के बाद — ऐसा स्मरण में सहज नहीं आता परन्तु कालक्रम से अल्प काल में तीर्थंकर होंगे — ऐसा स्मरण सहज होता है।

श्री तीर्थंकरदेव को नमस्कार।

गुरुराज के अद्भुत प्रताप को अहोनिश भक्ति से बारम्बार नमस्कार।

✧✧✧

श्री वीतराग आदि सत्पुरुषों को नमस्कार

1994, माघ कृष्ण 7 (लिखा गया)

माघ कृष्ण 5, प्रात: काल—

श्री कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ महाविदेहक्षेत्र में लगभग आठ दिन रहे हों ऐसा सहज स्मरण आया। बड़े अधिपति चक्रेश्वरी वहाँ समवसरण में थे इस प्रकार सहज स्मरण आया। उन चक्रेश्वरी का—शरीरादि का—वर्णन हो इस प्रकार सहज स्मरण नहीं आता।

माघ कृष्ण 6 को सायं लगभग 4.00 बजे बाद—

श्री कुन्दकुन्दाचार्य पधारे उस गाँव का नाम कंडल, कुण्डीला, कुण्डलपुरी अथवा कुण्डली था। श्री कुन्दकुन्दाचार्य, कुण्डलपुरी में पधारे थे—ऐसा सहज स्मरण आता है।

माघ कृष्ण 6 को रात्रि 10.00 बजे लगभग वापस फिर से—

श्री कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ कुण्डलपुरी में पधारे थे और लगभग आठ दिन रुके हैं—ऐसा स्मरण आया।

माघ कृष्ण 7 को लगभग 10.30, 11.00 —

श्री कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ कुण्डलपुर में पधारे थे, आठ दिन रहे थे—ऐसा निश्चित् स्मरण आता है।

आठ दिन तक वहाँ बड़े उत्सव जैसा हुआ था, वहाँ के चक्रवर्ती ने उनका बहुत आदर सत्कार किया था और बड़ा उत्सव अथवा महोत्सव जैसा चक्रवर्ती की ओर से हुआ था; यह निश्चित् याद आता है।

सभी प्रकार का आठ दिन का उत्सव चक्रवर्ती की ओर से हुआ था या देवों की ओर से हुआ था, यह याद नहीं आता।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य को बहुत ही आदर-सत्कार से चक्रवर्ती की ओर से, बड़ा थाल जैसा था, उसमें कुछ फल इत्यादि (दूसरा कुछ वनस्पति जैसा) था। वे फलादि कुन्दकुन्दाचार्य को दिये गये थे।

फल इत्यादि दिये गये थे, यह निश्चित् याद आता है परन्तु चक्रवर्ती ने दिये थे या दूसरे किसी ने, यह पक्का याद नहीं आता।

मैं वहाँ कुण्डलपुर में था, यह निश्चित् याद आता है। प्रभु के दर्शन के लिये आया हूँ अथवा दूसरे किसी प्रसंग में आया हूँ, यह याद नहीं आता।

आज माघ कृष्ण 8, 10.30 से 11.00 तक आया हुआ स्मरण—

श्री कुन्दकुन्दाचार्य के चरणों को, फलादि दान में दिये, उस समय

www.vitragvani.com

सुगन्धित पानी, पुष्प इत्यादि मूल्यवान चीजें — कंकु जैसा कुछ था, इत्यादि चीजों — से पूजने में आया हों ऐसा निश्चित् स्मरण आता है।

फलादि का थाल था वह रत्नजड़ित जैसा हो, ऐसा याद आता है।

यह सब बराबर स्मरण सहज आया वैसा लिखा है।

भरतक्षेत्र में से महाविदेहक्षेत्र में जाकर
श्री सीमन्धर प्रभु के दर्शन करनेवाले
परम योगीश्वर श्री कुन्दकुन्दाचार्य को
परम भक्ति से नमस्कार, बारम्बार नमस्कार

✧✧✧

परम पुरुषों को नमस्कार

1994, माघ कृष्ण 13 —

श्री कुन्दकुन्दाचार्य वहाँ कुण्डलपुर में पधारे, तब उत्सव के कारण भक्ति का प्रकार बहुत ही दिखता है।

कुण्डलपुर में श्री कुन्दकुन्दाचार्य पधारे, तब फतेहमंदकुमार भी वहाँ आये थे, बहुमान से उल्लासपूर्वक श्री कुन्दकुन्दाचार्य के प्रति हाथ जोड़ते खड़े देखे।

राजकुमार एक बार कहते थे; आत्मा एक है, उसका डंका नौवलपुर में बजाना है। यह स्मरण पिछला लेखन देने के बाद दूसरे दिन आया।

माघ कृष्ण 12 को रात्रि 8.00 से 9.00 लगभग आया हुआ स्मरण—

राजकुमार के नौवलपुर में कोई एक दूसरे गाँव में से एक बाई आकर रहती थी। उसका नाम अजया था। उसे एक (अज) बाहु नाम का लड़का था। 'बाहु' बराबर याद आता है परन्तु 'अज' था या क्या था वह बराबर याद नहीं आता। उसका लड़का नौवलपुर में आने के बाद से धर्मप्रेमी हो गया हो, ऐसा ज्ञात होता है। वह (अज) बाहु एक पर्वत पर दिगम्बर मुनि की प्रतिमा के दर्शन करते समय सहज स्मरण में आया। वह धार्मिक वृत्ति का हो गया हो ऐसा ज्ञात होता है। यह स्मरण पहले भी आया था, फिर दूसरी बार आया। वह 'अज' बाहु धर्म की ओर झुका होने से तथा ज्ञान में कुछ बलवान होने से राजकुमार को उसके प्रति प्रेम था। वह (अज) बाहु कभी-कभी समवसरण में भी देखने में आता है।

बाद में किसी कारणवश उस अजेयाबाई के पुत्र के अभिप्राय वस्तुस्थिति से बदले और तदनुसार वह राजकुमार के पास दृढ़ता से आग्रहपूर्वक स्थापित करता; राजकुमार को, उसका निमित्त परन्तु स्वयं के द्वारा, वे अभिप्राय जँचते। उसमें से सब याद नहीं आते, कितने ही याद सहज आते हैं।

राजकुमार के प्रति लाभभाई को तथा देवाभाई को महिमा होने से वे भी (अज) बाहु के अभिप्राय कितनी ही बार सुनने जाते, उनमें से उन्हें भी स्वयं के द्वारा कितने ही जँचते। राजकुमार को (अज) बाहु के बहुत से अभिप्राय जँचते।

यह निम्नानुसार (अज) बाहु कहते थे —

www.vitragvani.com

आत्मा देशप्रत्यक्ष है, सर्वप्रत्यक्ष नहीं;

गुण प्रत्यक्ष है, द्रव्य प्रत्यक्ष नहीं।

अल्प वस्त्र हो तो भी मोक्ष होता है।

दृढ़ता से कहता हूँ कि ज्ञान शक्ति ही वास्तविक है, दूसरा सर्व पानी का पूर है। — ऐसा एकान्त आग्रहरूप, निषेधरूप अभिप्राय।

वहाँ भक्ति का प्रकार बहुत दिखने से उसके निषेधरूप अभिप्राय।

— इस प्रकार के भाव याद आते हैं। ऐसे कितने ही अभिप्राय सहज स्मरण में आये हैं, वे विदित किये हैं।

(अज) बाहु ने कहे हुए अभिप्राय के विषय में राजकुमार, देवाभाई को कहते, इस विषय में बात करते।

सर्व के अभिप्राय अमुक प्रकार से इस तरह कितने ही परिणमते थे। मूल विशेष विराधना (अज) बाहु से हुई है, ऐसा सहज स्मरणरूप वेदन में आता है, वैसा विदित कराया है।

जैसे अभी के हुए परिणाम स्मरण में आवें, वैसे पूर्व के हुए अमुक परिणाम सहज स्मरणरूप वेदन में आते हैं।

यह तो बाहर के निमित्त से हुआ अमुक प्रकार याद आता है। अभिप्राय में विशेष क्या हुआ हो, वह याद नहीं आता।

हमारे से माया क्या हुई है, वह याद नहीं आता।

(अज) बाहु, वह नाराणभाई का आत्मा है, ऐसा दो-तीन बार उछल-उछलकर सहज स्मरण आता है परन्तु वहाँ से यह उनका सीधा भव हो—ऐसा सहज स्मरण में नहीं आता।

ख्याल में नहीं ऐसा यह विराधना का प्रकार सहज स्मरण में आया है।

ऐसे विपरीत अभिप्राय के बाहर के प्रकार के समय राधारानी नहीं थी। उनका आत्मा दूसरी गति में गया था।

राजकुमार को दूसरी दो रानियाँ थीं, उनमें से एक सुभंगा और दूसरी पटोधरा नाम से थी। उस रानी के वर्णन विषय में विशेष याद नहीं आता।

राजकुमार अन्त में वेदना की स्थिति में सख्त पुरुषार्थरूप से रह नहीं सके—ऐसा सहज स्मरण में आता है। राजकुमार को, मैं वहाँ उनके शरीर को देखने गया था; पलंग जैसा था, उसमें राजकुमार सो रहे थे; इस विषय में विशेष याद नहीं आता।

राजकुमार वहाँ से यहाँ आये वह प्रकार भी याद आता है। नौवलपुर के लोगों के हृदय में खेद व्याप्त रहा था। इस संदर्भ में विशेष याद नहीं आता।

वहाँ का देवाभाई का देहप्रमाण यहाँ के देह के साथ मिलान नहीं खाता, इतना स्मरण में आता है।

यह लेखन, जैसा आया है वैसा, मध्यस्थता से लिखा गया है।

श्री वीतरागाय नमः !

परम कृपालु सद्‌गुरुदेव को नमस्कार

✧✧✧

www.vitragvani.com

माघ शुक्ल 12 को आया हुआ स्मरण

बैल के भव के पहले के भव में मैं घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था, रास्ते में-जंगल में किसी ने मुझे मार डाला, वहाँ से मरकर बैल हुआ—ऐसा सहज स्मरण आता है।

1994, चैत्र कृष्ण अमावस्या—

राजकुमार भविष्य में तीर्थंकर होंगे—ऐसा सहज स्मरण बारम्बार आया करता है और पूज्य कृपालु सद्‌गुरुदेव के प्रति — जगत् उद्धारक के प्रति — बहुत महिमा आती है।

ॐ नमः

परम पुरुषों को नमस्कार

बैशाख कृष्ण 7 को गुरुवार, 1994 लिखा गया —

श्री कुन्दकुन्दाचार्य महाविदेहक्षेत्र में कुण्डलपुर में पधारे तब नौवलपुर से दीपोहमंद राजा — उनकी विशाल सेना सहित — उनकी रानी अर्थात् फतेहकुमार की माता, (कृपालु गुरुदेव का आत्मा) फतेहकुमार, उनकी रानियाँ इत्यादि कुटुम्ब, रथ, दूसरे प्रकार का कुछ वाहन था (वह नाम आता नहीं), हाथी, घोड़ा इत्यादि साथ में थे; गाँव के बहुत लोग साथ में थे; परम सेठ, लाभभाई (शान्ताबेन का आत्मा) इत्यादि, जीवन सेठ, मैं इत्यादि बहुत लोग साथ में थे; चन्दभाई और शिशु भी थे।

वहाँ के अनुसार नौवलपुर से कुण्डलपुर बहुत दूर नहीं था, परन्तु नजदीक था।

कितने ही लोग चल रहे थे, कितने ही वाहनों में बैठे थे। राजकुमार थोड़ी देर चलते थे, थोड़ी देर किसी वाहन पर बैठते हों, ऐसा ज्ञात होता है।

रास्ते में राजकुमार के साथ पुण्य-पाप के सम्बन्ध में बात हुई थी। क्या बात हुई थी, यह याद नहीं आता। कुण्डलपुर में गये तब समवसरण की सीढ़ियाँ मैं तथा लाभभाई साथ में चढ़ते थे; राजकुमार, उनका कुटुम्ब इत्यादि आगे चढ़ते थे।

समवसरण में (अज) बाहु दिखायी दिये थे परन्तु वे नौवलपुर से आये थे या दूसरे किसी गाँव से — यह याद नहीं आता।

(यह ऊपर का स्मरण चैत्र शुक्ल 8 के दिन सामान्यरूप से आया था, वापस वैशाख कृष्ण 4 को शाम को स्पष्ट आया।)

वहाँ नौवलपुर में आर्य भाषा थी—ऐसा सहज स्मरण आता है। लेखन में कितने ही वहाँ के भाव और भाषा यहाँ की लिखी है और कितनी ही वहाँ की भाषा भी है; जैसे कि देशप्रत्यक्ष, सर्वप्रत्यक्ष, पानी का पूर इत्यादि कितनी ही वहाँ की भाषा है।

यह भाषा का प्रकार एकदम सहज याद आता है (इस सम्बन्ध में स्पष्ट स्मरण बैशाख कृष्ण 6 को सबेरे 10.30 बजे आया।)

नौवलपुर में राजकुमार के साथ मैं और लाभभाई किसी-किसी समय घूमने जाते थे। जिस रास्ते से सेना कुण्डलपुर की ओर गयी थी, उसके आजू-बाजू का रास्ता हो, ऐसा ज्ञात होता है।

विराधना के प्रकार के समय देवाभाई को अर्थात् मुझे ज्ञान के

www.vitragvani.com

प्रयत्न से किनारा नहीं, स्थिरता के प्रयत्न से किनारा है—ऐसे भाव होकर ज्ञान के प्रति बाद में परिणाम में निषेध जैसा भाव आ जाता था।

ऊपर का निषेध के भाववाला अभिप्राय लाभभाई को भी जँचता था। लाभभाई कहते : देवाभाई! तुम्हारी बात सत्य है। विराधना का यह एक प्रकार लिखा, इसके अलावा परिणाम में मन्दता-तीव्रता सबके भाव में रही हो वह अलग बात है।

(अज) बाहु के साथ राजकुमार की मित्रता हुई, वह मुझे तथा लाभभाई को रुचा नहीं। मैं तथा लाभभाई इस सम्बन्ध में गुप्त बात करते थे। क्या बात करते थे, वह याद नहीं आता। हमारे अभिप्राय हम राजकुमार को तथा (अज) बाहु को बतलाते नहीं थे; यह परिणाम में हमारे से माया हुई है—ऐसा ज्ञात होता है। ऐसा होने पर भी हमें राजकुमार के प्रति महिमा थी।

माया के दूसरे कोई विशेष प्रकार हुए हैं या क्या—यह याद नहीं आता।

यह सब सहज याद आया, वह ज्ञात कराया है।

नौवलपुर में किसी एक स्थान में मैं, राजकुमार तथा लाभभाई धार्मिक बात करते थे।

मैं देवलोक में देव था तब भगवान की वहाँ देवलोक में प्रतिमा थी उसके दर्शन करने जाता; देवियाँ इत्यादि तीर्थंकर का उत्सव करने कहीं जाती हों, ऐसा याद आता है।

मैं जाता था या नहीं यह याद नहीं आता, इस सम्बन्ध में विशेष याद नहीं आता।

एक बार देवाभाई अर्थात् मैंने, श्री शम्भू के अतिरिक्त दूसरे कोई गणधर वहाँ ऊपर से नीचे आते थे, उन्हें देखकर कहा :

पधारो जिनराज ! पधारो; इस प्रकार सहज याद आता है।

श्री सीमन्धर भगवान किसी एक वृक्ष के नीचे केवलज्ञान पाये हैं ऐसा श्री गणधरदेव कहते थे।

प्रभु की ध्वनि की आवाज किस द्वार से बाहर निकलती थी, यह याद नहीं आता।

यह सब ऊपर का स्मरण बैशाख कृष्ण 6 को सबेरे 10.30 बजे लगभग आया था।

यह सब, सहज स्मरण आया वह लिखा है।

पूर्व के परिचित आत्माओं को पहिचानना, उन आत्माओं के जन्म बदल जाने पर भी पहचानना, उनका स्मरण हो ऐसे संस्कार अथवा धारणा नहीं होती, तथापि मति की कोई ऐसी निर्मलतारूप स्थिरता के कारण— स्मरण के साथ निर्मलता के कारण—(यद्यपि अरूपी आत्मा दिखता नहीं तथापि) वर्तमान उसकी देहपर्याय ख्याल में हो और पूर्व की देहपर्याय भी देखी हुई हो, परिचय में हो, इसलिए पूर्व में जो पुरुष देखा था, वही यह पुरुष है—ऐसा जाना जा सकता है, पहचाना जा सकता है।

पूर्व में जो इस पुरुष को देखा था अथवा ये आत्माएँ पूर्व में जो देखे थे, वे 'ही', ये आत्माएँ हैं, ऐसे मति की निर्मलतारूप स्थिरता के कारण से ज्ञान में सहज निश्चित्‌रूप से निःसन्देहरूप से पकड़ में आ जाता है। वह आत्मा सीधा यहाँ जन्म प्राप्त है या अन्यत्र कहीं बीच में गया है, यह भी ज्ञात होता है; यदि सीधा आया होवे तो पूर्व के पुरुष की और अभी के

पुरुष की सीधी सन्धि ज्ञान में आती है; नहीं तो सीधी सन्धि नहीं आती परन्तु बीच में और कहीं गया हो, ऐसा ख्याल में आता है।

परमकृपालु सद्गुरुदेव के कृपामय उपकार को अत्यन्त भक्ति से बारम्बार नमस्कार

श्री प्रभु सीमन्धर भगवान का तो अभी इस काल में विरह पड़ा, परन्तु परम कृपालु सद्गुरुदेव का निकट का परिचय चाहने पर भी वर्तमान उनसे दूर हो गये, यह पूर्व परिणति का दोष है।

उन अपराधों की क्षमा चाहते हैं।

गत वर्ष से स्मरण की शुरुआत होने से पूर्व एक बार स्वप्न आया था कि लाभ के समय में लाभ लिया नहीं, लाभ के काल में लाभ लिया नहीं, इसलिए विषमकाल में अवतार हुआ है।

यह सहज बतलाने के लिये लिखा है। 1994 —

इस सर्व स्मरण में कृपालु गुरुदेव का परम कृपामय उपकार है, परम कृपामय प्रताप है।

श्री गुरुदेव के चरणकमल में परमभक्ति से बारम्बार नमस्कार।

✧✧✧

पूज्य गुरुदेव के तीर्थंकरपने का बारम्बार स्मरण आता था, उसके साथ में यह गणधरपने का स्मरण आया था।

परम कृपालु श्री सद्गुरुदेवश्री को परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार।

www.vitragvani.com

1994 में आया हुआ स्मरण—

(2004, पौष शुक्ल 14 को लिखा गया)

सहजरूप से ऐसा स्मरण आया है कि यह देवाभाई का आत्मा है वह, यह राजकुमार भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले हैं, उनके भविष्य में गणधर होनेवाला है — ऐसा सीमन्धर भगवान ने कहा है। इस प्रकार स्पष्टरूप से स्मरण आया है। जगतनाथ जग-श्रेष्ठ तीर्थंकरदेव को नमस्कार।

संवत् 2004 पौष शुक्ल 13 के दिन आया हुआ स्मरण—

गणधरपने का बारम्बार स्मरण आता है। महाविदेहक्षेत्र में श्री सीमन्धर भगवान ने राजकुमार के महिमायुक्त विश्ववंद्य तीर्थंकरपने के सम्बन्ध में तथा अगले और पिछले भवान्तरों के सम्बन्ध में बात की है। ऐसा बराबर याद आता है परन्तु वे कौन-कौन से भव और क्या-क्या बात है, वह याद नहीं आता। उन भवों की बात की, उनमें ऐसा कहा था कि 'यह राजकुमार भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले हैं।' उनके साथ सम्बन्धवाली गणधरपने की बात होने से वह बात आयी थी, यह निश्चित् स्पष्टरूप से सहज स्मरण में आता है। तीर्थंकरदेव के भवों के सम्बन्ध में क्या-क्या बात थी-वह स्पष्टरूप से स्मरण में नहीं आता।

(इस बात से सम्बन्धित प्रसंग के कारण यह बात लिखी जाती है)।

श्री कृपालु गुरुदेव के कृपामय उपकार को बारम्बार नमस्कार!

✧✧✧

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

अजोड़ रत्न कृपालु गुरुदेव के चरण-कमल में परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार

2004 माघ कृष्ण 2 के दिन आया हुआ स्मरण—

पूर्व भव में श्री सीमन्धर भगवान से सुना है, उसमें से स्मरण आता है कि यह राजकुमार भविष्य में धातकीखण्ड द्वीप के विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर होंगे। इनका नाम श्री सूर्यकीर्तिस्वामी तथा श्री सर्वांगस्वामी ऐसे दो प्रकार से नाम याद आते हैं अर्थात् दो प्रकार के नाम हों ऐसा याद आता है। यह देवाभाई इस राजकुमार के भविष्य में गणधर होनेवाले हैं, वे सूर्यकीर्ति राजा के अर्थात् सूर्यकीर्ति तीर्थंकर के देवेन्द्रकीर्ति नामक राजकुमार होंगे; यह लाभभाई इन राजकुमार के भविष्य में गणधर होनेवाले हैं, वे सूर्यकीर्ति राजा के अर्थात् सूर्यकीर्ति तीर्थंकर के दूसरे चन्द्रकीर्ति नामक राजकुमार होंगे अर्थात् सूर्यकीर्ति तीर्थंकर के देवेन्द्रकीर्ति और चन्द्रकीर्ति नामक पुत्र होंगे और उनके दोनों गणधर होंगे।

यह सब श्री सीमन्धर भगवान से सुना है, उसमें से याद आता है; यह स्मरण एकदम स्पष्ट है।

भावी तीर्थाधिनाथ कहान गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार!

जगत् उद्धारक परम कृपालु श्री सद्गुरुदेव (कानजी महाराजश्री) वे पूर्व भव के फतेहमंद राजकुमार, भविष्य में धातकीखण्ड द्वीप के विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर होंगे, ऐसा श्री सीमन्धर भगवान ने कहा है।

बलदेव, वासुदेव के स्वप्न की आपने हमें बात की, तत्पश्चात् यह विचार बहुत रहा करते थे, इसलिए यह स्मरण आया है।

www.vitragvani.com

यह स्मरण बारम्बार स्पष्टरूप से आया करता है। देवाभाई अर्थात् यह आत्मा, लाभभाई अर्थात् शान्ताबेन का आत्मा।

परम कृपालु ज्ञाननिधि गुरुदेव के परम उपकार को बारम्बार नमस्कार!

✧

अजोड़ रत्न परम कृपालु गुरुदेव के चरण-कमल में परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार

2004 चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को लिखा गया।

श्री सीमन्धर भगवान, द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप कहते थे; उनकी वाणी अनन्त-अनन्त रहस्यों से भरपूर थी। ऐसा स्मरण आया करता है; तीर्थंकर और गणधरपने की बात का बारम्बार स्मरण आया करता है। यह राजकुमार भविष्य में धातकीखण्ड द्वीप के विदेहक्षेत्र में श्री सूर्यकीर्तिस्वामी तथा श्री सर्वांगस्वामी नाम के तीर्थंकर होंगे, यह देवाभाई उनके देवेन्द्रकीर्ति नाम के गणधर तथा उनके पुत्र होनेवाले हैं। (देवेन्द्रकीर्ति कुमार का इस नाम सहित दूसरा भी नाम हो, ऐसा ख्याल में आता है।) यह लाभभाई उनके दूसरे चन्द्रकीर्ति नाम के गणधर तथा पुत्र होनेवाले हैं। इस सब बात का बारम्बार स्पष्टरूप से स्मरण आया करता है।

महाविदेहक्षेत्र के जिनमन्दिर बड़े-बड़े भव्य थे, ऐसा स्मरण आता है। कोई अलग प्रकार के रत्न मन्दिर की दीवारों में थे, उन रत्नों का प्रकाश ऐसा था कि सम्पूर्ण मन्दिर प्रकाश से छा रहा था; भगवान की प्रतिमाजी,

रत्नों के प्रकाशवाली, अद्भुत थी। हम सब जिनमन्दिर में दर्शन करने जाते थे, ऐसा स्मरण आता है। भगवान की प्रतिमाजी के सन्दर्भ में इतना स्मरण आता है। इससे विशेष वर्णन हो, इस प्रकार स्मरण में नहीं आता। (इस जीव ने पूर्व में देवाभाई के भव में जो देखा हो, वह याद आता है)।

ज्ञानसागर गुरुदेव के कृपामय उपकार
बारम्बार परम भक्ति से
नमस्कार।

✧✧

दिव्य ज्ञानमूर्ति, भारत के भगवान, परम कृपालु गुरुदेव के चरणकमल में परम भक्ति से नमस्कार

2010, आषाढ़ कृष्ण पंचमी के दिन स्मरण आया है कि देवलोक में आयुस्थिति पूरी होने पर परम कृपालु कहान गुरुदेव के आत्मा का इस जम्बूद्वीप में किसी भी क्षेत्र में राजकुमाररूप से जन्म होगा। इस क्षेत्र में किसी भी तीर्थंकर भगवान की उपस्थिति होगी, उनके घर पूज्य कहान गुरुदेव का जन्म होगा; वहाँ आप महान होंगे; वहाँ से निरतिचार मुनिपना पालन करके उच्च देवलोक में पूज्य गुरुदेव अहमिन्द्र होंगे; कौन से देवलोक में अहमिन्द्र होंगे, यह स्मरण में नहीं आता परन्तु अहमिन्द्र होंगे यह स्मरण में आता है। यह आत्मा भी और शान्ताबेन का आत्मा भी वहाँ आपके कुटुम्बी के रूप में हम दोनों देव जन्मेंगे। वहाँ देवलोक में भी हमारे आत्मा को आपका साथ रहेगा।

तीर्थंकर भगवान की समीपतावाले (पुत्ररूप से) मनुष्य भव में आपके अर्थात् पूज्य गुरुदेव को तीर्थंकरगोत्र बँधेगा। वहाँ से देव का भव करके आप धातकीखण्ड द्वीप के विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर भगवान जिनेन्द्रदेव होंगे।

यह, गुरुदेव के भवों की बात श्री सीमन्धर भगवान से पूर्व भव में सुनी है, उसमें से स्मरण में आयी है, यह बात एकदम स्पष्ट है। देवलोक से सीधा तीर्थंकरपना स्मरण में नहीं आता—ऐसी भव की सीधी सन्धि नहीं आती परन्तु अहमिन्द्रपने के पश्चात् तीर्थंकरपना होगा—ऐसी भव की सीधी सन्धि एकदम स्पष्टरूप से स्मरण में आती है।

सर्वत्र पूज्य गुरुदेव का ही परम प्रताप वर्त रहा है।

परमप्रतापी परम उपकारी कृपालु गुरुदेव को

बारम्बार नमस्कार

2004 बैशाख कृष्ण 6—

पूज्य कहान गुरुदेव जम्बूद्वीप के किसी भी क्षेत्र में तीर्थंकरदेव के घर जन्मेंगे - ऐसा स्मरण में आया था।

(इस विषय में अन्दर रहने की भावना है)

अन्तर में यह सब बातें घुलती होती हैं, इसलिए लिखा जाता है।

✧✧

भावी तीर्थंकर भगवन्त को परम भक्ति से
बारम्बार नमस्कार।
जीवन-आधार दिव्यज्ञानधारी परम कृपालु कहान गुरुदेव को
इस पामर दास का परम भक्ति से
बारम्बार नमस्कार

2014, परम कृपालु कहान गुरुदेव पूर्व भव में महाविदेहक्षेत्र में फतेहमंद नामक तेजस्वी राजकुमार थे। वहाँ श्री सीमन्धर भगवान की वाणी में ऐसा आया था कि यह राजकुमार (कहान गुरुदेव) भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले हैं — यह बात एकदम स्पष्टरूप से याद आती है और इन कहान गुरुदेव के प्रति बहुत महिमा आती है। श्री सीमन्धर भगवान की वाणी में फतेहमन्द राजकुमार के भवान्तर की बात आयी थी, उसके कारण और ज्ञान की किसी प्रकार की स्पष्टता के कारण राजकुमार के (कहान गुरुदेव के) कोई-कोई भव याद आते हैं और वह सब स्पष्टरूप से याद आता है।

यह राजकुमार (अर्थात् कहान गुरुदेव) थोड़े भवों पहले एक मनुष्य के भवरूप में थे, यह बराबर स्पष्टरूप से याद आता है; वहाँ मनुष्य भव में उनकी शक्ति दिव्य थी, इसलिए वे दिव्यतावाले पुरुष थे। उस भव में उन्हें पुण्य के फल का रस बहुत था। एक बार किसी कारणवश देव उन पर प्रसन्न हुए थे; किस कारण प्रसन्न हुए थे यह याद नहीं आता, परन्तु प्रसन्न हुए थे, यह बात बराबर याद आती है। देवों ने प्रसन्न होकर किसी प्रकार की सहायता उन्हें की थी और बहुत प्रसन्न होने से वे फतेहमंद राजकुमार के आत्मा को (अर्थात् कहान गुरुदेव के आत्मा को), उस

दिव्यतावाले भव में, मेरुपर्वत के शाश्वत जिनमन्दिर और शाश्वत जिनप्रतिमाओं के दर्शन करने ले गये थे।

उस मनुष्य भव में उन्हें अच्छे, सुगुणवाले कुटुम्बीजन थे अर्थात् उन्हें सुशील, सज्जनतावाला गृह-परिवार, माता-पिता इत्यादि कुटुम्ब था; उनका घर वैभवशाली था।

— यह सब बात एकदम स्पष्टरूप से, प्रत्यक्षता की तरह याद आती है और नि:शंकता बहुत आती है।

यह स्मरण कार्तिक कृष्ण एकम् के दिन थोड़ा-थोड़ा आया, तत्पश्चात् बढ़ते-बढ़ते दीवाली के दिन स्पष्टतापूर्वक हुआ। (कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2013) इस दिन यह स्मरण स्पष्टरूप से हुआ।

इस भव के पश्चात्, फतेहमन्द राजकुमार का (अर्थात् कहान गुरुदेव का), इस (दिव्य) मनुष्यपने के भव के बाद का दूसरा भव भी मनुष्यपने का हुआ; वहाँ भी वे पुण्यशाली थे, सर्व कार्यों में विजय प्राप्त करे, ऐसी अजब उनकी शक्ति थी। कौन से कार्यों में विजय प्राप्त की थी, यह स्पष्ट याद नहीं आता परन्तु विजय प्राप्त करते थे, यह बात याद आती है; यह सब बात स्पष्टरूप से याद आती है।

इस भव में उन्हें कितना ही गृह परिवार इत्यादि था। एक बार वे केवली भगवान का उपदेश सुनने गये थे और उपदेश सुनने के पश्चात् उन्होंने मुनिराज के दर्शन किये और भाव आने पर उन्होंने मुनि को अपने भवों की बात पूछी। मुनि ने भवों की बात कही। मुनिराज ने पूर्व भवों की और आगामी भवों की क्या बात कही यह याद नहीं आता परन्तु मुनिराज ने कहा कि तुम भवान्तर में तीर्थंकर होनेवाले हो, यह बात बराबर याद

www.vitragvani.com

आती है। (तीर्थंकर भगवान का द्रव्य अद्‌भुत होने से मुनिराज की वाणी में भी यह बात आयी थी।)

यह सब बात पूर्वभव में सीमन्धर भगवान से सुनी है और ज्ञान की किसी प्रकार की स्पष्टता के कारण याद आती है, नि:शंकरूप से स्पष्टरूप से याद आती है।

यह सब स्मरण कार्तिक कृष्ण 1 के दिन थोड़ा-थोड़ा आया, तत्पश्चात् बढ़ते-बढ़ते दीपावली के दिन स्पष्टतापूर्वक हुआ। (कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2013) इस दिन यह स्मरण स्पष्टरूप से हुआ।

इस भव के पश्चात् (कहान गुरुदेव का आत्मा) देवभव में गया, तत्पश्चात् पुण्य का रस मध्यम प्रकार का होता गया – ऐसा याद आता है और अमुक थोड़े साधारण भव करके देव के भव के पश्चात् महाविदेहक्षेत्र में जन्मे, ऐसा याद आता है। परन्तु कौन से, कितने भव – ऐसा स्पष्टरूप से याद नहीं आता। यह स्मरण भी उपरोक्त स्मरण के साथ ही आया था।

2014 कार्तिक शुक्ल बारस को प्रात: काल स्वप्न आया था कि पहले मनुष्य के भव में अर्थात् दैविय पुरुष के भव में रथ में बैठकर वह दैविय पुरुष तीर्थ-तीर्थ में भिन्न यात्रा करने निकले थे, सुगुणोंवाले कुटुम्बीजन और नौकर-चाकर साथ में थे, वन-जंगल में रथ चला जा रहा था, स्थान-स्थान पर जिनप्रतिमा के, जिनमन्दिरों के दर्शन करते-करते, यात्रा करते थे। ऐसा स्वप्न आया था, यह स्वप्न एकदम स्पष्ट था।

परम उपकारी अपूर्व महिमावन्त गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमस्कार

2014, मार्गशीर्ष कृष्ण 7 —

पूर्व भव में इस जीव ने देवाभाई के भव में सीमन्धर भगवान की वाणी सुनी थी, उसमें से जो शक्ति प्रमाण ग्रहण हुआ, उसमें से थोड़ा-थोड़ा याद आता है। भगवान क्रोड़ाक्रोड़ सागर का माप बतलाते थे। क्या माप, वह याद नहीं आता। यह जीव ऐसा परिणाम करे तो ऐसे सागर का बन्ध होता है। वह सागर किसे कहते हैं, यह भगवान बतलाते थे।

भगवान की वाणी प्रशमरसझरती ऐसी लगती थी कि मानो प्रशमरस का समुद्र झरता हो, सुनने में ऐसी मधुरता लगे कि जो वर्णन न किया जा सके।

भगवान की प्रशमरसझरती वाणी ऐसी रहस्यभरी मधुर कि सुनकर जड़-चैतन्य के भेद पड़ जायें।

ऐसी आश्चर्य भरी, रहस्य भरी वाणी सुनकर ऐसा होता था कि भगवान से कुछ गुप्त नहीं है, भगवान की वाणी में सब ही आता है, चौदह ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण स्वरूप भगवान की वाणी में आता है। ऐसी वाणी सुनकर चित्त तो एकदम स्थिर हो जाये! अभी स्मरण आने पर भी चित्त में एकदम शान्ति हो जाती है और बहुत आनन्द आता है।

भगवान की वाणी में उत्पाद-व्यय-ध्रुव का स्वरूप, स्वद्रव्य-परद्रव्य की भिन्नता का स्वरूप, बन्धन-मुक्ति का स्वरूप, निश्चय-व्यवहार का स्वरूप अद्भुत रहस्य भरपूर, सूक्ष्म, गहन—प्रशमरसझरती वाणी में—आता था। इन सबका विस्तार क्या था, वह याद नहीं आता।

www.vitragvani.com

2014, मार्गशीर्ष कृष्ण 13 —

श्री सीमन्धर भगवान की वाणी मानो समुद्र उछला हो, ऐसी घोर गम्भीर, उपमा न दी जा सके ऐसी, चारों ओर से अपेक्षित, सत् के सूक्ष्म अंश प्रकाशित करनेवाली, स्वद्रव्य-परद्रव्य की स्वतन्त्रता की प्रधानता बतलानेवाली चारों ओर से सूक्ष्म रहस्यसहित पूर्ण स्वरूप प्रकाशित करनेवाली ऐसी अद्‌भुत याद आती है, महिमा बहुत आती है। भगवान की अभेद वाणी में अनन्त भावों का प्रकाश होता है — इत्यादि याद आने पर महिमा बहुत आती है; इसकी विशेष स्पष्टता याद नहीं आती।

2014, मार्गशीर्ष कृष्ण 7—

यह जीव इस भव से पहले महाविदेहक्षेत्र में देवा...भाई नाम से एक सेठ के यहाँ पुत्र था; उससे पहले देवभव में था। उस देवलोक का थोड़ा वर्णन याद आता है, स्पष्टता के कारण साक्षात् जैसा ज्ञात होता हो, ऐसा भासता है।

देवलोक की भूमि रत्न की थी; नीले, गुलाबी, आदि रंगों के थे; दीवारें रत्न की थीं; कमान जैसे आकारवाले दरवाजे थे, उनमें पंचरंगी रत्न थे; रत्नों के प्रकाश से सर्व प्रकाशमय था। देवलोक के बाग-बगीचा, महल, सर्व रत्नमय था। बाग-बगीचा सब रत्नों का होने पर भी लहराते थे। प्रत्येक महल में अलग-अलग रंग के और अलग-अलग प्रकार के रत्न थे; देवलोक में घूमने के स्थान अलग रत्नमय थे; बैठने के स्थान, आसन सब अलग थे; जहाँ देव नाटक दिखाते वह स्थान अलग; देवों को पहनने के, अनेक प्रकार के रत्नों के वस्त्राभूषण के पिटारा महलों में थे।

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

सुशोभित जिनालय थे; कमान के आकारवाले, स्फटिक जैसे सफेद रत्न के बड़े ऊँचे द्वार जिनालयों में थे। देवलोक में जिनालय में पूजा इत्यादि देव करते थे, शाश्वत पुस्तकें रत्नमय थी, पुट्ठा रत्न के, अक्षर रत्न के थे। देवलोक की सर्व चीज रत्नमय थी। व्यवहार से वह स्वर्गपुरी आश्चर्यकारी है।

सुशोभित जिनालय, उनमें समवसरण थे; नदी, तालाब, बड़े-बड़े चमकते रत्न के गढ़, भगवान का सिंहासन, जिनालय के शिखर बड़े-बड़े अनेक कारीगरी से भरपूर, रत्नों के, वर्णन न किया जा सके ऐसे थे; — जादूभरी समवसरण की रचना थी। जो रचना थी, उसमें से सब याद आता नहीं, थोड़ा ऊपर-अनुसार याद आता है; उसके साथ स्पष्टता के कारण निःशंकता बहुत आती है।

यह रही रत्नमय दीवार, यह रहे रत्नमय जिनालय, यह रहे अलग-अलग महल के स्थान, यह रहे घुमने के बाग-बगीचे इत्यादि के स्थान, यह रहे अलग-अलग महल—ऐसा स्पष्टरूप से साक्षात् जैसा ज्ञात होता है परन्तु सब कैसे रत्न के, कैसी कारीगरीवाले हैं—ऐसे उनका विस्तार ज्ञात नहीं होता; सब रत्न का है, ऐसा ज्ञात होता है परन्तु विस्तार ज्ञात नहीं होता।

देवलोक अद्भुत प्रकाशमय, — सफेद रत्न, लाल रत्न, गुलाबी रत्न — अनेक प्रकार के रत्नमय याद आता है।

देवलोक में से हम सब देव, भगवान के जन्माभिषेक के लिये मेरुपर्वत पर गये हों उस कारण से अथवा किसी भी कारण से मेरुपर्वत थोड़ा-थोड़ा याद आता है, विशेषरूप से याद नहीं आता।

www.vitragvani.com

द्वीप समुद्र भी थोड़े-थोड़े याद आते हैं। वे, स्पष्टता के कारण मानो साक्षात् ज्ञात होते हों वैसे भासित होते हैं।

यह रहा समुद्र, ये रहे पर्वत, यह रहा द्वीप, यह रही चक्रवर्ती की नगरी, इत्यादि नगरियें हैं वैसे ज्ञात होते हैं परन्तु उनका विस्तार ज्ञात नहीं होता। कोई पर्वत चाँदी का, कोई रत्न का है; — यह रहा चाँदी का, यह रहा रत्न का—ऐसा ज्ञात होता है परन्तु उनका विस्तार ज्ञात नहीं होता। यह रहा समुद्र इत्यादि, ऐसे ज्ञात होता है परन्तु विस्तार ज्ञात नहीं होता।

भगवान की ध्वनि में इस जीव ने पूर्व में देवाभाई के भव में भव इत्यादि का वर्णन सुना हो अथवा देवलोक में, मेरुपर्वत जो-जो देखा हो वह याद आता हो और स्पष्टता के कारण याद आता हो, ऐसे सभी कारण हो परन्तु ज्ञात होता है, वह यथार्थ है।

2014, मार्गशीर्ष कृष्ण 10—

मेरु के जिनालय, मेरु के वन अद्‌भुत थे। मेरुपर्वत चमकीला, शोभित और विशाल था। मेरुपर्वत के जिनालयों में लाल रत्न के शिखर थे, गुलाबी रत्न के शिखर थे, जामुनी (रंग जैसे) रत्न के शिखर थे — विविध रंगों के शिखर थे, शिखरों में अनेक प्रकार की कारीगरी थी। नये-नये रंग के रत्नजड़ित मन्दिर थे। सफेद रत्न की प्रतिमा, लाल रत्न की प्रतिमा, गुलाबी रत्न की प्रतिमा, नीले रत्न की प्रतिमा, जामुनी रत्न की प्रतिमा थी। अनेक प्रकार के रंग की प्रतिमा ख्याल में आती हैं। उनके साथ प्रतिमाजी के दर्शन मानो होते हों, ऐसा लगता है। यह रहे प्रतिमाजी, यह रहे जिनालय—ऐसा ज्ञात होता है परन्तु उनका माप कितना है, यह याद

नहीं आता। बड़ा है इतना याद आता है परन्तु विशेष विस्तार याद नहीं आता। किसी भी कारण से यह याद आता है, वह यथार्थ है।

स्पष्टता के कारण सीमन्धर भगवान के साक्षात् जैसे दर्शन मानो होते हों, ऐसा लगता है। यह रहे सीमन्धर भगवान, ऐसा लगता है; भगवान का, क्षण भर, विरह भूलने में आ जाता हो वैसा लगता है। हृदय उल्लसित हो जाता है, महिमा बहुत आती है; भगवान की मुद्रा का स्पष्टीकरण करना नहीं आता, अद्‌भुतता भासित होती है।

2014, मार्गशीर्ष शुक्ल 1 —

मेरु के शाश्वत प्रतिमा प्रकाशमय रत्न की थी। मेरुपर्वत के जिनालय में सब रत्नमय होने पर भी वृक्ष, पत्ते लहरा रहे हैं। समवसरण में भी वनस्पति नहीं होने पर भी वृक्ष, पत्ते लहरा रहे हैं। शाश्वत जिनालयों के शिखरों की पंक्ति अद्‌भुत थी, रंग-रंग के प्रकाशवाले शिखर अद्‌भुत थे।

एक पर्वत पर सीमन्धर भगवान का समवसरण था; समवसरण में भगवान कमल इत्यादि में विराजमान थे। कमल इत्यादि में भगवान ऐसे सुन्दर लगते थे! इत्यादि याद आने पर हृदय उल्लसित हो जाता है।

भगवान के, जिनालय के, जिनप्रतिमा के किसी प्रकार से स्पष्ट दर्शन होने पर महिमा बहुत आती है, अद्‌भुतता भासित होती है। इस सबका विशेष विस्तार याद नहीं आता।

2014, मार्गशीर्ष कृष्ण 11 —

सीमन्धर भगवान से भविष्य की कितनी ही बात सुनीं थी, उसमें

से कितनी ही बात याद आती है और कितनी ही दूसरे किसी कारण से अर्थात् ज्ञान की स्पष्टता से याद आती हो परन्तु याद आती है, वह यथार्थ है।

परम कृपालु पूज्य कहान गुरुदेव इस भव में हैं, यहाँ से देवलोक में जायेंगे; वहाँ से, किसी क्षेत्र की जमीन सुन्दर और हरियाली होगी वहाँ, कोई धर्मधुरन्धर ऐसे तीर्थंकर राजा के घर उनके पुत्ररूप से परम कृपालु कहान गुरुदेव का जन्म होगा। एक सुन्दर महल में माता सो रही होंगी, उन्हें शुभ स्वप्न आयेंगे, वहाँ कहान गुरुदेव का जन्म होगा।

उन तीर्थंकर भगवान का नाम 'सुजय' अथवा 'जय' होगा; पीछे लम्बा नाम है परन्तु याद नहीं आता। पूज्य गुरुदेव उस भव में हू-ब-हू मुनिपना पालन कर देवलोक में अहमिन्द्र होंगे और हमारे दोनों के आत्मा को मनुष्य में और देव में पूज्य गुरुदेव का साथ रहेगा; वहाँ से धातकीखण्ड द्वीप में परमकृपालु कहान गुरुदेव तीर्थंकररूप से जन्मेंगे और यह आत्मा अर्थात् देवाभाई का आत्मा उनके गणधर तथा पुत्ररूप से जन्मेंगे और शान्ताबेन का आत्मा अर्थात् लाभभाई का आत्मा उनके गणधर तथा पुत्ररूप में जन्मेंगे।

यहाँ से पूज्य कहान गुरुदेव देवलोक में जायेंगे, वहाँ से तीर्थंकर भगवान के घर जन्मेंगे और यह आत्मा अर्थात् देवाभाई का आत्मा और लाभभाई का आत्मा उनके परिवाररूप से जन्मेंगे। पूज्य गुरुदेव वहाँ से मुनिपना पालन कर उच्च देवलोक में जायेंगे, वहाँ से परम कृपालु कहान गुरुदेव धातकीखण्ड द्वीप में तीर्थंकररूप से जन्मेंगे अर्थात् सूर्यकीर्तिस्वामी नाम के तीर्थंकर भगवान होंगे। यह बात महाविदेहक्षेत्र

में, समवसरण में सीमन्धर भगवान इत्यादि के पास से सुनी है, ऐसा स्पष्टरूप से याद आता है, निःशंकता बहुत आती है।

यह सब प्रताप गुरुदेव का ही है।

भावी तीर्थङ्कर भगवान परम कृपालु कहान गुरुदेव के चरण-कमलों में बारम्बार परम भक्ति से नमस्कार

हे गुरुदेव! आपके चरणों में मैं क्या धरूँ? सब प्रताप आपका ही है, इस पामर सेवक पर आपने अपार उपकार किया है।

दिव्य ज्ञानस्वरूप, चैतन्य का चमत्कार प्रगटानेवाले और प्रकाशित करनेवाले, दिव्य अमृत बरसानेवाले गुरुदेव के चरणकमल में बारम्बार नमस्कार

(इस विषय में अन्दर रहने की भावना है।)

पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में उपयोग की सहज एकाग्रता होने पर इस धारा की शुरुआत हुई, उन परम उपकारी गुरुदेव के चरणकमल में बारम्बार नमस्कार।

परम उपकारी, श्रुतसमुद्र, भारत के अजोड़ रत्न, परम महिमावन्त गुरुदेव को परमभक्ति से बारम्बार नमस्कार

2018, आषाढ़ शुक्ल में लिखा गया —

2018, ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी से लेकर आषाढ़ कृष्ण एकम तक में

परम कृपालु गुरुदेव के परम प्रताप से कितनी ही बात उपयोग की सहज एकाग्रता होने पर जानने में आयी, स्मरण में आयी, देखने में आयी, उन परम उपकारी (कहान) गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमस्कार।

उल्लास आने से यह सब लिखा जाता है।

इस मध्यलोक में देवों के नगर हैं, वे इस प्रकार ज्ञात होते हैं कि यह रहे देवों के नगर, यह रहे पर्वत, यह रहे वन—उनमें कोई चाँदी जैसे चमकते, कोई हरे रत्न जैसे चमकते पहाड़ दिखायी देते हैं; इनका विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता। देवों के महल दिव्यतावाले हैं; वे महल वन में, पर्वत पर नदी के पास-मध्यलोक में जगह-जगह देवों के महल हैं। अनेक प्रकार के रत्नोंवाले सुशोभित हैं, अनेक प्रकार के दिव्य प्रकाशमय हैं, रत्नजड़ित रास्ते हैं, रत्नों से सुशोभित देवों के घूमने के स्थान हैं, देवों के नगर अद्‌भुत हैं। यह रहे देवों के नगर, ऐसा ज्ञात होता है। हरा, सफेद, लाल इत्यादि रंग-बिरंगे बड़े सुशोभित महल हैं। दिव्य वैभववाले जिनमन्दिर देखने में आते हैं, वे दिव्य प्रकाशमय रत्नों से सुशोभित हैं। महिमा बहुत आती है।

भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अस्ति ज्ञात होती है। यह रहे भिन्न-भिन्न क्षेत्र, ऐसा ज्ञात होता है परन्तु उनका विस्तार ज्ञात नहीं होता। रत्न जड़ित बड़े-बड़े दरवाजे खण्डों में हैं, ऐसा ज्ञात होता है।

यह सब देवों के नगर की अस्ति, अलग-अलग खण्डों की अस्ति, रंग-बेरंगी महल, जिनमंदिर की दिव्यता इत्यादि—प्रत्यक्ष की तरह ज्ञात होते हैं। उनका यह विस्तार पूर्व में देखा हुआ-सुना हुआ हो, उसमें से याद आता है और ज्ञान की निर्मलता के कारण प्रत्यक्ष की तरह ज्ञात होता है। जो ज्ञात होता है, वह निःसंशय है।

उपयोग की एकाग्रता होने पर नरक की अस्ति, नरक की पृथ्वी नजर पड़ती है। नरक की भूमि देखने पर उपयोग सहज चला जाता है।

नरक की भूमि पर अशुचि का कादव है, वह कादव दुर्गन्ध से भरा हुआ है; खून, माँस, हड्डियाँ जैसे परिणमन से परिणमित भूमि में सड़ा हुआ दुर्गन्धमय कादव है। ऐसी दुर्गन्धमय भूमि में नारकी जीव रहते हैं, वैसे सड़े हुए कादव में नारकी जीव जीवनपर्यन्त रहते हैं; नरक में अग्नि की बड़ी-बड़ी लपटें हैं, जिनकी उष्णता दूर तक चली जाती है। नरक की भूमि अति उग्र उष्णतारूप से परिणमित है, बड़ी अग्नि की भट्ठियाँ जलती है; लोही इत्यादि जैसी अशुचि से भरपूर कुण्ड हैं, वे कुण्ड चमार के घर से भी विशेष दुर्गन्धमय है।

भाला, बरछी, छुरी, तलवार, आदि शस्त्रोंरूप परिणमित स्थान हैं। ऐसे शस्त्रों से भरी हुई भूमि है।

दूर तक जिसकी सर्दी जावे ऐसे दुर्गन्धयुक्त, बर्फ जैसे शीतल पहाड़ हैं, विष्टा आदि के स्थानों से भी अधिक दुर्गन्धमय है; वे पहाड़ बरछी, भाला इत्यादि शस्त्रों जैसे परिणमन से परिणमित हैं।

नरक की अशुचिमय कादववाली दूसरे जीवों से सहन न की जा सके, ऐसी अति उग्र दुर्गन्ध में नारकी जीव रहते हैं; अतिशय प्रतिकूलता के प्रकारों में, अनेक शस्त्रोंरूप से परिणमित स्थानों में नारकी जीव रहते हैं; अतिशय दुःख में जीवन जीते हैं; नारकी जीव परस्पर में लड़ते रहते हैं, कहीं उन्हें शान्ति का स्थान नहीं है। ऐसी अग्नि, दुर्गन्ध और शस्त्रों से भरपूर स्थानों में नारकी जीव निरन्तर दुःखी होते हैं, विलाप करते हैं, रुदन करते हैं। सुख की इच्छा से वे जहाँ जायें वहाँ दुःखी होते हैं।

यह बात देखने में आने पर, जानने में आने पर, दया आती है, करुणा आती है, वैराग्य आता है; यह सब प्रत्यक्ष नजर से देखती होऊँ, इस प्रकार ज्ञात होता है।

नरक की अशुचिमय भूमि किसी प्रकार की ज्ञान की निर्मलता के कारण प्रत्यक्षवत् ज्ञात होती है।

यह बात पूर्व में देवभव में देखी हो, उसमें से याद आती है। नरक की अशुचिमय भूमि, नरक की अतिशय प्रतिकूलता, वह प्रत्यक्षवत् ज्ञात होती है। जो ज्ञात होता है, वह निःसंशय है।

मेरुपर्वत में बड़े समवसरण हैं, बड़े-बड़े चमकीले रत्न के पत्तों की वनभूमि है, बड़ी प्रतिमायें हैं, रंग-बिरंगे जगजगाहट करते हों वैसे दिखायी देते हैं। गुलाबी रत्न के, पीले रत्न के, जामुनी रत्न के, सफेद रत्न के — विविध रत्न के जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमायें हैं, ऐसा ज्ञात होता है। बड़े मन्दिर हैं, मन्दिर में अनेक प्रकार के शिखरों की पंक्ति है, विविध रंग के रत्नजड़ित, स्वर्णजड़ित शिखर हैं; लाल, गुलाबी, सफेद रत्नजड़ित अनेक प्रकार के शिखर हैं। विविध रत्नजड़ित अनेक प्रकार के शिखर जगजगाहट करते हुए नजर में पड़ते हैं। तीर्थंकर भगवान के मन्दिर देखकर हृदय नम्रीभूत हो जाता है, उल्लास आता है, बहुमान आता है।

मेरुपर्वत इत्यादि बारम्बार लक्ष्य में निःशंकरूप से आया करते हैं; इसलिए लिखा जाता है।

वैमानिक देवों के विमान ऊपर हैं, वे बहुत दिव्यतावाले, बड़े, विशाल और जीवों को आश्चर्यकारी हैं। अनेक रत्नजड़ित बड़े-बड़े कमानयुक्त महल हैं, उनमें रत्नजड़ित प्रकाशमान बड़े स्तम्भ हैं। विविध

www.vitragvani.com

रंग के रत्नों के महल अद्‌भुत दिव्यतावाले प्रकाशमान हैं, वहाँ फल-फूल रत्नों के हैं। रत्नों के फलों से देव, भगवान की पूजा करते हैं। वहाँ रत्नों के पत्ते और रत्नों के फलों से भरे हुए वन हैं, अद्‌भुत जिनमन्दिर हैं, स्फटिक रत्न के और विविध रत्नों से भरपूर जिनमन्दिर हैं, आश्चर्यकारी जिनप्रतिमायें हैं, जिनकी शोभा अद्‌भुत है।

यह सब प्रत्यक्षवत् ज्ञात होता है, विशेष भाषा में कहा जा सके वैसा विस्तार ज्ञात नहीं होता। देवों की विभूति आश्चर्यकारी और दिव्यता-भरी व्यवहार से है।

इसमें से यह बात पूर्व में देवभव में देखी हो, उसके कारण याद आती है और ज्ञान की निर्मलता के कारण प्रत्यक्षवत् ज्ञात होती है। यह रहे मेरुपर्वत के जिनमन्दिर, यह रहे वैमानिक देवों के महल, यह रही नरक की अशुचिमय भूमि, यह रहे मध्य लोक के देवों के नगर—ऐसा निःशंकरूप से प्रत्यक्षवत् ज्ञात होता है। देवभव में से कितनी ही बात याद आती है उसके साथ यह सब स्थान भी प्रत्यक्षवत् नजर में पड़ते हैं और जिनमन्दिर देखकर बहुत महिमा आती है और उपयोग की एकाग्रता होने पर उपयोग बारम्बार वहाँ जाता है। इस सब बात का विशेष विस्तार याद नहीं आता।

यह सर्व, गुरुदेव का परम प्रताप है।

2018, अषाढ़ शुक्ल दूसरी पंचमी को आया हुआ—

भगवान का समवसरण बारम्बार याद आता है। बड़े-बड़े रत्न के पत्रों की वनभूमि, बड़ा श्री मण्डप—(जिसके रत्नों की प्रभा चारों ओर छा

रही है-ऐसा मण्डप)—बड़े आकाश स्पर्शित मानस्तम्भ याद आते हैं। विविध वस्तुओं से अनोखा शृंगारित मानस्तम्भ दिव्य और आश्चर्यकारी है। उसका विस्तार विशेष याद नहीं आता (अनेक प्रकार की दैवीय वस्तुओं के प्रदर्शन से भरपूर समवसरण था। विशेष विस्तार याद नहीं आता)।

भगवान की वाणी मानो समुद्र उछलता हो, ऐसी परम अद्‌भुत लगती है। भगवान की वाणी में भेदज्ञान की बात बारम्बार आती थी, ऐसा याद आता है। जिसे सुनकर दूसरे जीव भवपार हो जायें, ऐसी परम रहस्य से भरपूर भगवान की वाणी है। विशेष सन्धिपूर्वक भगवान की वाणी याद नहीं आती। भगवान की वाणी अनन्त पहलुओं से भरपूर होती है; परन्तु इस जीव के पूर्व भव में—देवाभाई के भव में—जो ग्रहण हुआ हो, वह याद आता है। पूर्व भव में अर्थात् इस भव पहले (कहान गुरुदेव) का आत्मा फतेहमन्द राजकुमार रूप से था और शान्ताबेन का आत्मा लाभभाई रूप से था और मैं अर्थात् यह आत्मा देवाभाई रूप से था; वहाँ सीमन्धर भगवान के समवसरण में जाने से उस समय भगवान की वाणी में से जो ग्रहण हुआ हो, वह याद आता है।

आत्मा में अनन्त गुण-पर्याय उछलते हैं; चैतन्य गुणरत्नाकर है; आत्मा में अनन्त सूक्ष्म भावांश हैं और सूक्ष्म अनन्त रसांश उत्पन्न होते हैं; इत्यादि बात अनन्त गहनता से भरपूर आती थी।

ज्ञानगुण की अनन्त पर्यायों की प्रगटता, जीव अस्ति है, पुद्‌गल अस्ति है, आत्मा सुधा का सागर है, सुधा का प्रवाह बहता है, इत्यादि अनन्त पहलुओं से भरपूर, गहन रहस्य से भरपूर, मानो समुद्र उछलता हो, इस प्रकार भगवान की वाणी छूटती थी।

भगवान की वाणी शान्तरस से भरपूर, मीठी मधुर, अमृत रस जैसी, मीठा मेघ गरजता हो वैसी गम्भीर, क्षणमात्र में चौदह ब्रह्माण्ड का स्वरूप कहनेवाली अद्भुत है। सूक्ष्म रहस्य से भरपूर, गहरी-गहरी बात कहनेवाली, चारों ओर से शीघ्र पहुँच जानेवाली, समुद्र गरजता हो और समुद्र की तरंगें उछलती हों, वैसी अद्भुत है। सुननेवाले को शीघ्र चैतन्यस्वरूप की प्राप्ति हो जाये, वैसी है।

सीमन्धर भगवान की वाणी की क्या महिमा हो! यह तो उल्लास आ जाने से लिखा जाता है। अगणित अनन्त स्वभावी और अगणित अनेक विशिष्ट वाचकों (शब्दों) से भरपूर, अनन्त गम्भीरता से भरपूर वाणी की क्या बात हो! भगवान की वाणी एकाक्षरी होने पर भी अनन्त पहलुओं से भरपूर होती है।

समवसरण में सीमन्धर भगवान के दर्शन होने पर बहुत उल्लास आता है, वन्दन हो जाता है।

गणधदेव और मुनिराज याद आते हैं और हृदय नम्रीभूत हो जाता है।

देवलोक में रत्नजड़ित शाश्वत् शास्त्र हैं, जिसमें रत्नजड़ित अक्षर हैं। बड़े-बड़े रत्नजड़ित शास्त्र हैं, उनमें चौदह ब्रह्माण्ड के स्वरूप का वर्णन है। जिसमें—

सत् सुहावना अखण्ड विश्व,
स्वाधीन सुखकारी तत्त्व,
सम्यक्रूप से परिणमित दृष्टि,
द्रव्य की सामर्थ्य,

गुणसागर चैतन्य आत्मा,

आनन्दस्वरूपी आत्मा,

चैतन्यसूर्य का प्रकाश

—इत्यादि बातों का स्वरूप रहस्य से भरपूर विस्तार से भरपूर है – ऐसा याद आता है।

भगवान की वाणी में भवान्तर की बात आयी थी, इससे (कहान) गुरुदेव का आत्मा पूर्व भव में राजकुमार था—इत्यादि विगत काल के दिव्यतावाले भव और आगामी काल के दिव्यभवों की बातें बारम्बार याद आया करती है; और भविष्य में तीर्थङ्कर होनेवाले हैं, यह बात बारम्बार याद आती है और महिमा बहुत आती है।

महान आत्मा (कहान) गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमस्कार

यह सब गुरुदेव का परम प्रताप है; यह सब आपका है। परम आश्चर्यकारी, श्रुतसमुद्र, भावी के भगवान गुरुदेव के चरणकमल में परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार।

गुरुदेव के व्याख्यान में उपयोग की एकाग्रता सहज होने पर इस धारा की शुरुआत हुई, उन परम उपकारी गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमस्कार।

यह सब, परम प्रतापी ऐसे गुरुदेव का ही प्रताप है।

अद्‌भुत आत्मा ऐसे कहान गुरुदेव के चरणकमल में बारम्बार नमस्कार

☆☆☆

2019 माघ माह—

इस प्रकार की धुन बहुत महीनों तक रहा करती थी और जिनमन्दिरों इत्यादि के दर्शन से आश्चर्य होता था। आहा! कुदरत का ऐसा स्वरूप है! ऐसा बारम्बार आश्चर्य हुआ करता था।

अचिन्त्य आत्मा कहान गुरुदेव के महिमावन्त भव बारम्बार याद आया करते हैं और परम महिमावन्त कृपालु गुरुदेव के चरणों में हृदय भक्ति से नम्रीभूत हो जाता है।

शुद्धात्मद्रव्य की तथा शुद्धपरिणति की मुख्यता, महिमा और श्रुतचिन्तवन की महिमा लगने से श्रुतचिन्तवन की ओर उपयोग का झुकाव रहा करे और शुद्धात्मदेव मुख्य रहकर शुद्धपरिणति की ओर पुरुषार्थ की गति, परिणमन की गति सहज रहा करे, तथापि सहजरूप से उपयोग की एकाग्रता होने पर, उपयोग भवान्तर देखने की ओर, जानने की ओर, मेरुपर्वत, देवलोक इत्यादि देखने की ओर, जानने की ओर चला जाता है और शाश्वत् जिनालयों के दर्शन होने पर महिमा बहुत आती है।

यह सब प्रताप श्री कृपालु गुरुदेव का ही है।

अपूर्व गुणधारी पूज्य गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमस्कार। परमागम शास्त्रों के प्रकाशनहार, अनुपम श्रुतधारी, जिनकी वाणी सुनने पर चैतन्यश्रुत खुले—ऐसे गुरुदेव की क्या महिमा हो! जिन्होंने समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड़ इत्यादि शास्त्र तथा धवल, जयधवल, महाधवल इत्यादि शास्त्रों की महिमा प्रकाशित की है, उन शास्त्रों की सूक्ष्मता को प्रकाशित करनेवाले, केवलज्ञान स्वभाव की

सूक्ष्मता का ज्ञान करानेवाले, ज्ञायकद्रव्य की महिमा प्रकाशित करनेवाले, उसका गहन स्वरूप बतलानेवाले, मुक्तिमार्ग को बतलानेवाले, ऐसे कहान गुरुदेव के गुणों का क्या वर्णन हो!

समयसार, प्रवचनसार इत्यादि सर्व शास्त्रों का गहन रहस्य प्रकाशक, गहरे अर्थ खोलवाले, चैतन्यद्रव्य की अनुपम महिमा का भान करानेवाले, सम्यक्मार्ग की ओर ले जानेवाले, जिनके मुखकमल से अमृतधारा बरसती है, जिनके चैतन्य के प्रदेश-प्रदेश में श्रुतज्ञान के दीपक प्रकाशित हो रहे हैं, श्रुत की पर्यायें प्रगट हो रही हैं, जो श्रुतरस में सराबोर हैं-ऐसे ज्ञानावतारी महिमावन्त दिव्यमूर्ति कहान गुरुदेव इस भारत में अजोड़ हैं। उन दिव्यमूर्ति के दर्शन से, जिनकी श्रुतधारा के दर्शन से-श्रवण से चैतन्य में सुखादि निधि प्रगट होती है—ऐसे गुरुदेव के चरण-कमल में हृदय बारम्बार नम्रीभूत हो जाता है, अन्तर उल्लसित हो जाता है।

परम कृपालु गुरुदेव के चरण-कमल में बारम्बार परम भक्ति से वन्दन हो।

2018, जेठ शुक्ल सप्तमी को ऐसा स्वप्न आया था कि —

पूज्य गुरुदेव की वाणी का अनुपमेय सौष्ठव झरो और भाग्य का काल।

यह स्वप्न सबेरे सवा पाँच बजे आया था।

✧✧✧

www.vitragvani.com

2022, फाल्गुन में लिखा गया—

सातिशय ज्ञानधारी परम प्रतापी कहान गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार

2022, फाल्गुन शुक्ल पंचमी से 8-10 दिन तक प्रायः, गुरुदेव के व्याख्यान में उपयोग सूक्ष्म हो जाता है।

पूर्व भव बारम्बार याद आया करते हैं।

यह रत्नोंमय अद्‌भुत देवलोक, गुरुदेव के प्रतापी भवों की बारम्बार स्पष्टता, समवसरण का बारम्बार याद आना, यह तालाब, रत्नमय रास्ता, दरवाजा, मन्दिर, समवसरण इत्यादि बहुत याद आते हैं। विशेष विस्तार याद नहीं आता।

वहाँ के—महाविदेह क्षेत्र के—देवाभाई के (हमारे) बड़े महल जैसे घर याद आते हैं। गाय, भैंस इत्यादि घर में थे। वहाँ हमारा कुटुम्ब था। माता-पिता, काका इत्यादि कुटुम्ब याद आता है। बाग, बगीचा से शोभायमान घर थे; हमारे (देवाभाई के) घर के समीप रत्नस्तम्भ से शोभित जिनमन्दिर था, वहाँ हम पूजा करने जाते थे। हमारे घर अनेक प्रकार के शुद्ध भोजन बनते थे; कभी-कभी मुनिराज पधारते थे। राजभुवन के समीप हमारा घर था।

फतेहमन्द राजकुमार बारम्बार याद आते हैं। हमारे घर के सामने एक जैनन्द अथवा जयंद नामक धार्मिक गुणोंवाले भाई रहते थे। वे भाई जैसे सम्बन्धवाले थे। वह भी याद आता है। रत्न का जिनमन्दिर, मुनिराज इत्यादि याद आने पर चित्त में खेद होता है। विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।

www.vitragvani.com

यह सब बात अधिक स्पष्टरूप से याद आने पर चित्त में दु:ख होता है, कि कहाँ वह क्षेत्र ! कहाँ वह नगर ! कहाँ वह भगवान के दर्शन ! वाणी ! इत्यादि याद आने पर खेद होता है। कितनी ही बार एकाग्रता होने पर यह क्षेत्र विस्मृत हो जाता है और वहाँ ही होऊँ ऐसा हो जाता है।

उस नगर के रास्ते, मकान इत्यादि याद आते हैं; सीमन्धर भगवान का सुयोग बारम्बार याद आता है। अरे रे ! जीव अपने ही परिणाम से कहाँ से कहाँ आता है !

रत्नमय देवलोक, जिनमन्दिर, भगवान का अद्भुत समवसरण, नरक का दु:ख इत्यादि बारम्बार ज्ञात होने पर वैराग्य आता है।

भगवान के दर्शन, मुनिराज के दर्शन, भगवान की मधुर अद्भुत वाणी—चैतन्य के अनन्त गुणों को कहनेवाली—वह सब बातें बारम्बार याद आने पर दु:ख होता है।

सीमन्धर भगवान की वाणी, द्रव्यों के सामान्य और विशेष स्वभाव को प्रकाशित करनेवाली, अनन्त रहस्यों से भरपूर थी, ऐसा याद आता है परन्तु उसका विशेष विस्तार याद नहीं आता। इस सब बात का विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता, अन्तर में भावना घुलती होने से लिखा जाता है।

परम कृपालु कहान गुरुदेव का इस पंचम काल में अद्वितीय अवतार है, जिनके दर्शन और अमृतमय वाणी भगवान के विरह को भुलावे ऐसी हैं, जिनकी वाणी की अनुपम धारा चैतन्य को पलटावे ऐसी अद्भुत है। अहो ! ऐसे परम उपकारी कहान गुरुदेव की क्या महिमा हो !

परम कृपालु गुरुदेव के चरणों में परम भक्ति से नमस्कार !

✧✧✧

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

2023, आसोज माह—

श्रुतसमुद्र परम उपकारी गुरुदेव को नमस्कार।

महाविदेहक्षेत्र बारम्बार याद आता है। वह नौवलपुर नगर और शोभायमान बाजार का दिखाव याद आता है। विशेष विस्तार याद नहीं आता।

हमारे घर के समीप जिनमन्दिर था। वह अनेक-अनेक रत्नस्तम्भ से शोभित जिनमन्दिर था। उसमें रत्नों के प्रकाशमय भगवान विराज रहे थे; मैं (देवाभाई) और मेरी माता सामग्री लेकर पूजा करने जाते थे।

किसी प्रसंगों में राजकुमार और नगरजनों के साथ भी पूजन का प्रसंग बन जाता था।

इस बात का विशेष विस्तार याद नहीं आता।

किसी उत्सव के प्रसंग में माता-पिता और मैं (देवाभाई) दूसरे किसी नगर में जा रहे थे; वहाँ धार्मिक उत्सव मनाया जा रहा था। उसके विषय में विशेष याद नहीं आता।

कुन्दकुन्दाचार्यदेव महाविदेहक्षेत्र में पधारे थे, वह प्रसंग बहुत बार याद आता है।

महा समर्थ कुन्दकुन्दाचार्यदेव के चरणों में नमस्कार हो, वन्दन हो।

इस जीव ने देवाभाई के भव में देखा है, वह याद आता है।

समवसरण में सीमन्धर भगवान की वाणी में आया था कि यह राजकुमार भविष्य में तीर्थंकर होनेवाले हैं, यह बात भी बारम्बार याद

आया करती है और कहान गुरुदेव के प्रति बहुत महिमा आती है तथा हृदय नम्रीभूत हो जाता है।

आश्चर्यकारी और दिव्यमुद्राधारी सीमन्धर भगवान की मुद्रा का क्या वर्णन हो!! भगवान की दिव्यवाणी के आवाज की मधुरता का क्या वर्णन हो! त्रिलोकनाथ सीमन्धर भगवान के चरणों में हृदय नम्रीभूत हो जाता है।

परम महिमा के भण्डार जिनेन्द्र भगवान की क्या महिमा हो! भगवान के चरण–कमलों में इस दास का बारम्बार नमस्कार!

समवसरण को, विदेहक्षेत्र को उपमायोग्य यहाँ कोई वस्तु नहीं है। महाविदेहक्षेत्र के महल और मकान भी किस प्रकार बतलाया जा सके! समवसरण की वस्तु को तो कहाँ से उपमा दी जा सके! इस भरतक्षेत्र में कोई ऐसा प्रकार नहीं कि महाविदेहक्षेत्र की किसी भी वस्तु को इस चर्मचक्षु से देखा जा सके अथवा तुलना करके वर्णन किया जा सके।

अरे रे! कहाँ थे और कहाँ आये!

जिन्होंने भरतक्षेत्र में अमृतवर्षा बरसायी—ऐसे भावी तीर्थाधिनाथ कहान गुरुदेव के चरणकमलों में बारम्बार नमस्कार!

✧✧✧

2023, असोज माह

अपूर्व–ज्ञानधारी गुरुदेव के चरणकमलों में बारम्बार नमस्कार

पूर्वभव सहजरूप से याद आया करता है। ये महाविदेह के

नौवलपुर नगर के रास्ते, चौक, वन, नदी, रत्न जैसे किनारों से शोभित तालाब इत्यादि याद आते हैं। महाविदेह के योग्य इस पूर्वभव के (इस जीव के-देवाभाई के) घर, घर का चौक, चौक के चारों ओर मकान, वात्सल्ययुक्त माता-पिता इत्यादि याद आते हैं।

पुण्यशाली फतेहमन्द राजकुमार, उनके बड़े महल इत्यादि याद आते हैं। (विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।)

अनन्त गुणों के निधान चैतन्यदेव ऐसे अनुपम, दिव्यमुद्राधारी, दिव्यदेहधारी सीमन्धर भगवान बारम्बार याद आते हैं। उनके अपूर्व दर्शन होने पर उल्लास बहुत आता है।

भगवान का यहाँ विरह होने से खेद भी होता है।

स्वरूपपरिणतिसहित यह बात बारम्बार सहजरूप से याद आने से, महिमा आने से लिखा जाता है।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या से मार्गशीर्ष कृष्ण एकम् तक भगवान बारम्बार याद आने से, अपूर्व दर्शन होने से, उल्लास आने पर लिखा जाता है।

ये भगवान अलग! भगवान की वाणी अलग! भगवान की विभूति, रत्न की अनेक वस्तुओं से भरपूर समवसरण सब अलग, दिव्य, आश्चर्यकारी अद्भुत है! इस जीव ने पूर्व में देवाभाई के भव में सब देखा हुआ है, इसलिए याद आया करता है। विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।

परम उपकारी कहान गुरुदेव को

परम भक्ति से नमस्कार।

श्री कहान गुरुदेव का परम प्रताप है। यह सब आपके प्रताप से है, इसलिए आपका है। अन्दर में यह सब बात घुलती होने से जो आया, वह लिखा गया है। विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता। इस विषय में अन्दर रहने की भावना है!!

✧✧✧

भरतक्षेत्र में अमृतवर्षा बरसानेवाले अपूर्व श्रुतसमुद्रधारी गुरुदेव को नमस्कार

2027, आसोज शुक्ल एकम् के सायंकाल आया हुआ स्मरण।

आपका (गुरुदेव का) प्रश्न आने पर आया हुआ स्मरण।

2023 के वर्ष में इस प्रकार का सामान्य स्मरण आया था। पूज्य गुरुदेव का प्रश्न आने पर स्पष्टरूप से आया। (आसोज शुक्ल दूज के दिन भी यह स्मरण सहजरूप से आया करता था)।

श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव महाविदेहक्षेत्र में पधारे थे, वह प्रसंग स्मरण में आता है। उस समय सीमन्धर भगवान के दर्शन करने जाने का प्रसंग बना था। तब मेरे अर्थात् देवाभाई के जानने में था और लोक में भी यह बात फैली हुई थी, वह याद आती है कि यह राजकुमार यहाँ से भरतक्षेत्र में जन्मेंगे, वहाँ इन आचार्यदेव के अर्थात् कुन्दकुन्दाचार्यदेव के मार्ग पर चलकर पंचम काल में धर्मतीर्थ का प्रकाश करेंगे।

वहाँ उन्हें बालवय से धार्मिक संस्कार जागृत होने से त्यागीरूप से रहकर ये राजकुमार इन आचार्यदेव के—इन आचार्यदेव के कहे हुए—मार्ग पर चलकर भरतक्षेत्र में पंचम काल में धर्मतीर्थ का प्रकाश करेंगे।

ऐसे भाव, भगवान की वाणी में आये थे या मुनिराज के कहे हुए थे, यह स्पष्ट याद नहीं आता परन्तु उनमें से किसी के द्वारा यह बात प्रगट हुई थी, लोक समुदाय में फैली हुई थी और मैं अर्थात् देवाभाई भी इस बात को जानता था। यह बात पूर्णत: स्पष्ट है। महाविदेहक्षेत्र में से भरत में आये, यह बात याद करने पर खेद होता है; इसलिए उपयोग इस बात पर विशेष नहीं जाता। जो याद आया, वह लिखा है।

विगत भव के राजकुमार, वर्तमान के श्री कहान गुरुदेव का आत्मा इस भरतक्षेत्र में से देवभव में जायेगा, वहाँ से जम्बूद्वीप में किसी भी क्षेत्र में—जिस भूमि में रस वृद्धि को प्राप्त हों, ऐसी हरियाली भूमि में—किसी तीर्थंकर राजा के घर उनके पुत्ररूप से जन्मेंगे; वहाँ उस मनुष्यभव में उन्हें तीर्थंकरगोत्र बँधेगा, वहाँ हू-ब-हू मुनिपना पालन कर अहमिन्द्र होंगे; वहाँ से श्री कहान गुरुदेव का आत्मा, धातकीखण्ड द्वीप में, जहाँ सदा धर्मकाल वर्त रहा है, ऐसे विदेहक्षेत्र में सूर्यकीर्तिस्वामी नाम के तीर्थंकर भगवान होंगे।

यह जन्मान्तरों की बात इस जीव ने अर्थात् देवाभाई ने विदेहक्षेत्र में सुनी थी, वह याद आती है।

इस बात का वर्णन पहले आ गया है, तथापि फिर से कुछ लिखा है।

सीमन्धर भगवान का समवसरण याद आता है, भगवान के दरबार में-समवसरण में प्रवेश करने पर अनेक-अनेक देखने की वस्तुएँ आती हैं, सुगन्ध से भरपूर घनतावाली रत्नों के पुष्पों की बाड़ी, फल और फूलोंवाले शोभित झूलते रत्न के वृक्ष, देवों की वैक्रियक शक्ति से उत्पन्न

हुए बाजार जैसा दिखाव, अनेक प्रकार की वस्तुएँ, रत्न के वस्त्राभूषण, शंख, चक्र जैसी वस्तुएँ-कोई दैवी वस्तुएँ, अनेक प्रकार की वस्तुओं का जहाँ प्रदर्शन था; देवों के महल और देवों के घूमने के स्थान इत्यादि थे; उन घूमने के स्थानों में रत्न के झूले जैसा दिखाव था, यह सब याद आने से लिखा जाता है। जिस समवसरण में अनुपम दिव्यमूर्ति भगवान विराज रहे हैं, वे जगत् से अलग ही थे! होंठ चलते नहीं, तथापि मधुर ध्वनि आया करती है, चौदह ब्रह्माण्ड का स्वरूप कह रहे हैं। इस सब बात का क्या वर्णन हो! आश्चर्य लगने से लिखा जाता है; विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।

पूज्य गुरुदेव की भक्ति के कारण यह सब बात लिख जाती है।
भावी तीर्थाधिनाथ कहान गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार॥

✧✧✧

2027 कार्तिक कृष्ण बारस

श्रुतसमुद्र में केलि करनेवाले अजोड़ रत्न गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार

पूर्वभव का नौवलपुर नगर याद आता है। उस नगर में जिनेन्द्र-मन्दिरों का कोई महोत्सव था, वह स्मरण में आता है। उस नगर के राजा फतेहकुमार के पिताजी की ओर से वह उत्सव हो रहा था।

जिनमन्दिर सजाये गये थे, उस महोत्सव में राजकुमार के पिताजी दीपोहमन्द राजा तथा राजकुमार, सब शामिल थे। जिनमन्दिर में भव्य दिगम्बर रत्नमयी प्रतिमा विराज रही थीं। उन रत्नमयी जिनप्रतिमा की क्या महिमा हो! इसका विशेष विस्तार याद नहीं आता।

www.vitragvani.com

पूर्वभव में महाविदेहक्षेत्र में दूसरे किसी नगर में माता-पिता सहित इस आत्मा को अर्थात् देवाभाई को जाने का बना था। वहाँ उस नगर में भी धार्मिक उत्सव मनाया जा रहा था। वहाँ दूध इत्यादि और वस्तुओं का किसी मुनिराज के हाथ में आहारदान दिया था, वह अवसर याद आता है।

पूर्व में देवाभाई के घर अच्छे प्रकार के और शुद्ध भोजन होते थे; हमारे घर मुनिराज और त्यागी पधारते थे। वहाँ रसोईघर के एकदम बगल में कोई सफेद फल इत्यादि दूसरी वस्तुओं सहित मुनिराज के हाथ में आहारदान दिया गया था, वह प्रसंग भी याद आता है। आनन्दकारी प्रसंग होने से जो याद आया, वह लिखा जाता है।

महाविदेहक्षेत्र में किसी नगरी में तथा भगवान के समवसरण में आत्मा की साधना साधनेवाले दिगम्बर मुनिराज के और त्यागियों के समूह (झुण्ड) दिखायी देते हैं, याद आते हैं। धन्य वह क्षेत्र! धन्य वह काल!!

उस क्षेत्र में राजा, राजकुमार, नगरजन और लोक समूह को मुनिराज के दर्शन और आहारदान के प्रसंग सुलभरूप से बन जाये, ऐसा वहाँ धर्मकाल था।

नौवलपुर नगर में भी मुनिराज और त्यागी पधारते थे।

धर्मक्षेत्र में से जीव के परिणाम के कारण इस काल में भरतक्षेत्र में आना हुआ, यह खेद है।

यह स्मरण एकदम स्पष्ट है; विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता; जो याद आता है, ज्ञात होता है, वह सब मध्यस्थभाव से लिखा जाता है।

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

www.vitragvani.com

(इस प्रकार का थोड़ा स्मरण 2022 और 2023 वें वर्ष में आया था।)

चैतन्यरस की धारा बरसानेवाले परम उपकारी
श्री गुरुदेव के चरणकमलों में
परम भक्ति से नमस्कार

✧✧✧

(2028, मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को लिखा गया)

भगवान के समवसरण में, रत्नों के रंगों के प्रकाशवाली, ऐसी विशाल ऊँची मंगलमय पीठिकाओं के ऊपर, रत्न तथा हीरा जैसी वस्तुओं से जड़ित सिंहासन तथा अनेक पंखुड़ियों के दलवाले रत्नमय सुगन्धी कमल के आसनों में अन्तरिक्ष, प्रकाश के पुंज ऐसे सीमन्धर भगवान विराज रहे थे, चौदह ब्रह्माण्ड के पदार्थों का अजायब स्वरूप दिव्यध्वनि द्वारा कह रहे थे।

भगवान के ऊपर रत्नों के शिखरों का दिखाव था। उन शिखरों के नीचे चारों ओर रत्नों के पुष्प और रत्नों की वस्तुओं के शृंगार की शोभा अपार थी। ये सब वस्तुएँ दिव्य हैं, उनका क्या वर्णन हो!

विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।

प्रकाशमय और मंगल के पुंजस्वरूप, मंगलकर्ता सीमन्धर भगवान की दिव्यता का क्या वर्णन हो?

भगवान बारम्बार याद आते हैं, हृदय में तैरते हैं; इसलिए, महिमा आने से लिखा जाता है।

भगवान की दिव्य देह प्रकाशमय होने पर भी, समवसरण में स्पष्टरूप से दर्शन होते थे।

भगवान मंगल के पुंजस्वरूप होने से उनके निकट की सभी वस्तुएँ मंगलमय दिखती थीं; जहाँ वाजिंत्रों के मंगल सुर बज रहे थे।

भगवान के दरबार में देवों के नाटक की जादू भरी रचना थी। क्षण में दृश्य, क्षण में अदृश्यरूप से देवों के नाटक अलग प्रकार के थे! नाटक द्वारा देव, जिनेन्द्र भगवान के गुणों की महिमा प्रकाशित करते थे।

शुद्धात्मा की शुद्धपरिणति के अतिरिक्त कहीं विश्रान्ति नहीं, तथापि यह सब जानने की ओर उपयोग सहज चला जाता है।

पूर्व में देवाभाई के भव में यह जीव, महाविदेहक्षेत्र में बहुत-बहुत काल से होने से और उपयोग सहजरूप से उस ओर जाने से यह सब बात याद आया करती है।

''धन्य वह नगरी! धन्य वह बेला!'' जहाँ भगवान विराज रहे हैं; जहाँ समवसरण में भगवान के दर्शन करने जाते थे, समवसरण में बैठते थे, ध्वनि सुनते थे, समवसरण में रत्नजड़ित ऊँचे गढ़ के रत्नों से शोभित ऊँचे द्वार में प्रवेश करते हुए आगे जाते हैं, वहाँ सीमन्धर भगवान विराज रहे हैं। उन परम महिमाधारी भगवान का क्या वर्णन हो! किस तरह बताया जा सके!

समवसरण की विभूति और सीमन्धर भगवान अन्तर में निरन्तर दिखते होने से ''यह रहे भगवान, यह रहा समवसरण''—ऐसे प्रत्यक्ष की तरह जानने में आते होने से, महिमा आने से यह सब लिखा जाता है। विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।

पंचम काल में जन्म हुआ, वह खेद है।

परम उपकारी, भरतक्षेत्र में अपूर्व श्रुतधारा बरसानेवाले,

मंगलमूर्ति गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार!!

✧✧✧

अभी भरतक्षेत्र में भी पूज्य कहान गुरुदेव की चैतन्यरस से भरपूर, अपूर्व रहस्यमय वाणी निरन्तर सुनने का योग और भविष्य के तीर्थंकर भगवान ऐसे श्री कहान गुरुदेव के पावनकारी आहारदान के प्रसंग तथा पूज्य गुरुदेव के तीर्थयात्रा के अवसर, श्री जिनेन्द्र प्रतिमाओं के कल्याणक—अवसर इत्यादि पुनीत प्रसंग—यह सब पुण्योदय से बनते हैं। ये प्रसंग याद करने से उल्लास आता है।

पूज्य गुरुदेव के भव याद आया करते हैं और पूज्य कहान गुरुदेव के प्रति बहुत महिमा आती है।

भावी तीर्थङ्कर, वर्तमान के धर्मधुरन्धर

गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार

✧✧✧

2029 (मार्गशीर्ष कृष्ण तीज को लिखा गया)

श्री गुरुदेव के परम प्रताप को नमस्कार।

श्री देव-गुरु-शास्त्र के चरणों की सेवा हो।

उन सर्व को परम भक्ति से नमस्कार।

(यह स्मरण किसी प्रकार से 2018 और 2023 के वर्ष में आया था।)

महाविदेहक्षेत्र में समवसरण में सीमन्धर भगवान विराज रहे हैं, वहाँ देखने के लिये ज्ञान का उपयोग बारम्बार जाता है, बारम्बार याद आते हैं।

पूर्व में देवाभाई के भव में इस जीव ने भगवान की वाणी में जो भाव सुने हों, वे याद आते हैं।

भगवान की अभेद वाणी में चैतन्यदेव के आश्चर्यकारी सूक्ष्म-सूक्ष्म अनन्तानन्त भाव आते थे।

ज्ञान-उपयोग इत्यादि सत् द्रव्यों के स्वरूप के सूक्ष्म-सूक्ष्म भाव अनन्त आते थे। अङ्ग-पूर्व के, ज्ञानप्रवाद, सत्यप्रवाद इत्यादि पूर्व के अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के सूक्ष्म-सूक्ष्म अनन्त भाव आते थे।

अङ्ग-पूर्व के शब्द मर्यादित होते हैं, भगवान की वाणी में तो असीम अनन्त, गम्भीर रहस्य आता था। चौदह ब्रह्माण्ड के तत्त्वों के अनन्त रसांशों, अनन्त भावांशों सहित अनन्त-अनन्त आश्चर्यकारी सूक्ष्म-सूक्ष्म भाव आते थे। क्या आते थे, वह याद नहीं आता।

सीमन्धर भगवान की दिव्यध्वनि में चैतन्यतत्त्व का, तीन लोक का, चौदह ब्रह्माण्ड के तत्त्वों के सूक्ष्म भावों का चमत्कारी चित्र खड़ा

www.vitragvani.com

होता था। सुनने पर ऐसा होता था कि आहाहा! तत्त्वों का ऐसा आश्चर्यकारी स्वरूप है!

विशेष विस्तार याद नहीं आता।

फतेहमन्द राजकुमार और अनेक सभाजन भगवान की वाणी सुनकर आश्चर्य को प्राप्त होते थे।

अनेक प्रकार के रत्नमय समवसरण में सीमन्धर भगवान विराज रहे हैं, जहाँ गणधर, मुनिवर और देव-देवेन्द्र बस रहे हैं।

बाह्य और अन्तरंग ऋद्धि-सिद्धि से भरपूर ऐसा महाविदेहक्षेत्र और वहाँ की नगरियाँ याद आती हैं।

अहो! ये अनुपम सीमन्धर भगवान!

अहो! यह मधुर दिव्य वाणी!

अहो! यह रत्नमय समवसरण!

अहो! यह महाविदेहक्षेत्र! वहाँ की नगरियाँ! इन सबका क्या वर्णन हो! महिमा आने से लिखा जाता है।

चैतन्यद्रव्य की शुद्धपरिणति की ओर—शुद्धात्मा में—उपयोग सहज जाये तो भी साधक स्थिति होने से देव-गुरु-शास्त्र की ओर उपयोग गये बिना रहता नहीं।

अहो! इन सीमन्धर भगवान के चरण कमलों में
परम भक्ति से नमस्कार, बारम्बार नमस्कार।
अपूर्व श्रुतधारा बरसानेवाले भावी तीर्थाधिनाथ
कहान गुरुदेव के चरणकमलों में परम भक्ति से नमस्कार।

✧✧✧

2034, भाद्रपद शुक्ल षष्ठमी–सप्तमी,

अपूर्व उपकारी गुरुदेव को नमस्कार

अनन्त काल में परिभ्रमण करते हुए चार गति में जीव ने बहुत दुःख सहे हैं। तिर्यंचगति में सहे हुए भूख–प्यास इत्यादि पराधीनता के अनेक प्रकार के दुःख, माता के गर्भ में संज्ञी पञ्चेन्द्रियरूप से सहे हुए बन्दीखाना के अनेक प्रकार के दुःख, वे याद आते हैं और वैराग्य आता है। (विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।)

नरक के जीवों के दुःख और नरकभूमि तो प्रत्यक्ष की तरह नजर के समक्ष तैरती है। जीव चारों गति में दुःख सहन करता आया है।

किसी समय यह जीव देवलोक की रत्नमयी भूमि में विहार करता था, मनुष्यभव में विदेहक्षेत्र में बड़े शरीररूप से बड़े महल जैसे मकानों में घूमता था, माता–पिता के लाड़ में रहता था, समवसरण में भगवान की वाणी सुनता था, इत्यादि याद आता है।

कितनी ही बार माता–पिता के साथ, बड़े रथ सरीखा वाहन था, उसमें बैठकर, भगवान के दर्शन को जाता था।

फतेहकुमार भी भगवान के दर्शन को आते थे। ये राजकुमार भविष्य में तीर्थङ्कर होनेवाले हैं—ऐसी बात सीमन्धर भगवान की दिव्यध्वनि में सुनी थी, वह प्रसङ्ग बहुत याद आता है, उन राजकुमार के प्रति बहुमान आता है।

महा समर्थ योगीश्वर जैसी जिनकी मुद्रा थी, ऐसे श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव महाविदेहक्षेत्र में पधारे थे, उस प्रसङ्ग का भी बारम्बार

www.vitragvani.com

स्मरण होता है और श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव के प्रति यह हृदय नम्रीभूत हो जाता है।

विदेहक्षेत्र बहुत याद आता है, वहाँ दिगम्बर मुनिवरों के झुण्ड विचर रहे हैं। किसी-किसी मुनिराज को अङ्ग-पूर्व का ज्ञान प्रगट हो रहा है, अनेक ऋद्धि और शुक्लध्यान इत्यादि जहाँ प्रगट हो रहे हैं।

उस धर्मक्षेत्र की क्या बात!

कहाँ भरतक्षेत्र! कहाँ विदेहक्षेत्र!

इस अन्तरभूमि में सीमन्धर भगवान बारम्बार याद आते हैं; इसलिए किसी समय हृदय रोता है।

'यह विराजे समवसरण में सीमन्धर भगवान!' ऐसे प्रत्यक्ष की तरह दिखते हैं। महाविदेहक्षेत्र में भगवान के दर्शन को जाने का और उनकी दिव्यध्वनि सुनने जाने का सुयोग बहुत याद आता है।

अहा! ये सीमन्धर भगवान!

अहा! वह दिव्यध्वनि!

अहा! वह पुनीत प्रसङ्ग!

धन्य वह घड़ी! धन्य वह पल!

जीव किसी समय किसी गति में, किसी समय किसी गति में होता है। इस जीव ने किसी समय तिर्यञ्चगति में दुःख सहन किये, किसी समय माता के गर्भों में बन्दीखाने के दुःख सहन किये, वे याद आते हैं। (चारों गति के दुःख इस जीव ने देवगति में से भी कितने ही देखे हैं।) चारों गति में दुःख सहे हैं।

यह जीव किसी समय देवलोक की रत्नमयी भूमि में विचरता था; मनुष्यभव में यह जीव देवानन्दभाईरूप से विदेहक्षेत्र में भगवान के धाम में रहता था, वहाँ के नगर के रत्नजड़ित शोभित और विशाल जिनालयों में तथा रत्न जैसे किनारों से शोभित तालाब आदि स्थलों में जाता था।

अभी यह जीव भरतभूमि में है। भारतरत्न श्री कहान गुरुदेव के सान्निध्य में है।

किसी समय कहाँ! किसी समय कहाँ!

कैसा संसार का परिभ्रमण!

कैसी संसार की विचित्रता!

चैतन्यदेव के अतिरिक्त बाहर में कहीं सुख नहीं है।

सबसे वैराग्य पाकर अद्भुत स्वरूप शुद्धात्मा में समा जाना, वही श्रेयभूत है।

2034, आसोज कृष्ण 4 —

देवलोक की भूमि याद आती है। देवभूमि के शाश्वत जिनमन्दिर, मेरुपर्वत के शाश्वत जिनमन्दिर और रत्नमय जिनप्रतिमाएँ—ये सब बारम्बार नजर के समक्ष ज्ञात होते हैं—दिखते हैं।

अहा! ये रत्नमयी जिनप्रतिमाएँ! और जिनमन्दिर! यह सब आश्चर्यकारी है।

देवभव में से यह जीव भगवान के समवसरण में बहुत बार गया है, यह याद आता है।

इस लोक के कितने ही स्थानों पर किसी कारणवश यह जीव घूम

www.vitragvani.com

आया है, यह याद आता है परन्तु वे कौन से स्थान थे, यह याद नहीं आता।

भगवान के समवसरण में देवभव में से बहुत बार गया है परन्तु वह कौन-कौन से स्थल में गया है, यह याद नहीं आता।

देवभूमि में से विध-विध रत्न से रचित दैवीय समवसरण याद आने पर ऐसा स्मरण होता है कि यह समवसरण तो जीव की परिचित भूमि है। यहाँ तो यह जीव बहुत बार आया है।

देवभूमि के कितने ही स्थान और इस लोक के स्थान याद आने पर ऐसा लगता है कि इस देवभूमि के कितने ही स्थान और इस लोक के कितने ही स्थान इस जीव के परिचित हैं; जीव बहुत बार यहाँ आया है—ऐसा सहज स्मरण होता है।

यह सब सहज स्मरण में आया है, वह लिखा जाता है।

यह जीव अनन्त काल में परिभ्रमण करता हुआ अभी भरतभूमि में है।

भावी तीर्थङ्कर, गत भव के राजकुमार, श्री कहान गुरुदेव के सान्निध्य में—उनके चरणों में—रहने का सुयोग इस भरतभूमि में प्राप्त हुआ है।

श्री गुरुदेव के अन्तर में प्रगट हुए ज्वाजल्यमान श्रुतज्ञानसूर्य द्वारा अनुपम रहस्य झरती अमृतवाणी निरन्तर सुनने का अपूर्व योग प्राप्त हुआ है, वह महा भाग्य है।

गुरुदेव की निरन्तर वाणी, उनके आहारदान इत्यादि के पावन प्रसङ्ग, जो पञ्चम काल में मिले, वह अहोभाग्य है।

अनन्त काल के परिभ्रमण का दुःख और विभाव का दुःख सर्व परद्रव्य, परभावों और भेदभावों से न्यारे शुद्धात्मतत्त्व को बतलानेवाली गुरुदेव की वाणी से सहज टलते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने शुद्धात्मतत्त्व को प्रगट करने का मार्ग बतलाकर पञ्चम काल में अनेक जीवों का दुःख मिटाया है; सुखधाम, आनन्दधाम आत्मा को प्रगट करने का मार्ग सुगम किया है।

परम-परम उपकारी गुरुदेव के चरण-कमलों में
परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार।

यह सब प्रताप श्री गुरुदेव का ही है।

श्री कहान गुरुदेव के भूतकाल के भव और भावी काल के भवों का बारम्बार स्मरण होता है; गुरुदेव का आत्मद्रव्य महिमावन्त है।

(2034, यह स्मरण भाद्रपद शुक्ल षष्ठमी-सप्तमी को आया और भाद्रपद शुक्ल अष्टमी-नवमी इत्यादि दिनों में चालू रहा।) विशेष विस्तार ज्ञात नहीं होता।

श्री जिनेन्द्रभक्ति, श्री गुरुभक्ति, श्री श्रुतभक्ति
निशदिन अन्तर में
बसी रहो।

✧✧✧

www.vitragvani.com

श्री जिनेन्द्राय नमः 2004

अभी वर्तमान विराजते परम कृपालु, भावी के तीर्थंकर भगवान, ऐसे श्री अद्वितीय सद्गुरुदेव के चरण-कमल में परम-परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार हो, नमस्कार हो।

श्री जिनेन्द्रदेव की भक्ति-सेवा के अतिरिक्त दूसरा क्या करें! क्या करूँ अहो नाथ! क्या करूँ! हमारे जैसे पामर आपकी क्या सेवाभक्ति कर सकें! अहो! जिनेन्द्रदेव की महिमा तीन लोक में गूँज रही है!

अहो श्री सद्गुरुदेव! मेरे जैसे पामर पर आपने अपार करुणा बरसायी है; आपकी क्या सेवाभक्ति करें! जो करें वह सब कम है। मन-वचन-काया से निरन्तर समीपवर्ती आपकी चरण सेवा होओ, यह हृदय की गहरी भावना है। इस काल में, इस भरतक्षेत्र में आपने अपने आप, छुपा हुआ मोक्षमार्ग ढूँढकर दूसरों को वह मार्ग समझाकर अपूर्व उपकार किया है। अहो! गहन और गहरा वस्तु का स्वरूप सूक्ष्म और तीक्ष्ण श्रुतशैली से समझाकर, ज्ञान के रहस्य खोलकर हमारे जैसे पामर पर अनन्त-अनन्त उपकार किये हैं! अहो, प्रभु! हम आपकी भक्ति-सेवा के अतिरिक्त दूसरा क्या कर सकते हैं!

आपके चरणकमल में परम भक्ति से
बारम्बार नमस्कार नमस्कार!

✧✧✧

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

www.vitragvani.com

ॐ

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन का आन्तरिक भाव-अवलोकन

2027

चैतन्यतत्त्व का वैभव चमत्कारिक और आश्चर्यकारी है। चैतन्यद्रव्य लोकोत्तर अर्थात् अलौकिक महिमावन्त है। ऐसे आत्मा में ही आनन्द है।

सर्व परद्रव्यों से, मन-वचन-काया से, सर्व शुभाशुभ परभावों से, भेदभावों से निराले ज्ञायक आत्मा में सुख और समाधि है, अन्यत्र कहीं विश्रान्ति नहीं; ज्ञायक की परिणति के अतिरिक्त सब दुःखमय और उपाधिमय है; चैतन्य की निर्विकल्प आनन्दमय दशा के अतिरिक्त कहीं विश्रान्ति नहीं है।

शुद्धात्मद्रव्य की मुख्यता और शुद्धपरिणति—निर्विकल्प आनन्दमय स्थिति की महिमा होने से, पुरुषार्थ की सहज गति उस ओर होने से, परिणति की उस ओर सहज दौड़ होने से, उस ओर परिणति और उपयोग सहज रहा करते हैं, (तथापि उपयोग बाहर होवे तब) —

देव-गुरु-शास्त्र की महिमा होने से वहाँ, और श्रुतचिन्तवन की महिमा होने से श्रुतचिन्तवन की सूक्ष्मता की ओर भी उपयोग रहा करे, तो

www.vitragvani.com

भी पूर्वभव, देवलोक, नरक इत्यादि देखने–जानने की ओर उपयोग सहज चला जाता है।

सर्व परिणति में श्री गुरुदेव का परम प्रताप है।
परम उपकारी गुरुदेव के चरणकमलों में
बारम्बार नमस्कार।
सातिशय श्रुतसागर आदि अनन्त गुणों से भरपूर,
परम कृपालु गुरुदेव के चरणों में
परम भक्ति से नमस्कार।

✧✧✧

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

www.vitragvani.com

[अध्यात्ममूर्ति युगपुरुष परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन को पूछे हुए जातिस्मरण सम्बन्धी प्रश्न तथा स्वयं (परम पूज्य गुरुदेवश्री ने) की हुई नोंध]

नौवलपुर में श्री तीर्थङ्कर प्रभु के समीप श्री कुन्दकुन्दाचार्यजी पधारे थे या दूसरे ? और वहाँ कितना काल रहे थे ? चक्रवर्ती के समीप में श्री कुन्दकुन्दाचार्य पधारे थे, ऐसा इतिहास में आता है वह.....

❀ ❀

श्री कुन्दकुन्दाचार्य, श्री तीर्थङ्कर के समीप में, वहाँ चक्रवर्ती का मिलना और अमुक दिवस का रुकना, तथा उसी गाँव में पधारे थे या दूसरे ? क्या स्मरण होता है–इत्यादि, नया हो वह लिखना।

❀ ❀

श्री तीर्थङ्कर प्रभु के या किसी श्रुतकेवली के या किसी मुनि के उपदेश सम्बन्धी कोई एक वाक्य; गाँव में, तीनों एक ही गाँव में या अलग ? उस गाँव का नाम; चन्दभाई, ये कौन ? यह कुछ स्मरण में आता है ? भविष्य में तीर्थङ्कर कितने भव में ? इस सम्बन्धी कुछ विशेष स्मरण सहज होता है ?

❀ ❀

श्रुतकेवली के शरीर का दिखाव ? राजकुँवर का नाम क्या ?

❀ ❀

www.vitragvani.com

श्री तीर्थङ्करदेव; ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

क्षपकत्व श्रेणी भूदा द्वे भूत्वा।

....................................॥

सिद्धि गवेषां....................।

....................................॥

❀ ❀

श्री श्रुतकेवली; ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

क्षायिक के तीन प्रकार : एक धाराप्रवाही, दूसरा जोड़णी अथवा जोड़रूप क्षायिक, तीसरा युगल क्षायिक।

1. धाराप्रवाही — शुरुआत की धारा का प्रवाह, क्षायिक की योग्य श्रेणी का, वह धाराप्रवाही।

2. जोड़णी अथवा जोड़रूप — पूर्ण कृतकृत्यता के अद्भुत सुख में का अंश कृतकृत्यपना प्रगट होकर, उस अंश द्वारा विशेष कृतकृत्यता के अंशों का जुड़ना—ऐसा क्षायिक जो कहलाता है; वहाँ के संक्षिप्त भाव में—एक अंश द्वारा विशेष अंशों का परस्पर जुड़ना उसका नाम जोड़णी क्षायिक।

3. युगल क्षायिक — पूर्ण केवली का अथवा सिद्ध के क्षायिक को युगल क्षायिक कहते हों।

ॐ चिदानन्द सहज स्वरूपाय नमः

बैशाख कृष्ण 8, सोम, सबेरे के 6:00 लगभग — कुन्दकुन्दाचार्य तथा श्री सीमन्धर प्रभु इत्यादि।

" " सबेरे के 10:00 लगभग — पूर्व का स्पष्ट।

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

वैशाख शुक्ल 3 : लोक आदि का स्वरूप।

'' '' 6 नौ लगभग : छोटे बालक आदि।

'' '' 12, 8 से 8:30 लगभग

'' '' 13, 9 बजे : तीसरे देवलोक से चयकर इत्यादि।

आषाढ़ कृष्ण 13, 6 से 6:30 : राजकुमार का भव।

1994, मार्गशीर्ष कृष्ण 12, दोपहर के 3 से 3:30 लगभग — राजकुमार भविष्य में तीर्थङ्कर तथा शान्ताबेन का पूर्वभव का स्मरण।

पौष कृष्ण 1, दोपहर 4 बजे : राजकुमार का नाम इत्यादि।

पौष कृष्ण 10, सबेरे 5:15 बजे लिखा

पौष कृष्ण 9, 7 से 7:30 चम्पाबेन का पूर्व नाम इत्यादि।

पौष कृष्ण 12, 9 बजे : समवसरण इत्यादि।

पौष शुक्ल 9, सबेरे के 7 से 7:30 : गाँव इत्यादि।

पौष शुक्ल 10 : गाथा।

पौष शुक्ल 11, रात्रि 10 के बाद : राजा इत्यादि।

पौष शुक्ल 11, रात्रि : क्षायिक के तीन प्रकार कुमार को याद।

माघ कृष्ण 5, प्रात: काल आठ दिन का, तथा चक्रवर्ती

माघ कृष्ण 6, सायं काल 4 बजे : कुण्डलपुर।

माघ कृष्ण 8, 10:30 से 11:00।

माघ कृष्ण 13, कुमार की भक्ति का स्मरण।

माघ कृष्ण 12, रात्रि : विराधक का स्मरण :

❀ ❀

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के हस्ताक्षर

શ્રી નાસ્ત્ર ૐ શાંતિ. શાંતિ. શાંતિ: હવે
ક્ષાયકત્વ શ્રેણી જુદા છે જુત્વા ।

• • • • • • • • • • • • • • • • •

સાધ્ય ગવેષાં

• • • • • • • • • • • • • • • • •

શ્રી ક્ષેત્ર, ૐ શાંતિ. શાંતિ. શાંતિ; હવે
ક્ષાયક ના ત્રણ પ્રકાર
એક ધારા પ્રવાહી, બીજો ભેદરૂપી
અથવા ભેદરૂપ ક્ષાયિક, ત્રીજો ક્રમ
ના ક્ષાયક.
૧ ધારા પ્રવાહ, શરૂઆત ને ધારાએ
પ્રવાહ, ક્ષાયકની યોગ્ય શ્રેણીના
૨ ને ધારા પ્રવાહી
ભેદરૂપ અથવા ભેદ રૂપ
પૂર્ણ કૃતકૃત્યતાના અદ્ભુત સુખ
માંહેનું અંશ કૃતકૃત્ય પણું પ્રગટ
થઈને તે અંશ દ્વારા વિશેષ કૃત
કૃત્યતાના અંશોનું ભેદાવું

www.vitragvani.com

આવું કારણ નિરવિવાદ છે
ધ્યાનના કુંવારી ભાવમાં
એક અંશ દ્વારા વિશેષ અંશોનું
પર સ્પર્શ જોડ્યું તેનું નામ જોડણી
કારણ
3 જુગલ કારણ
પૂર્ણ કેવળીનું અધ્યાત્મ સાધ્યના
કારણને જુગલ કારણ કહેલા
હોય

ૐ ચિદાનંદ સહજ સ્વરૂપાય નમઃ

ચૈત્ર વદ ૮ સોમ સવારના ૭ વાગ્યાના કુંદકુંદ આચાર્ય
તથા શ્રી સીમંધર પ્રભુ વિગેરે
" ૧૧ " સવારના દશ વાગ્યાના પ્રભુ સ્વપ્ન.
વૈશાખ શુદ ૩ સાંજ આદિ સ્વપ્ન
" " ૬ નાના બાળક આદિ, ૯ વાગ્યાના
" " ૧૨ ૮ થી.ના ૧ વાગ્યાના.
" " ૧૩ ૮ વાગે. બાળ વિદેહ કે ભગવાન વિગેરે
જેઠ વદ ૧૩ ક્ર. ૪ા રાજકુમારનો સ્વપ્ન.
૧૯૯૪ કારતક ૧૨ બપોરના ૩ થી ૩ા વાગ્યા.
રાજકુમાર બપોરે સિદ્ધક્ષેત્ર
તથા શાંતાબેનનું પૂર્વભવનું સ્મરણ।।
માગસર વદ ૨ રાજકુમારનું નામ વિગેરે
બપોરે ત્રણ ૪ વાગે.
માગસર વદ ૧૦ સવારે. ૫ા વાગે સ્વપ્ન
માગસર વદ ૭ થી ૭ા ચંપાબેનનું પૂર્વનામ વિગેરે
" " ૧૨ ૯ વાગે સમોસરણ વિગેરે
પોષ શુદ ૯ સવારના ૭ થી ૭ા ગામ વિગેરે
" " ૧૧ રાત્રે ૧૦ થી ૧૦ા. રાજા વિગેરે
" " ૧૦ ગાથા
" " ૧૨ રાત્રે કુંભારના ~~જ~~ જશ મારા કુમારની વાત.
પોષ વદ ૪ ૪ થી ... આદિ દિવસનું બાળ...
" " ૬ સાંજે ૪ વાગે કુંવરપુર
" ૯ વૈ. શુ. ૧૨
" " ૧૩. કુમારની ભક્તિનું સ્મરણ.
" " ૧૨ રાત્રે ~~[illegible]~~ નું સ્મરણ।।

પરમ કૃપાળુ શ્રી સદ્ગુરુદેવ (કહાનજી
મહારાજશ્રી)ના પરમ પવિત્ર હસ્તાક્ષરો

પૂ. ગુરુદેવે સ્મરણ વિષે ૧૯૯૪ના
સાલમાં પૂછેલ પ્રશ્નો

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુને કે કોઈ શ્રુત કેવળી
કે કોઈ મુનિનો ઉપદેશ સાંભળ્યો હોય એ
યાદ આવે. ગામમાં જ્યાં [illegible] જે ગામમાં
કે જ્યાં તે ગામનું નામ, સંબંધ લાગતાં કોણ
તે કંઈ સ્મરણમાં આવે છે. ભગવાન તીર્થંકર
કેવળી ભગવાન તે સંબંધી કંઈ વિશેષ સ્મરણ
સહજ થાય છે.

શ્રુતકેવળી નારાયણનો [illegible]
રાજકુંવરનું નામ. [illegible]

પરમ કૃપાળુ શ્રી સદ્ગુરુદેવ (કહાનજી
મહારાજશ્રીના) પરમ પવિત્ર હસ્તાક્ષરો

www.vitragvani.com

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

નોવેમ્બર માં શ્રી તીર્થંકર પ્રભુના સ
મીપે શ્રી કુંદકુંદ આચાર્ય પધાર્યા હતા
ને બાદ તેઓ ફરી આજ સ્થાનના
અનુભવના સાગરમાં શ્રી કુંદકુંદ આચાર્ય
પધાર્યા હતા એમ ઈતિહાસ માં આવે છે

શ્રી કુંદકુંદ આચાર્ય શ્રી તીર્થંકરના
સમોસરણમાં સૂક્ષ્મ જીવનું જાણ્યું એક
અમુક દિવસનું રોકાણ થયું તેમ
ગામમાં પધાર્યા હતા તે બાબતનું સ્મરણ
થાય છે. વિશેષ નવું હોય તે લખવું.

પરમ કૃપાળુ શ્રી સદ્ગુરુદેવ (કાનજી)
મહારાજશ્રીના પરમ પવિત્ર હસ્તાક્ષરો

❀ गुरुदेव के हृदयोद्गार ❀

इस विभाग में पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन तथा 'बहिनश्री के वचनामृत' पुस्तक सम्बन्धी परम पूज्य सद्गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने प्रसन्नतापूर्वक उच्चारित हृदयोद्गार दिये गये हैं। प्रशममूर्ति भगवती पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन की—उनकी जन्मजयन्ती के माङ्गलिक प्रसङ्ग पर तथा अन्य दिनों में (सोनगढ़ में तथा अन्यत्र) प्रवचन, तत्त्वचर्चा इत्यादि के समय अनेक बार—निर्मल स्वात्मानुभूति, धर्मोद्योतकारी सातिशय जातिस्मरणज्ञान, रग-रग में व्याप्त निर्मानता, स्फटिक समान स्वच्छ सरलता, प्रशमरस-झरती उदासीनता और सागर समान गम्भीरता इत्यादि उनके गुणों सम्बन्धी, पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से अत्यन्त अहोभावपूर्वक प्रवाहित सहज उद्गारों से सभा का सम्पूर्ण वातावरण अति प्रसन्न हो जाता था।

परम पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से प्रवाहित पूर्व समय के तत्सम्बन्धी अनेक उद्गारों में से कितने ही यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं, जिनके वाँचन-मनन से मुमुक्षुहृदय अपने जीवन निर्माण के सम्यक् पुरुषार्थ की प्रेरणा प्राप्त करें।

❀

www.vitragvani.com

ॐ

नमः श्री सद्‌गुरवे

गुरुदेव के हृदयोद्‌गार

पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन सम्बन्धी

(प्रवचन, तत्त्वचर्चा इत्यादि प्रसङ्गों पर)

परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के

मङ्गल उद्‌गार

(राजकोट, संवत् 2027)

बहिन (चम्पाबेन) तो बहुत ही गम्भीर-गम्भीर! ऐसा आत्मा इस समय हिन्दुस्तान में नहीं है। पवित्रता-परिणति, और शुद्ध परिणति सहित का जातिस्मरणज्ञान है। वैराग्य-वैराग्य! शास्त्र में आता है:—जब तीर्थङ्कर दीक्षा लेते हैं, तब पहले जातिस्मरण होता है — ऐसा नियम है।.... जातिस्मरण हो, तब उपयोग लगाना नहीं पड़ता और तुरन्त ज्ञान हो, क्षण में वैराग्य हो। ऐसा बहिन को हो जाता है। बहिन को जातिस्मरण होने पर वैराग्य बहुत बढ़ गया है; उन्हें बिल्कुल पर की कुछ पड़ी नहीं है।

✳

(राजकोट, संवत् 2027)

....बहिन (चम्पाबेन) को तो इस प्रकार प्रत्यक्ष देखने पर अन्तर में ऐसा हो जाता है, खेद आ जाता है : 'अरेरे! कहाँ थे और कहाँ आ गये! अरे, प्रत्यक्ष सब दिखता है। अहा! यह संसार! यह प्राणी! यह दुःख!'.... बहुत अच्छा जीव, बहुत ही अच्छा जीव; संसार के किनारे आया हुआ,

और ही प्रकार का। स्वयं तो कुछ कहती ही नहीं। यह तो उनकी उम्र हो गयी 58, शरीर सामान्य, भोजन सामान्य... यह तो कैसे निभ रही हैं! ....नाम-ठाम, भविष्य के नाम, तीर्थङ्कर का नाम—सब सिद्ध हो चुकी बातें हैं, (सीमन्धर) भगवान के मुख से कही गयीं। छोटे मुँह ऐसी बातें लोगों को कठिन लगे। एक-एक, अक्षर-अक्षर सिद्ध हुई है। भरतक्षेत्र जैसा क्षेत्र! इस समय ऐसा काल! उसमें यह बात लोगों को कठिन लगे।

✳

(भाद्रपद कृष्ण 2, संवत् 2020)

अरे! यह जीव (बहिनश्री चम्पाबेन) तो कोई अलौकिक है! अधिक बोलती नहीं, इसलिए कुछ नहीं है, ऐसा नहीं है। यह तो गम्भीर द्रव्य है!

इनका पुरुषार्थ तो इतनी प्रबलता से गतिमान है कि यदि वे पुरुष होतीं तो कब की मुनिदीक्षा लेकर वन-जंगल में चली जातीं, यहाँ दिखती भी नहीं; क्या करें, स्त्री का शरीर है!

....जिस प्रकार माला में मनकों का मेर होता है, उसी प्रकार यह तो समस्त मंडल की-मनकों की मेर हैं! इन्हीं से ही मंडल शोभित है। इनसे तो सब नीचे, नीचे और नीचे हैं।

✳

(तारीख 8-11-65)

अरे! इनके दर्शन से तो भव के पाप कट जायें, ऐसा यह जीव है। *सब लोग इनके तलवे चाँटें तब भी कम है, ऐसा तो यह द्रव्य है!

✳

* ज्ञानी धर्मात्मा की सन्निकटता आत्मार्थी के लिये गुणकारी होती है एवं जैसे लोक में उपकारी के लिये कहा जाता है कि 'इनके चरण धोकर पीवे तो भी कम है' — इस प्रकार का अभिप्राय यहाँ ग्रहण करना अपेक्षित है। —*अनुवादक*

www.vitragvani.com

(तारीख 21-11-65)

28 वर्ष हो चुके हैं जातिस्मरण हुए, परन्तु बाहर आने की जरा-सी भी जिन्हें (बहिनश्री चम्पाबेन को) वृत्ति नहीं उठती—प्रतिबिम्ब जैसी स्थिर हो गयी हैं। जिन्हें स्वयं को सागरोपम वर्षों का ज्ञान है फिर भी गुप्त! मुझसे भी नहीं कहा। मेरी सब बातें कह जायें, परन्तु अपनी नहीं। ....इनका आत्मा कितना गम्भीर! अलौकिक! अचिन्त्य! अद्भुत!—शब्द कम पड़ते हैं! यह तो सागर समान गम्भीर हैं।

*

पूज्य गुरुदेवश्री : बहिन! लौकिक ज्ञान की (*राजुल के जातिस्मरणज्ञान की) इतनी प्रसिद्धि, तब आपका आत्मा तो महान है, आपकी (आपके ज्ञान की) प्रसिद्धि होनी चाहिए।

पूज्य बहिनश्री : साहेब! दुनिया में प्रसिद्धि करके क्या करना है?

दुनिया को इनकी (बहिनश्री चम्पाबेन की) कीमत कहाँ से आये? क्योंकि कुछ बोलती नहीं हैं और बाहर कुछ करके दिखलाती नहीं हैं। दुनिया को तो बाहरी चमत्कार की कीमत है न! इनके अन्तर को वह (दुनिया) क्या जाने?

*

(तारीख 26-11-65)

विक्रम संवत् 1993, बैशाख कृष्णा अष्टमी के दिन बहिन को (बहिनश्री चम्पाबेन को) आत्मा के शुद्धोपयोगरूप निर्विकल्प अनुभव के साथ उपयोग में निर्मलता होने पर जातिस्मरण हुआ।..... सम्यग्दर्शन 1989 में हुआ था। .....ध्यान करते-करते इतनी एकाग्र हो जाती हैं कि

* यह राजुल एक मुमुक्षु भाई की पुत्री है, जिसे पूर्व भव का जातिस्मरण हुआ था। —*अनुवादक*

स्वयं भरत में हैं या विदेह में, यह भी भूल जाती हैं।..... हम साथ में ही मोक्ष जानेवाले हैं। यह सब बात प्रत्यक्ष हो चुकी है। .....बहिन का (बहिनश्री का) ज्ञान तो अगाध और गम्भीर है।...... यह चम्पाबेन का ज्ञान तो राजुल से अनन्त-अनन्त सामर्थ्यवाला है। उसे तो लौकिक, परन्तु इन्हें तो अलौकिक ज्ञान है। आत्मज्ञान सहित का जातिस्मरण है।.... इन्हें चार भव का ज्ञान है परन्तु गम्भीर इतनी कि कभी प्रगट नहीं करती। मुझसे भी.... अपनी बात नहीं कहे, मेरा सब कह जायें। बहिन तो भगवतीस्वरूप हैं, भगवतीमूर्ति हैं। बोलना तो उन्हें हराम है। कहाँ बोलती ही हैं? इसलिए लोगों को महिमा नहीं आती। इनके जैसी दुनिया में कोई स्त्री नहीं। स्त्रियों के महाभाग्य हैं कि ऐसे काल में—ऐसे मिथ्यात्व की प्रबलता के काल में—इनका यहाँ जन्म! यह तो जो बहुमान करेंगे उनके महाभाग्य हैं।

✳

(राजकोट, तारीख 31-05-67)

सैकड़ों वर्षों में नहीं हुआ, ऐसा आत्मा इस स्त्री-देह में पैदा हुआ है। समाज के इतने पुण्य कहाँ हैं कि यह बात बाहर रखी जाये! लोगों को तो जो बोलता है, उसकी कीमत आती है, यह नहीं बोलतीं, इसलिए इनकी कीमत नहीं आती। कम बोलती हैं, इसलिए मानो कुछ आता ही न हो—ऐसा लोग मानते हैं।

✳

(फतेपुर, तारीख 03-12-70)

बहिन को (चम्पाबेन को) तो चार भव का ज्ञान (जातिस्मरण) है। असंख्य अरबों वर्ष का ज्ञान है इन्हें! यह तो कोई अलौकिक आत्मा

है। चम्पाबेन की शक्ति तो गजब है। नरम... नरम... नरम हैं। स्त्री-शरीर है परन्तु कहीं स्त्री-शरीर थोड़े ही बाधक होता है? 34 वर्ष हो गये हैं उन्हें ज्ञान प्रगट हुए। स्त्रियों में धर्मरतन हैं।

✳

(तारीख 19-6-71)

बहिन (बहिनश्री चम्पाबेन) तो आराधना की देवी हैं। पवित्रता में सारे भारत में अजोड़ हैं। उनकी छत्रछाया सारे सोनगढ़ में है। ओहो! बहिन तो भगवतीस्वरूप हैं। तुझे और कहाँ ढूँढ़ने जाना है? उनके दर्शन कर न! एक बार भाव से जो उनके दर्शन करेगा उसके अनन्त कर्मबन्धन ढीले हो जाएँगे। उनके चरणों से जो लिपटा रहेगा, उसे भले ही सम्यग्दर्शन न हो, तत्त्व का अभ्यास न हो, तो भी उसका बेड़ा पार है।*

✳

सुवर्णपुरी की यह रचना (सीमन्धर भगवान, कुन्दकुन्दाचार्यदेव इत्यादि की प्रतिष्ठा) उनके विदेह के जातिस्मरण का चित्रण है।

✳

बहिन तो अनमोल रतन हैं; यदि पुरुष होतीं तो एक सेकण्ड भी अलग न रहतीं।

✳

उनके इस फोटो में कितने गहरे भाव आ गये हैं! जब फोटो में ऐसे हैं, तब अन्दर तो और कितने गहरे होंगे?!

✳

* ज्ञानी-धर्मात्मा का संग होने पर, जीव को सत्यमार्ग प्राप्त करने का अवसर है। ज्ञानी-धर्मात्मा की सच्ची पहचान दर्शनमोह की मन्दतापूर्वक उसके अभाव का कारण बनती है और दर्शनमोह / मिथ्यादर्शन का अभाव होने पर, संसार का अभाव निश्चितरूप से होता है। यह आशय इस बोल से ग्रहण करना अपेक्षित है। —*अनुवादक*

बहिनश्री को पुत्री कहूँ, बहिन कहूँ, धर्ममाता कहूँ या साधर्मी कहूँ, जो कुछ कहूँ—सब हैं।

✳

चम्पाबेन तो इस काल का आश्चर्य हैं।

✳

स्त्रियों में तो कोई नहीं, परन्तु वर्तमान में सब.....से उनकी दशा विशेष है।

✳

नहि-वत् माया के परिणाम में यहाँ यह अवतार! नहीं तो वे यहाँ होतीं ही कैसे? पूर्व की अखण्ड बालब्रह्मचारी! उनका अवतार ही यहाँ कहाँ से?

✳

(तारीख 08-07-71)

आज बहिन का जन्मदिन है न!..... सबको कितना उल्लास दिखायी देता है; उन्हें कुछ है? अध्यात्म में उनकी स्थिति उदास, उदास एवं स्थिर है।

✳

(तारीख 12-09-71)

बहिन (चम्पाबेन) की निर्मलता बहुत-बहुत! निर्मलता-निर्मलता! अपूर्व-अपूर्व स्मरण! शान्त एवं गम्भीर! बहिन तो धर्मरतन हैं। महाविदेह में बहुत निर्मलता थी; वहाँ की निर्मलता लेकर यहाँ आयी हैं। एकान्तप्रिय, शान्ति से अकेली बैठकर पुरुषार्थ किया करती हैं। उन्हें कहाँ किसी की अपेक्षा ही है! कुटुम्ब की भी अपेक्षा नहीं! अन्तर स्वरूप-परिणति में रहती हैं।

✳

(तारीख 19-09-71)

ओहो ! बहिन के ज्ञान की निर्मलता की क्या बात कहें ! बहुत स्पष्ट ज्ञान !..... बहिन तो जबरदस्त आराधना करती हैं । अकेली बैठी अपना काम करती ही रहती हैं ।.....अब तो उन्हें बाहर लाना ही है । उनका जय-जयकार होगा, उनकी बड़ी शानदार ख्याति होगी, जो जियेंगे वे देखेंगे। अलौकिक द्रव्य है, उनकी धारा ही अलग है ।

*

(भाद्र शुक्ल 11, संवत् 2026)

बहिन बोलती तो बहुत कम हैं। ब्रह्मचारिणी बहिनों के बहुत भाग्य हैं । यदि मौन रहें तब भी उनके दर्शन से तो लाभ ही है ।..... हमें बहुत समय से ख्याल था कि बहिन की बहुत शक्ति है ।

*

(मार्गशीर्ष कृष्ण 12, संवत् 2022)

राजुल को पूर्वभव की—गीता की—याद आयी वह तो सामान्य बात है; बहिन को (बहिनश्री को) तो द्रव्य से और भाव से—दोनों प्रकार से स्मरण है । शुद्ध आत्मा के ज्ञान सहित का बहुत ज्ञान है । भावस्मरण अर्थात् निज शुद्ध आत्मा का, और द्रव्यस्मरण अर्थात् यह जीव स्वयं पहले कहाँ था वह—उन दोनों का ज्ञान है । वे तो भगवतीस्वरूप हैं, भगवती बहिन हैं ।

*

श्री कुन्दकुन्द-आचार्यदेव विदेह में गये थे, उसके कौन साक्षी हैं ? साक्षी यह चम्पाबेन बैठी हैं ये हैं ।

*

बहिन की गम्भीरता तो देखो ! बहिन के बोल (वचनामृत) बहुत

गम्भीर हैं। बहिन को तो कहाँ बाहर आना है? मुश्किल से बहिन की पुस्तक बाहर प्रकाशित हुई। बहिन की पुस्तक तो बहुत अच्छी! बहुत ही अच्छी! जिसे अध्यात्म की रुचि हो, उसके लिये तो बहुत ही अच्छी है। ऐसी पुस्तक कब बाहर आती! बहिन का तो विचार नहीं था और बाहर आ गयी। जगत के भाग्य हैं!

✳

(तारीख 26-08-72)

बहिन का आत्मा तो मङ्गलमय है, धर्मरत्न है। हिन्दुस्तान में बहिन जैसी अजोड़ स्त्रियों में कोई है नहीं, अजोड़ रत्न है। बहिनों के तो महाभाग्य हैं जो ऐसा रत्न मिला है।

✳

(तारीख 17-03-73)

इन बहिन की धारा ही अलग है। इनका वैराग्य, जातिस्मरणज्ञान, इनकी दशा—सब कुछ अलग ही है। इन्हें कहाँ किसी की अपेक्षा ही है! कोई वन्दन करे या न करे, ये कहाँ किसी को देखती ही हैं!

✳

(तारीख 05-08-74)

....बहिन तो चैतन्य-हीरा हैं, उनका हीरों से क्या सम्मान करना! वे तो स्वयं ही हीरा हैं। मैं आहार करने उनके घर गया और कहा कि बहिन! लोगों को बहुत उत्साह है। वजुभाई-हिम्मतभाई (बहिनश्री के भ्राता) वहाँ बैठे थे। बहिन कहने लगीं—'मैं तो आत्मा की साधना करने यहाँ आयी हूँ, यह सब तो बोझ लगता है।' उन्हें बाहर की कुछ अपेक्षा नहीं, जितना करो उतना कम है।

✳

(बहिनश्री को आते देखकर कहा—) बहिन के लिये जगह करो, 'धर्म की शोभा' चली आ रही है। बहिन न तो स्त्री हैं, न पुरुष, वे तो स्वरूप में हैं। भवगतीस्वरूप एक चम्पाबेन ही हैं, उनकी दशा अलौकिक है। वे तो अतीन्द्रिय आनन्द में मौज कर रही हैं।

✳

बहिन की पुस्तक (वचनामृत) आयी बहुत ऊँची! सादी भाषा, मर्म बहुत। अतीन्द्रिय आनन्द में से आयी हुई बात है। अकेला मक्खन भरा है—अकेला माल भरा है। बहुत गम्भीर! थोड़े शब्दों में बहुत गम्भीर! यह तो अमृतधारा की वर्षा है। वचनामृत तो बारह अंग का मक्खन है, सार में सार आ गया है। 'द्रव्यदृष्टिप्रकाश'—से यह पुस्तक अलौकिक है।* जगत के भाग्य—ऐसी वस्तु बाहर आयी! ऐसे वचनामृत किसे नहीं रुचेंगे? सर्वज्ञ भगवान त्रिलोकनाथ ने देखे वे यह भाव हैं।

✳

यह तो बहिन के अन्तर के वचन हैं न! बहिन की भाषा सादी, किन्तु अन्तर की है। अनुभव विद्वत्ता नहीं चाहता, अन्तर की अनुभूति एवं रुचि चाहता है। यह तो बहिन के शब्द हैं, वे भगवान के शब्द हैं। भाषा भी नयी और भाव भी नये! सादी भाषा में अन्दर रहस्य है। लाखों पुस्तकें छप चुकी हैं, मैंने कभी कहा नहीं था; जब यह (वचनामृत) पुस्तक हाथ में आयी (देखी-पढ़ी) तब रामजीभाई से कहा—भाई! यह पुस्तक एक लाख छपाओ!

✳

* भाषा की सरलता, प्रारम्भ से पूर्णता तक का सम्पूर्ण विषय 'वचनामृत' में समाहित है, इस दृष्टि से ही यह कथन ग्रहण करना अपेक्षित है। —*अनुवादक*

(तारीख 06-09-77)

(बहिनश्री के वचनामृत) पुस्तक, सही समय पर बाहर आई। बहिन को कहाँ बाहर आना ही है, किन्तु पुस्तक ने बाहर ला दिया। भाषा सरल है, किन्तु भाव बहुत गम्भीर हैं। मैंने पूरी पुस्तक पढ़ ली है। एक बार नहीं, किन्तु पच्चीस बार पढ़ ले फिर भी सन्तोष न हो, ऐसी पुस्तक है। यह दस हजार पुस्तकें छपवाकर सब हिन्दी-गुजराती 'आत्मधर्म' के ग्राहकों को भेंट देना — ऐसा मुझे लगा।

✳

(तारीख 16-09-77)

मैं कहता हूँ कि (वचनामृत) पुस्तक सर्वोत्कृष्ट है—सारे समयसार का सार आ गया है, इसलिए सर्वोत्कृष्ट है। यह पुस्तक अन्य लोगों के हाथ में जायेगी तो हिन्दुस्तान में डंका बजेगा। यह पुस्तक पढ़कर तो विरोधी भी मध्यस्थ हो जाएँगे—ऐसी बात है।.....जगत को लाभ का कारण है। मान छोड़कर एक बार मुनि (भी) पढ़ें तो उनके लाभ का कारण है।

✳

(तारीख 01-10-77)

परिणमन में से निकले हुए शब्द हैं। बहिन को तो निवृत्ति बहुत। निवृत्ति में से आये हुए शब्द हैं। पुस्तक में तो समयसार का सार आ गया है—अनुभव का सार है; परम सत्य है। 'वचनामृत' यह वस्तु तो ऐसी बाहर आ गयी है कि इसे हिन्दुस्तान में सब जगह से प्रगट करना चाहिए।

✳

यह बहिन के वचन हैं, वे अनन्त ज्ञानियों के वचन हैं। इन्द्रों के समक्ष इस समय श्री सीमन्धरदेव जो फरमा रहे हैं, वही यह वाणी है। यह

पुस्तक साधारण नहीं है, इसमें तो बहुत कुछ भरा है। भाषा मीठी है, सादी है; भाव गहरे और गम्भीर हैं। दिव्यध्वनि की यह आवाज है। अरे! एक बार मध्यस्थरूप से इसे पढ़े तो सही! भगवान की कही हुई जो ॐकार ध्वनि है, उसमें से निकला हुआ यह सार बहिन ने कहा है।

✳

(संवत् 1997)

इस काल का योग अनुकूल है; बहिन जैसों का इस काल में अवतार है। अरे! धर्मात्मा गृहस्थ से भेंट होना भी अनन्त काल में कठिन है। भाइयों को इस काल में धर्मात्मा पुरुष मिल जायें, परन्तु इस काल में बहिनों के भी सद्भाग्य हैं।

✳

(तारीख 17-09-80)

बहिन से बोला गया अन्तर में से। वहाँ से (विदेहक्षेत्र से) आयी हुई बात है। बहिन वहाँ से आयी हैं। ......बहिन (ब्रह्मचारिणी बहिनों के सामने) बोलीं और लिखा गया, नहीं तो बाहर आता ही कहाँ से? (यह सब) अंकित करना है पत्थर में (संगमरमर के पटियों में)।

✳

यह (वचनामृत) पुस्तक ऐसी आयी है कि चाहे जितने शास्त्र हों, इसमें एक भी बात छूटी नहीं है। थोड़े शब्दों में द्रव्य-गुण-पर्याय, व्यवहार-निश्चय आदि सब आ गया है। जगत के भाग्य कि ऐसी सादी भाषा में पुस्तक बाहर आ गयी। वीतरागता के भाव का रटन और घोटन है। सारे हिन्दुस्तान में ढिंढ़ोरा पिटेगा। ज्यों ही पुस्तक हाथ में आयी त्यों ही कहा कि एक लाख पुस्तकें छपना चाहिए।

✳

बहिन को जातिस्मरण में आया है—भगवान के पास सुना है कि एक ऐसा सम्यक्त्व होता है कि जो क्षायिक को जोड़ता है—ऐसा 'जोड़णी क्षायिक' होता है। उन्हें रुचता नहीं है, परन्तु अब उसे कुछ-कुछ प्रगट कर रहे हैं। ....बहिन की पुस्तक बहुत अच्छी है, अकेला मक्खन है। 'द्रव्यदृष्टिप्रकाश' से भी चढ़ जाये ऐसी है। सादी, सरल भाषा में ऊँचा तत्त्व परोसा है।

✳

(तारीख 17-09-80)

यह तो बहिन की भाषा बिल्कुल सादी और अन्तर से बोली गयी है। यह तो जरा बोली और लिखा गया, नहीं तो बाहर आये ही कहाँ से? अकेले रतन भरे हैं। अन्यमती को भी ऐसा लगे कि ऐसा कहीं भी नहीं है। हीरों का भण्डार है!

✳

(तारीख 19-09-80)

आहाहाहा! बहिन की योग्यता! .....यह (बहिन की यह वाणी) तो अंकित होना है पत्थरों में। ढाई लाख रुपये उस दिन (भाद्रपद कृष्णा दूज को) हो गये। (वचनामृत का) मकान बनाया जायेगा।

✳

(राजकोट, सन् 1980)

यह बहिन के वचन हैं। अन्तर आनन्द के अनुभव में से आयी हुई बात है। बहुत जोर है अन्तर का, अप्रतिहत भावना। आत्मा का सम्यग्दर्शन और अतीन्द्रिय आनन्द की अनुभूति—उसमें से यह बात आयी है। आनन्द के स्वाद में मुर्दे की भाँति चलती हैं। आहाहा!

सच्चिदानन्द प्रभु हैं बहिन! अन्तर की महत्ता के सामने बाहर का कुछ लक्ष्य ही नहीं है। अनुभवी, सम्यक्त्वी, आत्मज्ञानी हैं। आत्मा का अनुभव तो है परन्तु साथ ही असंख्य अरब वर्षों का जातिस्मरणज्ञान है। परन्तु लोगों को स्वीकारना कठिन पड़े।

✳

बहिन (चम्पाबेन) तो जैन की मीराबाई हैं। भान सहित की भक्ति है, अंधी दौड़ नहीं है।

✳

बहिन को तो एक आनन्द... आनन्द... आनन्द! और दिन भर सहज निवृत्ति; बस, और कुछ भी नहीं। कोई वन्दन करे या न करे उसके सामने भी नहीं देखती। किसी के साथ कोई औपचारिक बातचीत नहीं।

✳

(तारीख 29-01-78)

जिसे आनन्द में जमावट हुई है, जो अतीन्द्रिय आनन्द के कौर ले रहा है और जो अतीन्द्रिय आनन्द को गट-गट पी रहा है, ऐसे धर्मी का (साधक का) यह स्वरूप बहिन के मुख से (वचनामृत में) आया है। बिल्कुल सादी भाषा। प्रभु के समवसरण में इस प्रकार बात चलती थी, भाई! .....अरे! यह बात बैठे वह तो निहाल हो जाये ऐसा है। जिनेश्वर देव का जो फरमान है, वह बहिन कह रही हैं।

✳

(तारीख 29-01-78)

वचनामृत के एक-एक बोल में, एक-एक शब्द में निधान भरे हैं। जिसे तल पकड़ना आता हो, उसे अगाधता लगे स्वभाव की। पर्याय ने प्रभु

का संग्रहण किया, पूरा ज्ञान में ले लिया। यह तो सिद्धान्त का दोहन है। जगत के भाग्य कि यह (बहिन की पुस्तक) सही समय पर बाहर आ गयी। थोड़े शब्दों में, सादी भाषा में, मूल तत्त्व को प्रगट किया।

*

(भाद्रपद कृष्णा दूज)

चम्पाबेन सचमुच अद्वितीय रतन हैं; वे तो अन्तर से बिल्कुल उदास हैं; उन्हें बाहर का यह सब कुछ नहीं रुचता; परन्तु लोगों को तो भक्तिप्रेम से बहुमान करने के भाव आयें न!

*

(तारीख 07-12-77)

बहिन की पुस्तक के अलावा हम किसी में नहीं पड़े। बहिन की पुस्तक बहुत अच्छी आयी।....बहिन के बोल में आता है न कि — 'बाह्य प्रसिद्धि के प्रसङ्गों से दूर भागने में लाभ है'! बहुत सरस!

*

बहिन तो महाविदेह से आयी हैं। उनके अनुभव की यह (वचनामृत) वाणी है। हीरों से सम्मान किया तब भी उन्हें कुछ नहीं। बहिन तो (थोड़े भव में) केवलज्ञानी होंगी।

*

(तारीख 22-01-78)

हम (सीमन्धर) भगवान के पास से सीधे ही आये हैं। इन वचनामृत में भगवान की ध्वनि के मन्त्र भर गये हैं। बहिन की (चम्पाबेन की) क्या बात करना! वे तो ध्यान में... ध्यान में, बस ध्यान में रहती हैं, आनन्द... आनन्द... आनन्द में हैं। उनका शरीर स्त्री का है, इसलिए ख्याल नहीं आये।

*

www.vitragvani.com

(तारीख 19-09-80)

वचनामृत के एक-एक शब्द में पूरा सार भरा है। विचार को दीर्घरूप से लम्बाकर अन्तर में जा। आहाहा! बहिन की (चम्पाबेन की) कैसी स्थिति है! कहती हैं— 'आत्मा' बोलना सीखे तो यहाँ से (—गुरुदेव के पास से)! गजब है उनकी विनय और नम्रता!

✳

बहिन विदेह से आयी हैं। उन्हें तो असंख्य अरब वर्ष का जातिस्मरणज्ञान है। असंख्य अरब वर्ष की बात, कल की आज दिखे इस प्रकार दिखती है।.....आत्मजाति का ज्ञान होना, वह यथार्थ जातिस्मरण है—अनन्त अनन्त गुणों का नाथ उसका ज्ञान अन्तरमें होना, वह (परमार्थ) जातिस्मरण है।

✳

(तारीख 19-08-80)

बहिन को खबर नहीं कि कोई लिख लेगा। उन्हें बाह्य प्रसिद्धि का जरा भी भाव नहीं है। धर्मरत्न हैं, भगवती हैं, भगवतीस्वरूप माता हैं। (उनके यह वचन) आनन्द में से निकले हैं। भाषा मीठी आ गयी है।

✳

बहिन अभी तक गुप्त थीं। अब ढँका नहीं रहेगा—छिपा नहीं रहेगा। उनके वचन, वे भगवान की वाणी है, उनके घर का कुछ नहीं है—दिव्यध्वनि है। बहिन तो महाविदेह से आयी हैं। यह वचनामृत लोग पढ़ेंगे, विचार करेंगे, तब ख्याल आयेगा कि यह पुस्तक कैसी है! अकेला मक्खन है।

✳

(तारीख 19-02-78)

(बहिन की) यह वाणी तो आत्मा के अनुभव में-आनन्द में रहते-रहते आ गयी है। हम भगवान के पास पूर्वभव में थे। बहुत ऊँची बात है। इस समय यह बात और कहीं नहीं है। बहिन (चम्पाबेन) तो संसार से मर गयी हैं। अपूर्व बात है, बापू!

*

बहिन की पुस्तक तो ऐसी बाहर आ गयी है कि मेरे अभिप्राय से तो सबको भेंट देना चाहिए। बहुत सादी-बालक जैसी भाषा; संस्कृत भाषा नहीं। बहुत जोरदार गम्भीर बातें उसमें हैं।

*

आहाहा! यह ऐसी चीज लोगों के भाग्य से बाहर आ गयी। पुकार किया है इसमें आत्मा का। ऊपर बहिन का फोटो है—बहुत अच्छा; शान्त-शान्त!!

*

बहिन तो बहिन ही हैं; उनके जैसा दूसरा कोई नहीं है। यहाँ हमें कहाँ कुछ छिपा रखना है? बहिन तो अद्वितीय हैं, अकेली ही हैं। हमारे कुछ खानगी—गुप्त है नहीं।

*

बहिन की पुस्तक में बहुत संक्षिप्त और माल-माल है। अन्यमतियों को भी पसन्द आये ऐसा है। .....अरे! उसमें तो तेरी महिमा और बड़ाई की बातें हैं। मुनियों की बात कैसी ली है!— 'मुनियों को बाहर आना, वह बोझ लगता है।' यह पुस्तक बाहर आयी, वह बहुत ही अच्छा हुआ। अन्दर थोड़े में बहुत सी बातें हैं।

*

बहिन तो एक अद्भुत रतन पैदा हुई हैं। शक्ति अद्भुत है। अतीन्द्रिय आनन्द के वेदन में उन्हें (बाहर की) कुछ अपेक्षा नहीं है। हिन्दुस्तान में उनके जैसा कोई आत्मा नहीं है। यह पुस्तक बाहर आयी, इसलिए कुछ खबर पड़ती है।

✳

चम्पाबेन अर्थात् कौन?! उनका अनुभव, उनका ज्ञान, समता अलौकिक है।.....स्त्री की देह आ गयी है। परन्तु अन्तर में अतीन्द्रिय आनन्द की मौज में पड़ी हैं; उसमें से वाणी निकली है।—यह, उनकी वाणी का प्रमाणपना है।

✳

बहिन अलौकिक वस्तु हैं; देहे से भिन्न और राग से भिन्न आत्मा का अनुभव कर रही हैं। उन्हें (बाह्य में) कहीं आनन्द नहीं आता, वे तो अतीन्द्रिय आनन्द में मौज करती हैं।

✳

(विक्रम संवत् 2030)

(भाद्रपद कृष्णा 14 के दिन पण्डित श्री हिम्मतभाई के घर आहार करने पधारे तब—)

पूज्य गुरुदेवश्री : 'हिम्मतभाई! देखो न, लोगों को कितने भाव हैं बहिन के प्रति! दूज के समय कितने ज्यादा लोग आये थे!'

पूज्य बहिनश्री (अति नम्रता से) : 'साहेब! मुझे तो आत्मा का करना है। यह तो सब उपाधि लगती है।'

पूज्य गुरुदेवश्री : बहिनबा! तुम्हें क्या है? तुम्हें तो सब देखते

रहना। मेरे अभिप्राय से तो अभी कम होता है। तुम्हारे लिये तो लोग जितना करें, उतना कम है।

✳

(विक्रम संवत् 2033)

एक स्त्री का शरीर आ गया, नहीं तो (बहिन) दूर एक क्षण नहीं रहे।.....कुछ शब्दों की शैली तो उनके घर की, निवृत्ति की है। भाषा बड़ी सादी, चार कक्षा तक पढ़े हुए लोगों को बैठ जाये ऐसी है।

✳

(तारीख 29-11-77)

बहिन के वचनामृत, यह केवलज्ञान की बारह-खड़ी है। दो-चार बार नहीं किन्तु दस बार पढ़ेंगे तब समझ में आयेगा।

✳

ओहो! सादी भाषा, मन्त्र हैं मन्त्र। यह तो लाखों शास्त्रों का निचोड़ है। लाखों क्या? करोड़ों, अनन्त शास्त्रों का आशय स्व-आलम्बन कराना है। लोग पढ़ेंगे तो आहाहा!..... बाहुबली में भट्टारक ने देखा तो कहने लगे कि 'मुझे दो; ओहो! ऐसी पुस्तक!'

✳

बहिन की (चम्पाबेन की) तो क्या बात करूँ। उनकी निर्मल दृष्टि और निर्विकल्प स्वात्मानुभूति इस काल में अद्वितीय हैं। वे तो अन्तर से ही उदास-उदास हैं। उनके सम्बन्ध में विशेष क्या कहूँ? हमारे मन तो वे भारत का धर्मरतन, जगदम्बा, चैतन्यरत्न, धर्ममूर्ति हैं, हिन्दुस्तान का चमकता सितारा हैं।

✳

(जामनगर, अप्रैल, 1979)

बहिन को असंख्य अरबों वर्ष का ज्ञान है—9 भव का ज्ञान है (—4 भूत के, 4 भविष्य के)। बहिन तो भगवान के पास से आयी हैं। अनुभव में से यह बात आयी है। उदयभाव से तो मर गयी हैं, आनन्द से जी रही हैं। परमात्मा के पास से आयी हैं। साक्षात् परमात्मा तीन लोक के नाथ सीमन्धर भगवान विराजते हैं, वहाँ हम साथ थे। क्या कहें प्रभु! सीमन्धर परमात्मा के पास कई बार जाते थे। उन भगवान की यह वाणी है। बहिन तो आनन्दसागर में.....

✳

यह कथा-कहानी नहीं, भागवत कथा है। परमात्मा की वाणी के इशारे हैं। उनका अनुभव करे, उसे खबर पड़े। ......बहिन तो भगवती माता हैं।

www.vitragvani.com

पूज्य भगवती बहिनश्री चम्पाबेन की निजानंदवेदन सम्बन्धी नोंध

(स्वयं के हस्ताक्षर में)

૧૯૮૯

વાંકાનેર, આનંદનો દિવસ
ફાગણ વદ દશમીને સોમ
વારે બપોરે સામાયિકમાં નિજ
સ્વરૂપ અનુભવ્યું. અનંતકાળમાં
વાર નહિ સમજાયેલું
સ્વરૂપ સમજાયું. આનંદ સાગર
ઉછળતા રહ્યા હતા. તે સ્વરૂપ
આશ્ચર્યકારી અને અદ્ભુત
છે.
પરમ ઉપકારી પરમ
પ્રતાપી સદ્ગુરુદેવને
નમસ્કાર.

फाल्गुन कृष्ण दसवीं के मांगलिक दिन हुई स्वानुभूति सम्बन्धी नोंध

(स्वयं के हस्ताक्षर में)

વાંકાનેર, ૧૯૮૯ ફાગણ વદ દશમનો
અપૂર્વ દિવસ
ચૈત્રમાસે (લખાયેલ)

સ્વ સ્વરૂપનું સહજ આવતાં ફાગણ વદ દશમને સોમવારે બપોરે જ્ઞાતાધારાની વૃદ્ધિ થતાં તે સ્વરૂપનું ધ્યાન થતાં તેમાં એકાગ્ર થતાં તે સ્વરૂપમાં ઊંડા ઉતરતાએ આવી ઉપયોગ ચેતન લક્ષણથી છૂટો પડી પોતાના સ્વ સ્વરૂપમાં સ્થિર થઈ ચૈતન્ય ભગવાન તે સ્વરૂપને અનુભવતા હતા. પોતાના નિર્વિકલ્પ સહજ સ્વરૂપમાં ખેલ રહ્યા હતા, રમી રહ્યા હતા. અનુપમ ને અદ્ભુત એવા આત્મદ્રવ્યનો મહીમા કોઈ અપાર છે. ચૈતન્યદેવ આનંદતરંગોમાં ઝૂલતા હતા.

www.vitragvani.com

અહો!! અનંતકાળથી છૂપાએલા
આત્મ ભગવાન પ્રગટ કર્યા. તેનો
છૂપાએલો એવો અનુપમ અમૃત
સ્વાદ ચખાડ્યો, અનુભવાડ્યો.

તે તો આ સદ્‌ગુરુદેવ આપનો જ
પ્રતાપ છે.

અપૂર્વ આત્મસ્વરૂપ પ્રગટ્યું તે
પરમ કૃપાળુ સદ્‌ગુરુદેવનો જ
પ્રતાપ છે.

ભારતખંડમાં અપૂર્વ મુક્તિમાર્ગ
પ્રકાશનાર પરમ ઉપકારી
ગુરુદેવને નમસ્કાર

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai.

अध्यात्म-अमृतसरिता

इस विभाग में, वैराग्यमूर्ति, आत्मज्ञानी पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के लघुवय के स्वानुभवरसपूरित कितने ही लेखों में से थोड़े से अवतरण चुनकर लिये गये हैं। इन अवतरणों का गहरायी से अवलोकन करने पर आत्मार्थ के अभ्यासी को उनकी अन्तरङ्ग परिणति की—सहज ज्ञान, वैराग्य, उपशम, उदासीनता, निर्विकल्प आत्मानुभव, सतत वर्तती ज्ञाताधारा, स्वरूप स्थिरता की सहज परिणति इत्यादि की—अद्‌भुत महिमा अन्दर से अवश्य आयेगी। ये अवतरण वास्तव में अध्यात्म-अमृतसरिता ही है। आत्मार्थी जीवों को इनका वाँचन तथा इन पर गहन विचार-मनन अवश्य करना योग्य है और ऐसा करने से अवश्य अपूर्व आत्मलाभ होगा।

अध्यात्म-अमृतसरिता

पूज्य बहिनश्री चम्पाबेन के हृदय में से प्रवाहित

हे श्री वीतराग! अब तो आपके चरण-कमल सेवन की बहुत भावना हो जाती है।

स्वरूप के अतिरिक्त कार्मांण कोथली के निमित्त से प्रगट होनेवाले समस्त शुभाशुभ परभाव बोझरूप और उपाधिरूप हैं। उनके प्रति कितनी ही बार सहजरूप से विशेष उदासीनता आ जाती है और उनके प्रति थकान लगकर—उस प्रवृत्ति से और उस परिणति से थकान लगकर—चैतन्य प्रभु उनसे विशेष उदासीन होकर स्वस्वरूप में सहजरूप से विशेष स्थित होता है।

अन्तरङ्ग स्थिति ऐसी होने के कारण, कितनी ही बार बाह्य सङ्ग-प्रसङ्ग के प्रति भी उदासीनता आ जाती है और वह बाह्य सङ्ग-प्रसङ्ग उपाधिरूप और बोझरूप लगते हैं। उनमें भी अप्रशस्त परिचय विशेषरूप से अरुचिकर लगता है, क्योंकि उसे अपनी आत्मस्थिति के साथ सुमेल नहीं है।

प्रशस्त परिचय में कितने ही सङ्ग-प्रसङ्ग प्रवृत्तिरूप लगने से वे भी उपाधिरूप और बोझरूप लगते हैं। अपूर्णता के कारण उन प्रसङ्गों में खड़ा रहा जाता है परन्तु उपयोग वहाँ से परांमुख होता है।

जिस काल में असङ्गदशा से एकान्तवास में मुनिवर विचरते होंगे, उस काल को धन्य है।

इस काल में, इस क्षेत्र में अपना जन्म, वह कितने ही साधनों की दुर्लभता बतलाता है; तथापि असीम उपकारी, अपूर्व वाणी प्रकाशक, अपूर्व ऐसे कहान गुरुदेव इस काल में मिले हैं, वह महाभाग्य है। उनके कारण से आत्मसाधना की सुलभता है।

जब द्रव्य-क्षेत्र-काल स्वरूप-साधक आत्माओं का समागम होनेरूप परिणमेगा, तब वह प्राप्ति होनेरूप योग बनेगा।

जहाँ पूर्णता नहीं, वहाँ देव, गुरु, और उनकी वाणी की ओर का प्रशस्तभाव आये बिना नहीं रहता। *(विक्रम संवत, 1991)*

✧✧✧

....जो सर्व संयोगों का साक्षी है, उसे ऐसे साधारण प्रसङ्ग किस हिसाब में हैं ? तो भी साक्षीपने की पूर्णता नहीं होने से, अपूर्णता होने से किसी-किसी समय विभावरूप राग-द्वेष की परिणति में उपाधि का बोझा लग आता है।

— सर्वथा सर्व प्रकार से तीव्रता से निवृत्त स्वरूप का इच्छुक

(सर्वथा सर्व प्रकार से तीव्रता से समाधिस्वरूप का इच्छुक)

(विक्रम संवत, 1992)

✧✧✧

वांचन, विचार तथा स्वरूप स्थिति, अन्तरङ्ग आत्मवीर्य उठता है, उस प्रकार हुआ करते हैं।

साधकों की दशा जगत से निराली होती है, किसी-किसी समय

www.vitragvani.com

स्वरूप में सहजरूप से-निर्विकल्परूप से स्थिर हो जाते हैं और फिर बाहर आते हैं, तब भी भेदज्ञान की—ज्ञाताधारा की—सहज समाधि परिणमित होती है। स्वरूप में लीन होते हैं, तब तब आत्मा के अचिन्त्य अनन्त गुण परिणमन की तरङ्गों का वेदन करते हैं; ऐसा होते-होते साधकधारा बढ़ते-बढ़ते मुनिपने की दशा प्रगट होने पर, मुनिपना आता है और क्रमशः श्रेणी माँडकर केवलज्ञान प्रगट करते हैं। स्व-पर प्रकाशक स्वभाववाला ज्ञान पूर्णरूप से परिणमित होता है। आनन्द आदि अनन्त गुण पूर्णरूप से परिणमित होते हैं, उस दशा को धन्य है, बारम्बार धन्य है।

सुख और आनन्द, स्वरूप में है; विभाव समस्त दुःखरूप और उपाधिरूप है। *(विक्रम संवत, 1993)*

✧✧✧

सूक्ष्म और तीक्ष्ण श्रुतशैली से, चारों ओर से दिव्य अमृतप्रपात बरसानेवाले, अद्भुत गुरुदेव के चरण-कमल में नमस्कार हो।

पूज्य गुरुदेव ने समयसार अद्भुत और अपूर्व रीति से समझाया है। ऐसा हो जाता है कि — वाह! गुरुदेव वाह! मन-वचन-काया आपकी चरणसेवा में अर्पण करें तो भी कम है - ऐसी आज भावना हो जाती थी। अहा! समयसार में कोई अद्भुत रहस्य भरा है, परन्तु ज्ञान क्रमपूर्वक और अपूर्ण होने से एक साथ पूर्ण और प्रगट उपयोगात्मकरूप से सभी रहस्य जाने नहीं जा सकते। इसलिए ऐसी भावना हो जाती है कि हे प्रभु! कोई ऐसी शक्ति या परिणमन प्रगट हो कि जिससे सर्वांश, ज्ञानस्वरूप स्वयं ही, सहज ज्ञानरूप से प्रगट उपयोगात्मकरूप से पूर्णांश, परिणमित हो जाये।

द्रव्यदृष्टि से द्रव्य परिपूर्ण है; पर्याय में अपूर्णता है।

पुरुषार्थ द्वारा-चैतन्य का जो वीर्यगुण है उसके द्वारा—साधकपने की श्रेणी बढ़ती है और साध्य पूर्ण होता है। पर्याय की पूर्ण निर्मलता होती है, यह भेद-अपेक्षा से बात है। अभेद दृष्टि से अखण्ड गुण के पिण्डस्वरूप स्वयं ही परिणमित होकर पूर्ण होता है। भेद-अभेद वस्तुस्वभाव अद्भुत है!

पूर्ण सहज स्थिति ही चाहिए। *(विक्रम संवत, 1993)*

✧✧✧

विभावपरिणति के प्रशस्त ओर के प्रवृत्तियोग में वाँचन, विचार इत्यादि का प्रवर्तन है; अभ्यन्तर में-निवृत्तियोग में सर्व विभाव से पृथक् ऐसे निवृत्तस्वरूप में सहजरूप से परिणति का प्रवर्तन है।

बाह्य संयोगों का, अस्थिर परिणति में असर अमुक अंश स्थिति के अनुसार होता है; ज्ञायक की प्रतीतिरूप पृथक् ज्ञायकपरिणति में असर नहीं है, होने योग्य नहीं है। स्थिरपरिणति में अमुक अंश से स्वरूप समाधि होने योग्य है और ऐसा ही है। *(विक्रम संवत, 1993)*

✧✧✧

अनुभवप्रकाश की पूरी पुस्तक में 'अनुभव ही' होने योग्य है। 'अनुभव' वाँचते हुए, सुनते हुए प्रशस्त उल्लास आ जाने योग्य है और आत्मपरिणति को लाभ होने योग्य है। यह श्री गुरुदेव का परम प्रताप है। गुरुदेव की वाणी अद्भुत, सूक्ष्म और गहरे रहस्यों से भरपूर है। गुरुदेव इस भरतखण्ड में अद्वितीय रत्न जगे हैं-जिनके दिव्य चैतन्य द्वारा और जिनकी दिव्यवाणी द्वारा इस भरतक्षेत्र में बहुत-बहुत जीवों का उद्धार हुआ है। जिन्होंने स्वयं उग्र के पुरुषार्थ द्वारा अपूर्व तत्त्व को स्वयं स्वत:

प्रगट करके, हिन्दुस्तान के सोये हुए जीवों को जागृत किया है। हिन्दुस्तान में, छुपे हुए आत्मतत्त्व को स्वयं प्रगट करके अगणित जीवों का उद्धार किया है। ऐसे गुरुदेव के चरणकमल में बारम्बार परमभक्ति से नमस्कार, नमस्कार।

आँगन में विराजमान ऐसे गुरुदेवश्री के समीपवर्ती मन-वचन-काया से चरणसेवा निरन्तर हो, निरन्तर हो।

महाभाग्य से ऐसे गुणसमूह ज्ञानमूर्ति शान्तिदाता गुरुदेव प्राप्त हुए हैं। धन्य है इस क्षेत्र को, धन्य है इस देश को!

✧✧✧

प्रशस्त या अप्रशस्त सर्व परिणति उपाधिस्वरूप है। सर्व के साक्षीरूप वेदनपरिणति, वह समाधिरूप है तथा स्वरूप-स्थिरता, वह समाधिरूप है।

प्रतीतिरूप ऐसी ज्ञाता की ज्ञातारूप वेदनपरिणति में स्थिरता को बढ़ाते-बढ़ाते साधक, साध्यरूप से पूर्ण होता है, पर्याय की पूर्ण निर्मलता होती है। द्रव्य तो अनादि-अनन्त परिपूर्ण शुद्धता से भरपूर है। शुद्धात्मा में स्वरूपरमणता बढ़ते-बढ़ते आत्म-उपयोग परलक्ष्य से सर्वथा छूटकर अपने कृतकृत्यस्वरूप को व्यक्त करता है, स्वरूप में आकर, उसके साथ एकमेक होकर सर्वांश जुड़ जाता है।

ऐसे अद्भुत स्वरूप को प्राप्त, ऐसे श्री वीतरागदेव को और उस वीतरागस्वरूप को बारम्बार नमस्कार है। *(विक्रम संवत, 1994)*

✧✧✧

स्वरूपपरिणति में यथाशक्ति स्वरूपस्थिति हुआ करती है। प्रशस्तयोग में वाँचन-विचार यथाशक्ति, जिस प्रकार से वीर्यपरिणति उठती है, उस प्रकार से हुआ करते हैं।

ज्ञानपर्याय सम्पूर्ण प्रगट होकर पुरुषार्थ द्वारा अकेली स्व-आश्रयरूप से और एकदम सहज परिणमेगी, तब धन्य होगी।

ज्ञायक की ज्ञातारूप से 'अडोल' परिणति बढ़ते-बढ़ते सर्वांश सूक्ष्म अडोलता प्राप्त होगी, वह दिवस धन्य होगा।

अहा! धन्य है उस सम्पूर्ण अडोल परिणति को, कि जहाँ पर का असर, सूक्ष्म भी सर्व प्रकार से सहज छूटकर, अकेला साक्षीस्वभाव, वीतरागस्वभाव, अचिन्त्य और अद्भुत ऐसा आत्मद्रव्य अपने स्वभावों का-तरङ्गों का वेदन कर रहा है, उसमें परिणमित हो रहा है, किसी अद्भुतता में खेल रहा है! *(विक्रम संवत, 1993)*

❖❖❖

अब तो विभाव के समस्त विकल्पों से छूटकर वीतरागपर्यायरूप परिणमित होंगे, तब धन्य होंगे! हजारों मुनियों के झुण्ड जिस काल में विचरते होंगे, उस प्रसङ्ग को धन्य है! ऐसे काल में मुनिपना लेकर क्षण में अप्रमत्त, क्षण में प्रमत्त—ऐसी दशा को साधकर वीतरागपर्यायरूप परिणमित होंगे, तब धन्य होंगे! अभी भी जैसे बने, वैसे पुरुषार्थ बढ़ाकर निर्मलपर्याय को विशेष-विशेष प्रगट करना, यह ही श्रेयरूप है।

(विक्रम संवत, 2003)

❖❖❖